भण्डारण भारती

अंक–70

राजभाषा विशेषांक

केन्द्रीय भण्डारण निगम

जन–जन के लिए भंडारण

वंदे मातरम्

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वंदे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्।

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीं
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीं,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीं
सुखदां वरदां मातरम्।।
वंदे मातरम्

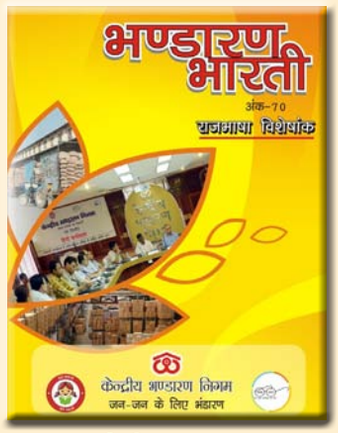

जुलाई-सितम्बर, 2018

मुख्य संरक्षक
अरुण कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता
अरविन्द चौधरी
समूह महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे
एस.पी. तिवारी

संपादन सहयोग
नीलम खुराना, विजयपाल सिंह,
शशि बाला

केंद्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस
डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

राजभाषा विशेषांक

त्रैमासिक पत्रिका अंक-70

विषय		पृष्ठ संख्या
✦	संदेश	3-11
✦	प्रबंध निदेशक की कलम से...	12
✦	विचारों के झरोखे से...	13
✦	सम्पादकीय	14
आलेख		
❍	हिंदी में आखिर क्या नहीं है *-बालेन्दु शर्मा 'दाधीच'*	15
❍	खाद्य भंडारण के दौरान खाद्य सुरक्षा *-डॉ. पुष्पेन्द्र साम्भरवाल*	17
❍	प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी भाषा का बढ़ता वर्चस्व *-डॉ. पूरनचन्द टंडन*	20
❍	शब्द शक्तियाँ एवं अनुवाद में उनकी भूमिका *-टी. रामराज रेड्डी*	24
❍	सम्पर्कभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिंदी... *-महिमानन्द भट्ट*	26
❍	कार्यालयीन साहित्य का अनुवाद *-विजयराम नौटियाल*	36
❍	राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिंदी *-डॉ. मीना राजपूत*	48
❍	वर्तनी संबंधी अशुद्धियां और उनका निदान *-नम्रता बजाज*	56
❍	भाषा का सौन्दर्यः लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे *-शशि बाला*	66
क्षेत्रीय कार्यालय-एक परिचय		
➢	क्षेत्रीय कार्यालय- पटना एवं चेन्नई	30
कविताएं		
✪	हिंदी *-निर्भय नारायण गुप्ता*	28
✪	चुप-चुप रहना सखी *-लक्ष्य शर्मा*	39
✪	जिंदगी *-परशुराम गुप्ता*	39
✪	भारतीय सेना को सलाम *-रवि शंकर 'रवि'*	72
✪	पेड़ लगाओ, जल बचाओ *-विनीत निगम*	72
✪	राजभाषा का समन्वय *-सच्चिदानंद राय*	74
साहित्यिकी		
➢	अभिसार *-रविन्द्रनाथ टैगोर*	29
➢	कप्तान- *(कथा) शिवरानी देवी प्रेमचंद*	52
विविध		
⅄	खिड़की वाली सीटः एक यात्रा राजभाषा के साथ *-रोहित उपाध्याय*	40
⅄	विचार प्रबंधन *-डॉ. सत्येन्द्र सिंह*	43
⅄	पूर्ण से ही पूर्ण की उत्पत्ति *-अरविन्द चौधरी*	46
⅄	शिक्षा और सामाजिक दायित्व *-सत्यपाल सिंह राठौर*	58
⅄	तनाव प्रबंधन *-रेखा दुबे*	60
⅄	कमीज की आत्मकथा *-मोहिनी मल्होत्रा*	62
⅄	अहसास अपनेपन का *-के.सी.एस. नेगी*	68
⅄	जीवन का मकसद *-सागरिका दत्ता*	70
⅄	संस्मरण *-जे.पी. बेंजवाल*	73
अन्य गतिविधियां		
✶	सचित्र गतिविधियां	75-80

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भण्डारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।

सत्यमेव जयते

राजनाथ सिंह
गृह मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय भंडारण निगम राजभाषा से संबंधित विभिन्न जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अपने अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर त्रैमासिक पत्रिका ''भंडारण भारती–राजभाषा विशेषांक'' का प्रकाशन कर रहा है।

किसी भी राष्ट्र की राजभाषा उसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका होती है और उससे ही राष्ट्र की एकता और अखण्डता को सुदृढ़ता प्राप्त होती है। इसी उद्देश्य से ही संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

वर्तमान में कोई भी भाषा कंप्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रह कर जनमानस से जुड़ी नहीं रह सकती है। अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने कार्यालयों का समस्त कामकाज सूचना–प्रौद्योगिकी के साथ जोड़कर हिन्दी में करें और उसे समर्थवान बनाएँ।

केन्द्रीय भंडारण निगम, देश भर में खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण तथा किसानों के हितों के साथ–साथ दैनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील है, इसलिए अंशधारियों की बैठक के समय ''राजभाषा विशेषांक'' का प्रकाशन किया जाना महत्वपूर्ण है।

पत्रिका के सफल सम्पादन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

26.07.18

(राजनाथ सिंह)

सत्यमेव जयते

प्रकाश जावडेकर
मानव संसाधन विकास मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय भंडारण निगम की त्रैमासिक पत्रिका ''भंडारण भारती'' के ''राजभाषा विशेषांक'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

केंद्रीय भंडारण निगम भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है जो कृषि उत्पादों एवं अन्य अधिसूचित वस्तुओं के वैज्ञानिक विधि–सम्मत भंडारण की सुविधाएँ देशव्यापी स्तर पर उपलब्ध कराता है। यह निगम विगत अनेक वर्षों से देश की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान देते हुए देश के उत्पादक एवं उपभोक्ता वर्ग के बीच मजबूत कड़ी के रूप में कार्यरत है। अपने मूलभूत कार्यक्षेत्र में संलग्न रहते हुए निगम दैनंदिन कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में भी निरंतर प्रयत्नशील है।

वस्तुतः कोई भी निगम–संस्थान अपनी गतिविधियों के संदर्भ में बहुआयामी होता है। एक ओर जहाँ यह अपने निर्धारित कार्य–उद्देश्यों एवं परिणामोन्मुख लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए व्यावसायिक गतिविधियाँ संपन्न करने को प्रतिबद्ध होता है तो दूसरी ओर अपने कार्य–परिसर में आने वाले विविध उत्पादन–प्रक्रिया समूहों और लक्षित उपभोक्ता वर्ग से संवाद के लिए भाषापरक गतिविधियों में भी इसकी अपनी भूमिका होती है। केन्द्रीय भंडारण निगम राजभाषा के प्रचार–प्रसार के संबंध में अपनी भूमिका एवं उत्तरदायित्व को समझते हुए पत्रिका प्रकाशन का कार्य कर रहा है, यह सराहनीय है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अपने निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल होगी और इसके माध्यम से निगम से जुड़े लोगों की रचनात्मक अभिरुचियों का प्रकाशन होगा।

पत्रिका प्रकाशन के लिए आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रकाश जावडेकर)

सत्यमेव जयते

राम विलास पासवान
उपभोक्ता मामले,
खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय भंडारण निगम अपनी त्रैमासिक पत्रिका 'भंडारण भारती' का राजभाषा विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है।

केंद्रीय भंडारण निगम कृषि उत्पादों एवं अन्य अधिसूचित वस्तुओं के वैज्ञानिक भंडारण तथा आयात–निर्यात के लिए आधारभूत लॉजिस्टिक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए देश की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान देने के साथ–साथ 'भंडारण भारती' के नियमित प्रकाशन के जरिए राजभाषा हिन्दी की गरिमा को बनाए रखने और उसके प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सतत प्रयत्नशील है।

राजभाषा हिन्दी के लिए संविधान के अनुच्छेद 351 में जो उद्देश्य निहित है उसे मूर्तरूप देने में कार्यालय की हिन्दी पत्रिकाओं का विशेष महत्व होता है। ऐसे प्रकाशनों के माध्यम से जहाँ देश की राजभाषा का गौरव बढ़ता है, वहीं इसके रचनाकारों द्वारा विभिन्न विषयों पर भावपूर्ण रचनाओं के जरिए कार्यालय के क्रियाकलापों के साथ नई ज्ञानवर्धक जानकारियां भी मिलती हैं। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों की लगन और प्रयास की सराहना करता हूँ।

'भंडारण भारती' के नवीनतम विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राम विलास पासवान)

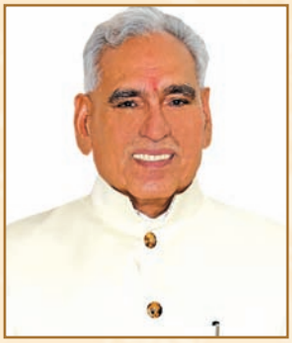

सत्यमेव जयते

सी.आर. चौधरी, भा.प्र.से. (से.नि.)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
तथा
उपभोक्ता मामले,
खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

मेरे लिए ये अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि केन्द्रीय भण्डारण निगम द्वारा अपनी त्रैमासिक पत्रिका 'भण्डारण भारती' के ''राजभाषा विशेषांक'' का प्रकाशन किया जा रहा है। निगम द्वारा राजभाषा हिन्दी को सशक्त बनाने तथा उसके प्रचार–प्रसार हेतु यह अत्यंत सराहनीय योगदान है। यह पत्रिका विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी का ज्ञानवर्धन कराने के साथ–साथ विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे– कविता, निबंध, पद्य सामग्री के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करने का मंच भी उपलब्ध कराती है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम, भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है, जो कृषि उत्पादों एवं अन्य अधिसूचित वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भंडारण की सुविधाएं उपलब्ध करवाने के साथ–साथ आधारभूत लॉजिस्टिक सुविधाएं भी प्रदान करता है।

केन्दीय भंडारण निगम अपने कार्यों में वैज्ञानिक एवं गुणवत्ता के समावेश के साथ राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के लिए बधाई का पात्र है। मैं ''भण्डारण भारती'' के ''राजभाषा विशेषांक'' के लिए शुभकामनाएं एवं धन्यवाद प्रेषित करता हूँ।

शुभेच्छु

(सी.आर. चौधरी)

सत्यमेव जयते

रविकान्त
सचिव
खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग
उपभोक्ता मामले, खाद्य और
सार्वजनिक वितरण मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हो रही है कि केन्द्रीय भंडारण निगम अपने अंशधारकों की वार्षिक सामान्य बैठक के अवसर पर ''भंडारण भारती–राजभाषा विशेषांक'' का प्रकाशन कर रहा है।

देश में खाद्यान्नों के वैज्ञानिक एवं सुरक्षित भंडारण और उनकी आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा खाद्य सुरक्षा के लिए आधारभूत सुविधाओं के सृजन में निगम अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसके अतिरिक्त, निगम ने उत्पादक और उपभोक्ताओं के बीच मजबूत कड़ी के रूप में अपनी भूमिका को सदैव सफलतापूर्वक निभाया है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए पत्रिका का ''राजभाषा विशेषांक'' प्रकाशित करना निश्चय ही एक सराहनीय कदम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मकता को अभिव्यक्त एवं प्रोत्साहित करने के साथ ही ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन में भी सहायक होगी।

मैं इस अवसर पर पत्रिका के सफल एवं उद्देश्यपरक प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

9/8/18
(रविकान्त)

सत्यमेव जयते

शैलेश
सचिव
भारत सरकार
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
नई दिल्ली

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा पत्रिका ''भंडारण भारती–राजभाषा विशेषांक'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

सदियों से हिंदी भाषा संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है, यही कारण है कि संविधान सभा ने सभी को राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने तथा प्रचार–प्रसार का दायित्व सौंपा है। यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि इस दिशा में लगातार प्रयास किए जायें। मुझे विश्वास है कि केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा ''राजभाषा विशेषांक'' प्रकाशित करने से राजभाषा कार्यान्वयन की कड़ी में महती सफलता प्राप्त होगी।

मैं संपादक मंडल को बधाई देते हुये पत्रिका ''भंडारण भारती–राजभाषा विशेषांक'' के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

(शैलेश)

सत्यमेव जयते

प्रोफेसर अवनीश कुमार

अध्यक्ष

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

भारत सरकार

नई दिल्ली

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि ''केन्द्रीय भण्डारण निगम'' अपने मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पादों और अन्य अधिसूचित वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भण्डारण की सुविधा उपलब्ध कराने के साथ ही राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी अपना योगदान दे रहा है। इस क्रम में निगम द्वारा सितम्बर, 2018 में त्रैमासिक पत्रिका ''भंडारण भारती'' का राजभाषा विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है जो कि राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में एक सहयोगपूर्ण कदम है। आशा करता हूँ कि इस विशेषांक में सम्मिलित आलेखों के माध्यम से कृषि उत्पादों एवं अन्य वस्तुओं के विषय में सारगर्भित जानकारी पाठकों को मिलेगी तथा आलेखों में अधिकाधिक शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित मानक शब्दावली का प्रयोग होगा।

निगम द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''भंडारण भारती'' का ''राजभाषा विशेषांक'' भारत सरकार के अन्य संस्थानों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

31/8/18

(प्रोफेसर अवनीश कुमार)

योगेन्द्र त्रिपाठी
अध्यक्ष
केन्द्रीय भंडारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह प्रसन्नता है कि हमारा निगम विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर भंडारण भारती पत्रिका का ''राजभाषा विशेषांक'' प्रकाशित कर रहा है।

केंद्रीय भंडारण निगम अपने मुख्य व्यवसाय वैज्ञानिक भंडारण और इससे संबंधित विभिन्न सेवाओं की जानकारियों और सूचनाओं को पत्रिका के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाने में अपनी अहम् भूमिका अदा कर रहा है। गृह–पत्रिका का उद्देश्य भी यह है कि वह संस्थान के कार्यकलापों एवं उपलब्धियों को दर्शाते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन क्षमता के लिए मंच स्थापित करें। मुझे विश्वास है कि किसानों को राजभाषा के माध्यम से भंडारण तकनीक के बारे में जानकारी देने के लिए यह 'विशेषांक' अत्यन्त प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका रोचक सामग्री के साथ बेहतरीन संदेश देने में सहायक होगी।

(योगेन्द्र त्रिपाठी)

के.यू. थंकाचन

प्रबंध निदेशक

सैन्ट्रल रेलसाइड वेअरहाउस कम्पनी लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा सितम्बर, 2018 में अपने अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर भंडारण भारती का ''राजभाषा विशेषांक'' प्रकाशित किया जा रहा है।

मेरी दृष्टि में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में संवृद्धि की दिशा में यह एक सकारात्मक तथा सही कदम है। इस प्रकार के प्रकाशन से जहाँ एक ओर निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी विशेषज्ञता एवं रुचि वाले विषयों पर मूल रूप से हिंदी में लिखने का अवसर प्राप्त होगा, वहीं दूसरी ओर वैज्ञानिक भंडारण की तकनीकों तथा अन्य विषयों की जानकारी जन सामान्य तक पहुँचाने में सहायता मिलेगी। मुझे उम्मीद है कि विशेषांक के माध्यम से राजभाषा के रूप में हिंदी का सामर्थ्य बढ़ने सहित हिंदी के प्रयोग के प्रति कार्मिकों में नई ऊर्जा का संचार होगा। यह भी हर्ष का विषय है कि एक सेवा संगठन के रूप में केन्द्रीय भंडारण निगम अपने मूल्यवान ग्राहकों को कृषि उत्पादों और अन्य अधिसूचित वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भंडारण की सुविधाएँ प्रदान करने सहित अपनी समस्त गतिविधियों एवं संव्यवहारों में राजभाषा हिंदी को यथोचित स्थान प्रदान करता है।

मैं ''राजभाषा विशेषांक' के सफल एवं उद्देश्यपरक प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ संप्रेषित करता हूँ।

थंकचन

(के.यू. थंकाचन)

प्रबंध निदेशक की कलम से...

निगम के अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर ''भंडारण भारती'' पत्रिका का 'राजभाषा विशेषांक' प्रकाशित करना प्रसन्नता की बात है। किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की जानकारी देने के साथ–साथ निगम की अन्य व्यापारिक गतिविधियों से अवगत कराने के लिए यह पत्रिका अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

निगम जहाँ एक ओर अपनी व्यापारिक गतिविधियों को प्रमुखता देते हुए भंडारण की सुविधा उपलब्ध करा रहा है, वहीं दूसरी ओर भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुसार अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए भी वचनबद्ध है। निगम के लिए यह अत्यंत खुशी और गौरव का विषय है कि राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2017–18 के लिए हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति जी ने इस पत्रिका को ''**राजभाषा कीर्ति पुरस्कार**'' में ''**प्रथम**'' स्थान से सम्मानित किया है। मैं समझता हूँ कि हमारे निगम को यह उत्कृष्ट पुरस्कार सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा अनुभाग को मिले अमूल्य सहयोग से ही संभव हो पाया है।

आज समय की आवश्यकता है कि निगम अपने मुख्य व्यवसाय के साथ–साथ विविधीकरण के क्षेत्र में प्रवेश करते हुए नये ग्राहकों की भागीदारी सुनिश्चित करें। इस कार्य के लिए सभी को अपना भरपूर योगदान देना होगा क्योंकि उत्कृष्ट सेवाओं सहित ग्राहक संतुष्टि प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी की पहली आवश्यकता होनी चाहिए। निगम को अपनी व्यापारिक गतिविधियों में विविधता लाने के लिए प्रबंधकीय कुशलताओं का समुचित प्रयोग करना होगा ताकि इसका सकारात्मक परिणाम निकल सके। इस तिमाही में निगम तथा एलपीएआई के बीच समझौता ज्ञापन, मैसर्स एमएसटीसी के बीच फारवर्ड–ई–ऑक्शन सेवाएं प्राप्त करने हेतु समझौता करार तथा क्यूएमएस एवं ईएमएस के लिए आईएसओ प्रमाण–पत्र प्राप्त करने संबंधी कार्य भी किए गए हैं।

मुझे आशा है कि भविष्य में भी निगम अपने व्यावसायिक कार्यों सहित राजभाषा के क्षेत्र में आगे बढ़कर कार्य करते हुए निगम को शीर्ष स्थान पर पहुँचाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेगा।

(अरुण कुमार श्रीवास्तव)
प्रबंध निदेशक

विचारों के झरोखे से...

इस तिमाही में जहाँ एक ओर सावन की फुहार ने अपनी खूबसूरत छटा बिखेरी वहीं दूसरी ओर पर्वों के आगमन से नवजीवन का संचार हुआ।

इनमें सबसे प्रमुख था हमारा राष्ट्रीय पर्व–स्वतंत्रता दिवस। किसी भी राष्ट्र को तीन देवियाँ एक जीवित राष्ट्र बनाती हैं। ये हैं, मातृभाषा, मातृसंस्कृति और मातृभूमि। स्वतंत्रता तभी साकार होगी जब हम अपने राष्ट्र की भाषा, संस्कृति एवं भूमि को अपनाएं। राष्ट्र केवल भूमि का टुकड़ा नहीं बल्कि यह बहुत कुछ है। ये कई प्रतीकों से जुड़ी एक पूर्ण सत्ता है जैसे हमारा रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार, ज्ञान–विज्ञान, तीज–त्यौहार, धर्म–संस्कृति, भाषा–बोली, गौरवमयी इतिहास, भौगोलिक स्थिति और न जाने क्या–क्या। इस प्रकार के भाव लिए, अपनी ऊर्जा तरंगों से स्पन्दित ये प्रतीक इस अद्‌भुत भूमि को घेरे हुए हैं। यह भारत हमारी अस्मिता है, स्वाभिमान है, दिव्यताओं का माध्यम है। अतः यह स्तुल्या है, यह वरणीया और वरदाती भी हो। आओ सब मिलकर स्वराज्य की अर्चना करें।

यह सत्य है कि हमारी कोई आक्रमणात्मक योजनाएं या आंकाक्षाएँ नहीं। किन्तु वास्तव में हम सब एक आक्रमण पूर्ण संसार से घिरे हैं और इसीलिए, अपनी और मान मर्यादाओं की रक्षा के लिए, अपनी मातृभूमि को सशक्त बनाने के लिए हमें सदैव कटिबद्ध रहना चाहिए।

गुरूपूर्णिमा और रक्षाबन्धन इस तिमाही के अन्य विशेष पर्व रहे जो भारतीय संस्कृति की धरोहर है। ऐसा कहा जाता है कि प्राचीन काल में आचार्य अपने गुरूकुल में आए शिष्यों को रक्षा सूत्र बांध कर उन्हें अन्तःवासी बनाता था। तत्पश्चात उनकी शिक्षा प्रारंभ होती थी और आचार्य शिष्यों को पशुत्व से मनुष्यत्व और मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ले जाता था।

"रक्षा" की अवधारणा तो बहुत गहरी है जो सिमट कर भाई–बहन के त्यौहार तक रह गयी। रावण रक्ष जाति का था। हमने उसे राक्षस कहना शुरू कर दिया। उसने एक सूत्र दिया था, **"वयम् रक्षामः"**, यानि कि **"हम रक्षा करते हैं"**। आज यही आदर्श वाक्य है, भारतीय तट रक्षक का। महाभारत में भी द्रौपदी द्वारा कृष्ण को और कुन्ती द्वारा अभिमन्यु को राखी बांधने के उल्लेख मिलते हैं। राजपूत शूरवीर जब युद्ध पर जाते तो महिलाएं उनके हाथ पर एक रेशमी धागा बांधतीं, उनकी रक्षा के लिए और राज्य की रक्षा के लिए।

जब श्रीकृष्ण का जिक्र हुआ तो यह भी कहना जरूरी है कि "श्रीकृष्ण जन्माष्टमी" भी इसी तिमाही में धूमधाम से मनाई गई। श्रीकृष्ण एक ओर जो गीता जैसे रहस्यमय ग्रन्थ के प्रणेता थे, दूसरी ओर सोलह गुण संपन्न थे। यजुर्वेद में एक मंत्र है– **"कृष्णः अस्नि आखरे स्थ"**। इसका अर्थ है, **जो आकर्षक है, जिसमें आकर्षण है, जिसके प्रति आकृष्ट हो, उसे कृष्ण कहते हैं। ब्रह्माण्ड में ब्रह्म कृष्ण है, सौरमण्डल में सूर्य कृष्ण है और जीव में आत्मा कृष्ण है।** समाज के प्रत्येक रिश्ते में एक दूसरे के प्रति आकर्षण भाव और जुड़ाव रहता है। इसलिए हम कहते हैं– **"तू ही मेरा कृष्ण है"**। इसे काले रंग से भी जोड़ा गया है जिसमें सभी रंग समा जाते हैं। इसी प्रकार इस जीवन में हम भी एक दूसरे के प्रति आत्मीयता रखें ताकि मिटते संबंधों को बचाया जा सके। एक नेता, विचारक और कवि, अटलबिहारी वाजपेयी, जिन्हें हाल ही में राष्ट्र ने खो दिया, उन्हीं के शब्दों में .....**बुझती बाती को सुलगाएँ,**
आओ फिर से दीया जलाएँ।

(अरविन्द चौधरी)
समूह महाप्रबंधक (कार्मिक)

संपादकीय

वर्ष 2018 में भंडारण भारती पत्रिका के अब तक प्रकाशित पिछले दो अंकों के सफलतापूर्वक प्रकाशन के बाद राजभाषा विशेषांक का यह अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। जैसा कि विशेषांक के नाम से स्पष्ट है कि इस अंक का केन्द्र बिन्दु राजभाषा है जिसे प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। सितंबर माह में आयोजित मुख्य समारोह हिंदी दिवस की झलकियाँ भी हमने इस अंक में प्रकाशित की हैं।

इस पत्रिका के पिछले अंकों की भांति हमने स्थाई स्तभों को तो प्रकाशित किया ही है, साथ ही खाद्य भंडारण, कार्यालयी साहित्य का अनुवाद, राजभाषा, शिक्षा, आध्यात्म जैसे विषयों को जोड़कर इसे और भी रोचक और पठनीय बनाने का प्रयास किया है।

हमारे निगम के लिए जुलाई–सिंतबर तिमाही राजभाषा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण रही क्योंकि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा इस पत्रिका को वर्ष 2017–18 के लिए 'क' क्षेत्र में पहली बार 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' (प्रथम) से सम्मानित किया गया। यह कार्य इस पत्रिका के पाठकों, सहयोगियों, लेखकों और इसमें रुचि लेने वालों के अथक प्रयासों से ही संभव हो पाया है। आपकी प्रेरणा, सुझाव और सहयोग से हम हमेशा आगे बढ़ने का निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी इस पत्रिका को शीर्ष स्तर तक पहुँचाने में सभी का सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

हिंदी में आखिर क्या नहीं है

बालेन्दु शर्मा ''दाधीच''*

पिछले एक दशक में भाषायी तकनीकों का लगभग कायाकल्प हो चुका है। मोबाइल, क्लाउड, पर्सनल कंप्यूटर और इंटेलीजेंट उपकरणों तक ऐसा कोई क्षेत्र नहीं दिखता जिसमें हिंदी की कोई न कोई उपस्थिति न हो। डेटा विश्लेषण, बिग डेटा, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस आदि तमाम आधुनिकतम क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। ध्वनि, मशीन अनुवाद और कंप्यूटर दृष्टि जैसे क्षेत्रों में भी हिंदी मौजूद है। लेकिन अगर कमी है तो आम यूज़र तक इनके बारे में जानकारी के पहुँचने की। अफसोस होता है कि आम हिंदी प्रयोक्ता आज भी कृति–चाणक्य–सुशा फॉन्ट, यूनिकोड संबंधी दिक्कतों और टाइपिंग के तौरत–रीकों में ही फँसा हुआ है। कहीं कोई कड़ी है जो छूट गई लगती है।

हिंदी में बार–बार वही बुनियादी सवाल पूछे जाते हैं जिनके बारे में अब तक आम यूज़र को जानकारी हो जानी चाहिए थी। आइए, देखते हैं कि आधुनिक तकनीकों के दौर में आम हिंदी यूज़र की बुनियादी चिंताएँ क्या हैं और उनका समाधान कैसे होगा।

टाइपिंग पद्धतियाँ–

आज भी बहुत सारे हिंदी यूज़र सवाल पूछते हैं कि वे रेमिंगटन पद्धति से कंप्यूटर पर टाइप कैसे कर सकेंगे? जाहिर है, यह तबका उन लोगों का है जिन्होंने कम से कम पच्चीस साल पहले हिंदी में टाइप करना सीखा होगा और वह भी टाइपराइटर की मशीनों पर। वह उसी टाइपिंग पद्धति को कंप्यूटर पर इस्तेमाल करना चाहता है। वह कंप्यूटर को भी एक टाइपराइटर मशीन की तरह ले रहा है जबकि टाइप करके प्रिंट आउट लेना कंप्यूटर का एकमात्र कार्य नहीं है। बहरहाल, आज जबकि रेमिंगटन की टाइपराइटर मशीन ही बाजार में उपलब्ध नहीं है, हम एक आधुनिक मशीन पर पुराने तौर–तरीकों को क्यों लादना चाहते हैं? क्या हम अपनी भाषा के लिए दो–चार दिन निकालकर कंप्यूटर की पद्धति से टाइपिंग नहीं सीख सकते? तय मानकर चलिए कि कोई भी कंप्यूटर निर्माता या ऑपरेटिंग सिस्टम निर्माता रेमिंगटन टाइपिंग के लिए समर्थन देगा, इसकी उम्मीद न के बराबर है। इसलिए बेहतर है कि जितना जल्दी इनस्क्रिप्ट या ट्रांसलिटरेशन जैसी टाइपिंग पद्धतियों को सीख लिया जाए उतना ही अच्छा है। इनस्क्रिप्ट तो सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि यह हर वातावरण, हर उपकरण, हर ऑपरेटिंग सिस्टम पर उपलब्ध है। आज भी और आगे भी रहेगा। फिर भी आप रेमिंगटन के तरीके से टाइपिंग करना चाहते हैं तो इंटरनेट पर सर्च कीजिए– कुछ डेवलपर्स ने ऐसे टूल उपलब्ध कराए हैं जिनके जरिए आप आगे भी ऐसा करते रह सकते हैं, जैसे– Hindiime.exe, HIME.exe, HindiRemington.exe और Hindi - Toolkit.exe

यूनिकोड फॉन्ट–

यह सवाल अक्सर उठाया जाता है कि हिंदी में यूनिकोड का सिर्फ एक ही फॉन्ट (मंगल) क्यों है? यह सवाल पूरी तरह अनभिज्ञता पर आधारित है। माइक्रोसॉफ्ट ने ही हिंदी में मंगल के अतिरिक्त अनेक फॉन्ट उपलब्ध कराए हैं, जैसे– अपराजिता, कोकिला, निर्मला, एरियल यूनिकोड एमएस और उत्साह। अपने कंप्यूटर पर काम करते समय जरा फॉन्टों की सूची पर नज़र डालकर देखिए। गूगल ने कुछ दर्जन यूनिकोड देवनागरी फॉन्ट डाउनलोड के लिए उपलब्ध कराए हैं। एक बार सर्च इंजन में डालकर तो देखिए। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना टीडीआईएल के तहत लगभग 50 हिंदी यूनिकोड फॉन्ट निःशुल्क उपलब्ध कराए गए हैं। इतना ही नहीं, एडोबी ने एडोबी देवनागरी, लिनक्स पर लोहित तथा और भी कई संस्थानों ने यूनिकोड फॉन्ट जारी किए हैं। सम्मिट, मॉड्यूलर जैसे

* निदेशक, लोकलाइजेशन, 504, पार्क रॉयल, जीएच–80, सेक्टर–56, गुरुग्राम–122011

धैर्य कड़वा है लेकिन इसका फल मीठा है।

संस्थानों ने अपने पारंपरिक फॉन्टों को यूनिकोड में बदल दिया है और ये फॉन्ट उनकी वेबसाइटों से खरीदे जा सकते हैं। हिंदी में ज्यादा नहीं तो करीब डेढ़ सौ यूनिकोड फॉन्ट तो उपलब्ध हैं ही। क्या यह संख्या कम है?

पेजमेकिंग में हिंदी फॉन्ट–

यह सवाल लगभग दो दशकों से पूछा जाता रहा है कि पेजमेकिंग अनुप्रयोगों में यूनिकोड फॉन्टों का इस्तेमाल कैसे किया जाए। वजह यह है कि सवाल पूछने वाले ज्यादातर लोग एडोबी, कोरल और क्वार्क के पुराने संस्करणों का प्रयोग करते हैं। एडोबी पेजमेकर के बारे में सवाल सर्वाधिक पूछे जाते हैं जबकि लोगों को पता ही नहीं है कि जब तक हिंदी में यूनिकोड लोकप्रिय हुआ तब तक पेजमेकर का निर्माण बंद कर दिया गया था। अब उस बेचारे सॉफ्टवेयर को क्या पता कि उसके बंद होने के बाद कौन–सी तकनीकी एनकोडिंग बाजार में जारी की गई। नतीजा जाहिर है, वह यूनिकोड को नहीं पहचानता और अगर उसमे यूनिकोड के हिज्जे टाइप किए जाएं तो वे सभी प्रश्नवाचक चिह्नों में बदल जाते हैं। लोगों को पता ही नहीं है कि पेजमेकर एक विलुप्तप्राय सॉफ्टवेयर है जिसकी फिक्र अब उसकी निर्माता कंपनी तक को नहीं है। यह ऐसे ही है जैसे हम 80 के जमाने की फिएट को लेकर सीएनजी स्टेशन पर पहुँच जाएँ और कहें कि इसमें सीएनजी भर दो।

आज सभी आधुनिकतम पेजमेकिंग अनुप्रयोगों (माइक्रोसॉफ्ट पब्लिशर, एडोबी इन डिजाइन, कोरल ड्रॉ और क्वार्क एक्सप्रेस) में हिंदी यूनिकोड फॉन्टों का समर्थन मौजूद है। आप नए संस्करण खरीदकर तो देखिए। पब्लिशर तो माइक्रोसॉफ्ट के साथ ही आता है और शायद आपके कंप्यूटर में पहले से ही मौजूद हो। पेजमेकर में यूनिकोड चलाना चाहते हैं तो भूल जाइए, वह कभी भी नहीं चलेगा।

फॉन्ट परिवर्तन–

सब पूछते हैं कि कृति से यूनिकोड और यूनिकोड से कृति में फॉन्ट परिवर्तन करते समय सौ फीसदी रूपांतरण क्यों नहीं होता। ऐसा कभी भी नहीं हो सकेगा क्योंकि कृति आदि फॉन्ट पुरानी एस्की एनकोडिंग के लिहाज से बनाए गए थे जिसमें 127 अक्षरों की सीमा थी। यूनिकोड में हिंदी के सभी अक्षरों के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध है। कृति जैसे पुराने फॉन्टों को उनके निर्माताओं ने बिना किसी स्पष्ट नियम के बनाया था और उन फॉन्टों में ऐसे भी हिज्जे शामिल किए थे जो हिंदी की वर्णमाला में हैं ही नहीं, जैसे छोटी ई की मात्रा के साथ बिंदु और रेफ का निशान एक अलग कैरेक्टर के रूप में सहेजा गया था। दूसरी ओर यूनिकोड पूरी तरह देवनागरी वर्णमाला का पालन करता है। इसमें ऐसे कोई कामचलाऊ कैरेक्टर नहीं बने हैं और कैरेक्टरों के निर्माण की प्रक्रिया आधुनिक तथा सुस्पष्ट है। ऐसे में कृति आदि में बनी फाइलों में जहाँ भी ऐसे अवास्तविक कैरेक्टर आते हैं, वहाँ उनका ढंग से परिवर्तन नहीं हो पाता। अगर दोनों तरह के फॉन्टों में तमाम अक्षर एक से होते तभी उनके बीच सौ फीसदी परिवर्तन हो सकता था जो कि हकीकत नहीं है। इसलिए अब मान लेना चाहिए कि कभी भी यूनिकोड और गैर–यूनिकोड फॉन्टों के बीच सौ फीसदी रूपांतरण संभव नहीं होगा– कम से कम एक बार में तो बिल्कुल नहीं।

मशीन अनुवाद–

ऑनलाइन अनुवाद पूरी तरह शुद्ध क्यों नहीं होता? गूगल और बिंग पर मशीन अनुवाद का इस्तेमाल करने वाले लोग अक्सर पूछते हैं। उत्तर यह है कि मशीन अनुवाद लगातार समृद्ध हो रहा है और होता रहेगा। गूगल और बिंग की अनुवाद परियोजनाएँ मात्र एक दशक पुरानी हैं और इतने समय में वे यहाँ तक आ पहुँची हैं कि आपके छोटे वाक्यों का ठीक–ठाक अनुवाद करने लगी हैं। उन्हें कुछ समय और दीजिए, वे लगातार बेहतर हो रही हैं। तब तक आप अपनी भाषा को थोड़ा सा बदलिए और छोटे वाक्यों का प्रयोग शुरू कीजिए। आप देखेंगे कि उनका अनुवाद बहुत अच्छा हो रहा है। एक बात और, मशीन अनुवाद के इन ठिकानों का इस्तेमाल आप एक अच्छी डिक्शनरी के रूप में तो कर ही सकते हैं। शब्द डालिए और उसका अर्थ अपनी भाषा में देखिए।

वर्तनी जाँच–

हिंदी में उसी तरह वर्तनी की जाँच क्यों नहीं की जा सकती जैसे अंग्रेजी में होती है? की जा सकती है किंतु शायद आपने कभी इस बारे में अधिक जानने की कोशिश ही नहीं की। माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस में हिंदी में न सिर्फ स्पेलिंग चेक कर सकते हैं बल्कि ऑटो करेक्ट का भी प्रयोग कर सकते हैं और समानार्थक शब्द भी देख सकते हैं। अगर आप चाहें तो ऑटो करेक्ट में अपने खुद के शब्द भी जोड़ सकते हैं। आजमाइए तो सही।

मानव जीवन के लिए प्रकृति का अनुपम उपहार खाद्यान्न है।

खाद्य भंडारण के दौरान खाद्य सुरक्षा

डॉ. पुष्पेंद्र साम्भरवाल*

खाद्य भंडारण के अंतर्गत कच्ची खाद्य सामग्रियाँ और तैयार भोजन दोनों आते हैं। कच्ची सामग्रियाँ ही वह कच्चा माल होता है, जिससे सुरक्षित और पोषक भोजन तैयार होता है। यदि कच्ची सामग्रियाँ अदूषित भी हों, परंतु उनका भंडारण, भंडारण की अच्छी रीतियों के अनुसार न हो तो अच्छा–भला कच्चा माल तैयार होने से पहले ही खराब हो सकता है और उससे तैयार हुआ खाद्य निश्चित रूप से दूषित, उपभोग के लिए असुरक्षित और स्वास्थ्य के लिए हानिकर होगा। यही बात तैयार भोजन के लिए भी पूरी तरह लागू होती है, बल्कि उससे भी कहीं अधिक, क्योंकि तैयार भोजन कीटाणुओं के पनपने के लिए बहुत अनुकूल वातावरण उत्पन्न करता है। यदि खाद्य का भंडारण उचित प्रकार से न हो तो वह दो घंटे बाद ही खराब होने लगता है।

कच्ची सामग्रियों और भोजन का भंडारण पूरी तरह लॉजिस्टिक्स का कार्य होता है और उसे इसी तकनीक के अनुसार संभालना चाहिए। इनका भंडारण अलग–अलग वातावरण, अवस्था और रूप में किया जाता है।

भंडार–गृह का रख–रखाव

- सबसे पहले खाद्य भंडारण सुविधा का डिजाइन और निर्माण इस प्रकार हो कि खाद्य हर प्रकार के संदूषण से बच सके और साफ–सफाई तथा रख–रखाव आसानी से हो सके।
- भंडार–गृह के फर्शों, दीवारों, अंदरूनी छतों, दरवाजों के डिजाइन ऐसे हों कि उन पर धूल कम से कम इकट्ठी हो, वे सपाट हों और साफ करने में आसान हों, वे अभेद्य (impermeable) सामग्री के बने हों और उनका पेंट अथवा प्लस्तर उखड़ा हुआ न हो।
- परिसर की दीवारों पर फर्श से लेकर उपयोग में आने की ऊँचाई तक पेंट करके या टाइल लगाकर उन्हें सपाट बनाया जाए, जिससे उन्हें आसानी से साफ किया जा सके।
- भंडार–गृह में संवातन (ventilation) की उचित व्यवस्था हो, परंतु वह व्यवस्था ऐसी हो कि एक्जास्ट पंखों अथवा रोशनदानों से धूल अंदर न जा पाए,
- फर्श पर पानी का बहाव भंडारण के विपरीत दिशा में हो।
- खिड़कियों, नालियों के मुँह आदि बाहर की ओर हों तथा खुलने वाली जगहों पर अच्छी प्रकार जालियाँ लगी हों, जिससे परिसर में कीट न घुस सकें।
- भंडारण सुविधा क्षेत्र ऐसा हो कि उससे कोई अन्योन्य संदूषण (trans contamination) न हो, उसकी साफ–सफाई अच्छी प्रकार की जा सके और उसमें कीटों की आवाजाही और उनके पनपने का जोखिम न हो।

फूड हैंडलिंग

- खाद्य उत्पादों की हैंडलिंग और भंडारण के लिए गैर–संक्षारी अथवा पेंट की हुई ट्रालियों, रैकों, उपकरणों, आधानों का उपयोग किया जाए और वे साफ करने में आसान हों। उनका रख–रखाव अच्छी प्रकार किया जाए। खराब होने पर उन्हें स्टोर में न रखा जाए।
- सफाई के रसायनों, पेस्टीसाइडों, सोल्वेंटों इत्यादि के धारकों की अच्छी तरह पहचान बनाकर रखी जाए और आकस्मिक संदूषण से बचने के लिए उन्हें खाद्य सामग्री के भंडार अथवा फूड हैंडलिंग एरिया से दूर रखा जाए।
- सामग्री का पृथक्करण और विलगन (segregation and sorting of the material) – भंडार में अलग–अलग प्रकार की सामग्रियों का भंडारण

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

अलग–अलग करना चाहिए, जैसे शाकाहार और मांसाहार, एलर्जीकारक और गैर–एलर्जीकारक, ठंडी और गर्म रखी जाने वाली सामग्रियाँ, सैनिटरी और गैर–सैनिटरी सामग्रियाँ।

- पहचान – भंडार में रखी हर सामग्री की पहचान स्पष्ट रूप से की जाए, जिससे वह दूसरी तरह की सामग्री के समूह में गलती से भी न रखी जा सके।
- एफआईएफओ (FIFO--First in First Out, पहले आए, पहले जाए) – भंडार में सामग्रियाँ इस प्रकार रखी जाएँ कि पहले आई सामग्री की बिक्री बिना विशेष ध्यान दिए पहले ही हो, जिससे किसी भी खाद्य सामग्री की समाप्ति तिथि भंडार में ही समाप्त न हो।
- हर प्रकार की खाद्य सामग्री का भंडारण फर्श से ऊपर और दीवारों से दूर करना चाहिए, ताकि खाद्य सामग्री में नमी आने से कीट न पनपें और यदि पनप जाएँ तो उन्हें दूर करना और भंडारण सुविधा की सफाई करना आसान हो।
- कच्चे और पके खाद्य को अलग–अलग जगह भंडारित करना चाहिए।
- कच्ची खाद्य सामग्रियों को कभी तैयार खाद्य के ऊपर न रखें।
- खाद्य सामग्री को हमेशा ढ़ककर रखें।
- सभी खाद्यों पर उचित विवरण वाले लेबल लगाकर रखें।
- खाद्य की पैकिंग सामग्री को भी ढककर रखें, जिससे अन्योन्य संदूषण (trans contamination) न हो।
- सभी प्रकार की खाद्य सामग्रियों को भंडारित करने के लिए गैर–अविषालु (non toxic) धातुओं के धारकों (containers) का उपयोग करना चाहिए।
- खाद्य सामग्री को प्रिंटिड पैकेजिंग सामग्री, लेखन–सामग्री, हार्डवेयर, सफाई की सामग्रियों और रसायनों से दूर रखें।

सुविधाएँ:

- खाद्य भंडारण परिसर, रैक और ट्राली इत्यादि धोने के लिए गैर–पेय जल का प्रयोग किया जाए। साफ और सुरक्षित जल–संग्रह की व्यवस्था हो। पीने के पानी की टंकियाँ समय–समय पर साफ की जाती रहें। पेय और गैर पेय जल की पाइप लाइनों की अलग–अलग पहचान बनाई जाए।
- खाद्य सामग्रियों के प्रत्येक लॉट और किस्म की प्राप्ति, भंडारण और वितरण के लिए मानक प्रचालन प्रक्रियाओं का पालन किया जाए।
- भंडारण के लिए प्रतिदिन आने वाली और भंडार–गृह से बाहर जाने वाली सामग्री का उचित रिकार्ड रखा जाए। रखे जाने वाले रिकार्डों के कुछ आम उदाहरण उत्पाद प्राप्ति, पेस्ट कंट्रोल, सफाई और हाउस कीपिंग के रिकार्ड हैं।
- पेस्ट नियंत्रण कार्यक्रम बनाया जाए और पेस्टीसाइडों के प्रयोग एवं उनकी आवृत्ति को दर्शाते हुए उसका रिकार्ड रखा जाए। पेस्ट नियंत्रण के लिए कीटों को दूर रखने का पर्यावरण बनाए रखें।

तापमान–नियंत्रण

- खाद्य अन्य चीजों के साथ–साथ कीटाणुओं से भी संदूषित (contaminate) होता है। खाद्य में कीटाणु उपयुक्त तापमान मिलने पर पनपते हैं। 5°C से कम तापमान में कीटाणु पनप नहीं पाते और 60°C से अधिक तापमान पर मर जाते हैं, परंतु 5°C से 60°C के बीच के तापमान में कीटाणु पनपते हैं। 21°C से 51°C के तापमान में खाद्य सामग्री न अधिक ठंडी और न अधिक गर्म होने के कारण कीटाणु इतनी जल्दी बढ़ते हैं कि 1 घंटे में ही 100 कीटाणुओं के 40 लाख हो जाते हैं। इसलिए 5°C से 60°C के बीच के तापमान को डेंजर जोन कहा जाता है। मांस, मछली, कुछ डेयरी उत्पादों, कच्चे समुद्री भोजन में कीटाणु जल्दी पनपते हैं, क्योंकि उनमें उनके पनपने के लिए आवश्यक खाद्य, तापमान, नमी आदि सभी चीजें होती हैं। ऐसे खाद्यों को संभालने के लिए विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। हालांकि 5°C से कम तापमान में सूक्ष्म जीवाणु उत्पन्न नहीं हो पाते, परंतु खाद्य में पहले उत्पन्न हो चुके सूक्ष्म जीवाणु नष्ट भी नहीं होते। खाद्य को 5°C से अधिक तापमान में रखने पर उसमें पहले मौजूद जीवाणु पुनः सक्रिय हो जाते हैं। साथ ही नए जीवाणु भी बन जाते हैं। इसलिए खाद्य सामग्री को डेंजर जोन में नहीं रखना चाहिए।
- सूखे भंडारण क्षेत्र का तापमान 100से. से 210से. तक होना चाहिए।

विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान ही संस्कृति है।

- फ्रिज और रेफ्रिजरेटिड इकाइयों का तापमान 40से. या उससे कम होना चाहिए।
- 50से. कम तापमान पर भंडारित की जाने वाली खाद्य सामग्रियों के लिए कोल्ड स्टोरेज की सुविधा हो।
- फ्रोजन खाद्य को –180से. पर, आइसक्रीम को –12से. अथवा उससे कम तापमान पर, तैयार खाद्य को 5से. अथवा उससे कम तापमान पर और फलों और सब्जियों को 9से. अथवा उससे कम तापमान पर रखना चाहिए।
- अर्ध तैयार उत्पाद का भी उचित तापमान और आर्द्रता बनाए रखना चाहिए।
- प्रसंस्कृत (processed), रद्द अथवा वापस प्राप्त सामग्रियों को अलग–अलग करके, उनके वांछित तापमान और सुरक्षित अवस्था की जाँच करनी चाहिए।
- फ्रीजर में शाकाहार को मांसाहार के ऊपर रखना चाहिए अथवा इनके लिए अलग–अलग फ्रीजरों का उपयोग करना चाहिए। शाकाहार वाले फ्रीजर में तैयार आहार तथा सलाद को सबसे ऊपर, पकी हुई सब्जियाँ उससे नीचे तथा कच्ची सामग्रियाँ, सब्जियाँ, फल आदि सबसे नीचे रखने चाहिए। मांसाहार वाले फ्रिज में तैयार भोजन तथा सलाद सबसे ऊपर, पका मांस उसके नीचे और कच्चा मांस सबसे नीचे रखना चाहिए। इन विधियों से अन्योन्य संदूषण का खतरा कम होता है।
- इसी प्रकार भंडारित खाद्य के तापमान की भी जाँच करते रहना चाहिए, जिससे आवश्यकता होने पर तापमान की उचित अवस्थाएँ पैदा की जा सकें।
- फ्रीजर के रख–रखाव में कमी और इनमें खाद्य वस्तुओं को सही ढंग से न रखने से इनमें चीजें रखने का कोई लाभ नहीं हो सकता है। फ्रीजरों के केवल ठंडा रहने से ही खाद्य सामग्रियों की रक्षा नहीं होती, इसके लिए उनमें न्यूनतम तापमान बनाए रखने की आवश्यकता होती है। अतः खाद्य सामग्रियों के तापमान संबंधी खतरों और उन्हें स्टोर करने के लिए फूड हैंडलर को सही तापमान की जानकारी होनी चाहिए।

खाद्य का निरीक्षण

- शीतित (chilled) अथवा प्रशीतित (frozen) अवस्थाओं में रखे खाद्य की बिक्री होने तक अथवा उसकी समाप्ति की अवधि तक उसकी समय–समय पर जाँच करते रहना चाहिए और उसके किसी भी कारण से खराब पाए जाने पर उसे फेंक देना चाहिए। साथ ही खराब होने की अवधि तथा खराबी की प्रकृति भी नोट करके रखनी चाहिए, जिससे भविष्य में ऐसी खराबी पर समय–पूर्व ध्यान दिया जा सके।
- शीतित अथवा प्रशीतित अवस्था में रखी सामग्री को बाहर निकालने के बाद उसकी बर्फ पिघल जाने पर उसे दुबारा स्टोर नहीं करना चाहिए।
- सही माप लेने के लिए फ्रिजों के तापमान गेजों, भारण मशीनों आदि का निरीक्षण करके उनका समय–समय पर अंशांकन (calibration) कराया जाए।
- भंडारण के लिए भंडारण की उपर्युक्त अच्छी रीतियों में कमियाँ जानने और सुधारात्मक कार्रवाई करने के लिए उनकी समय–समय पर पुनरीक्षा (review) कराई जाए।

भंडारण परिसर की स्वच्छता

- भंडारण परिसर की साफ–सफाई और स्वच्छता का कार्यक्रम बनाया जाए, जिसमें साफ किए जाने वाले विशिष्ट क्षेत्रों, सफाई की आवृत्ति, सफाई के उपकरणों, सफाई की प्रक्रिया, सफाई की सामग्री और पद्धति शामिल हो। सफाई के रसायन और औजार खाद्य सामग्री से दूर किसी निर्धारित स्थान पर रखे जाएँ। रसायनों की पहचान स्पष्ट रूप से की जाए।
- भंडारण के दौरान पैदा हुआ कचरा, यथा टूटी हुई पैकिंग, क्षतिग्रस्त सामग्री को इस प्रकार इकट्ठा किया जाए कि उससे भंडार–गृह में संदूषण न हो। इकट्ठा किया गया कचरा ढ़क्कनदार कूड़ेदान में डाला जाए और समय–समय पर स्वच्छ रीति से हटाया जाए।

इस प्रकार खाद्य सामग्रियों का भंडारण विशेषज्ञतापूर्ण कार्य होता है और इसमें कभी लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए, क्योंकि थोड़ी सी भी लापरवाही से खाद्य सामग्री तुरंत खराब होकर खाने लायक नही रह जाती। सदा याद रखें सुरक्षित खाद्य ही सुरक्षित स्वास्थ्य की कुंजी होती है।

प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी भाषा का बढ़ता वर्चस्व

डॉ. पूरनचंद टंडन*

आज का युग सूचना, संचार तथा विचार का युग है। तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का वर्चस्व तेजी से बढ़ रहा है। प्रचार–प्रसार माध्यमों का तेजी से हो रहा समाजीकरण तथा जन–मानस पर निरंतर बढ़ रहा कम्प्यूटरीकरण का प्रभाव इसके मूल में है। भारत जैसे बहुभाषा–भाषी देश में विदेशों से आई कम्प्यूटर विद्या ने प्रारंभ में अपने अंग्रेजी वर्चस्व से आतंकित अवश्य किया, किन्तु भारतीय मनीषा तथा यहां की भाषाई शक्तियों ने इस चुनौती को शीघ्र ही चुनौती दे डाली। परिणामतः भारत के युवा मस्तिष्क एवं अनुभवी दिशा–निर्देश ने सूचना प्रौद्योगिकी का उत्तर 'भाषा प्रौद्योगिकी' से दिया। अनेक भाषाओं, उपभाषाओं, बोलियों तथा उपबोलियों के इस समृद्ध देश में हमारे कम्प्यूटर वैज्ञानिकों ने कठोर तथा अथक परिश्रम से, अपनी निष्ठा तथा साध शक्ति से कम्प्यूटर पर भारत की सभी प्रमुख भाषाओं को प्रतिष्ठित कर दिया। भाषाओं की संवेदनात्मक शक्ति ने मशीन का हृदय जीत लिया। हिन्दी ने इस दिशा में सर्वाधिक सफलता हासिल की क्योंकि हिन्दी घास खाने वाली भाषा है, मात्र पैट्रोल पीकर जीवित रहने वाली नहीं। घास विशाल भारत के शहरी, ग्रामीण, समतल, पठार, समुद्री अथवा मरुस्थली समस्त क्षेत्रों में मिलती है। उसे कोई सींचे या न सींचे, काटे या रौंदे– वह अपनी अंतर्निहित स्वतः स्फूर्त शक्ति से निरंतर विकासमान एवं गतिमान रहती है। हिन्दी भी भारत के जन–मानस की एक ऐसी ही सशक्त, समर्थ, सक्षम तथा दक्ष भाषा है जिसे संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत लिपि– 'देवनागरी' का सुदृढ़ संबल प्राप्त है।

वास्तव में भारत का रंगीन स्वप्न इस भाषा प्रौद्योगिकी के माध्यम से सूचना एवं संचार के उपकरणों पर अब साकार होता दिखाई देने लगा है। हिन्दी के अनेक सॉफ्टवेयर अब बाजार में उपलब्ध हैं। हमारे दैनिक जीवन के समस्त क्रियाकलापों से लेकर, कार्यालयी, व्यवसायी, वित्तीय, वाणिज्यिक, सौंदर्यशास्त्रीय, साज–सज्जापरक, गणितीय, सांख्यिकीय, प्रकाशकीय तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक क्षेत्रों में कम्प्यूटर का सफलतम प्रवेश हो चुका है। जिस कम्प्यूटर तथा उसकी भाषा को लेकर हम भयभीत तथा सहमे हुए थे, उसे जीवन के हर क्षेत्र में जोड़कर हमने अपनी भाषाओं से जीत लिया है। हिन्दी भाषा इस दृष्टि से भी अग्रणी है। हिन्दी में शब्द संसाधन का कार्य करने के लिए आज बाजार में जिस्ट कार्ड, जिस्ट शैल, सुलिपि, आकृति, ए.पी.एस., शब्द रत्न, लीप ऑफिस, अक्षर फॉर विंडोज, सुविंडोज, प्रकाशक तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। बैंकों के लिए अनेक द्विभाषी सॉफ्टवेयर भी अब विकसित कर लिए गए हैं। अंग्रेजी–हिन्दी और इसी प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं के परस्पर अनुवाद की संभावनाएं भी कम्प्यूटर पर खोज ली गई हैं। अनेक प्रकार के हिन्दी फॉन्ट्स भी अब बाजार में उपलब्ध हैं। माइक्रोसॉफ्ट कंपनी, सी–डैक तथा आई.बी.एम. टाटा इस दिशा में अपनी रचनात्मक भूमिका निभा रहे हैं। आई.बी.एम. टाटा द्वारा बाजार में लाए गए हिन्दी पी. सी. डॉस की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिन्दी डॉस के आ जाने से अब तक जो निर्देश अंग्रेजी में दिए जाते रहे हैं, वे भी हिन्दी में दिए जा सकते हैं। यह उपलब्धि वास्तव में हिन्दी के लिए 'मील का पत्थर' सिद्ध हुई है।

* प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

आज सरकारी या गैर–सरकारी कार्यालय हो अथवा व्यवसाय, शिक्षा हो या विज्ञापन, सूचना तंत्र हो या जनसंचार माध्यम, बैंक हो या डिज़ाइनिंग और टाइटलिंग का क्षेत्र, सरकारी उपक्रम हो या मंत्रालय, निगम हो या निकाय हो अथवा विभिन्न संस्थान, स्कूल हो या विश्वविद्यालय; सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। प्रशिक्षण की बहुलता एवं सहजता ने 'भाषा के सशक्तिकरण' की दृष्टि से युद्ध स्तर पर अभियान छेड़ दिया है। गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत राजभाषा विभाग ने कम्प्यूटर के हिन्दी अनुप्रयोग की दिशा में राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए अविस्मरणीय योगदान दिया है। हिन्दी को अब चुटकले, कहानी, कविता या पारंपरिक गद्य–पद्य विधाओं की भाषा मात्र न रहने दिया जाए, यह सोचकर उसे प्रौद्योगिकी के तमाम आयामों, दिशाओं एवं क्षेत्रों से जोड़ दिया गया है। प्रिंट मीडिया तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत चहुंमुखी एवं बहुमुखी मार्ग प्रशस्त किए गए हैं। समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, पोस्टर, बैनर, भित्ति–लेखन, पैंफ्लैट, हैंडबिल, विज़िटिंग कार्ड, पुस्तक लेखन, विवाह निमंत्रण, अभिवादन एंव बधाई कार्ड, विभिन्न सामग्रियों की पैकिंग पर मुद्रण, वस्तुओं पर मुद्रण, वस्त्रों पर मुद्रण, स्टीकर लेखन, नाम पट्टिकाएं, होर्डिंग लेखन, विद्युतीय बोर्डों पर लेखन, विभागों–अनुभागों और संस्थाओं के नामोल्लेख करने वाले बोर्ड, शहरों में लगे दिशा–बोधक बोर्ड, सूचना देने वाले विभिन्न बोर्ड, सावधान करने वाले बोर्ड, शोध–प्रबंध, टंकण–मुद्रण आदि अनेक मुद्रण माध्यमों में अब हिन्दी अपना वर्चस्व स्थापित कर चुकी है। इसका श्रेय सूचना प्रौद्योगिकी को ही जाता है। सूचना और संचार के बढ़ते महत्व ने जागृति और चेतना को बढ़ावा दिया है। इस क्रान्ति ने जन–जन को अद्यतन एवं अद्यनातन बनाने की दिशा में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इसी प्रकार रेडियो, दूरदर्शन, केबल, कम्प्यूटर, इंटरनेट, फैक्स, सेल्युलर, पेजर, दूरमुद्रक, इलैक्ट्रॉनिक टाइपराइटर, सिनेमा, दूरभाष तथा अन्य अनेक विद्युतीय माध्यमों ने भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार को नई शक्ति एवं नई दिशा प्रदान की है। यांत्रिक तथा इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा हिन्दी के कार्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अब मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों तथा अन्य अनेक सरकारी, गैर–सरकारी संस्थानों में आविष्कार किए जा रहे हैं तथा उनसे जनमानस को अवगत कराया जा रहा है।

हिन्दी में कम्प्यूटर का स्वतः प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए एक सी.डी. का निर्माण भी भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने किया है। इसके द्वारा एम.एस. वर्ड के साथ–साथ हिन्दी का प्रयोग, इंटरनेट तथा ई–मेल आदि की विस्तृत एवं सहज जानकारी भी हासिल की जा सकती है। इस दिशा में हिन्दी में निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण की सरकारी योजना भी अत्यन्त कारगर सिद्ध हुई है। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र तथा ई.आर. एण्ड डी.सी.आई., नोएडा ने हिन्दी भाषा के कम्प्यूटरीकरण की दिशा में अत्यंत दुर्लभ कार्य किए हैं।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का एक और बहुत बड़ा लाभ हिन्दी को मिला है और वह है–अंतरराष्ट्रीय मंच पर हिन्दी का व्यापक स्तर पर अवतरण। इससे पहले यह महत्वपूर्ण कार्य हिन्दी सिनेमा कर रहा था, किन्तु दूरदर्शन, रेडियो, केबल, इंटरनेट, ई–मेल, पेजर, सैलुलर आदि ने इस दिशा में गंभीर एवं सकारात्मक भूमिका निभाई है। निश्चय ही इन माध्यमों से हिन्दी के वर्तमान संवेदनात्मक एवं संपर्क–भाषा स्वरूप में परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन कहीं–कहीं अंग्रेजी मिश्रण से विकृत भी जान पड़ता है, किन्तु यदि हम मात्र साहित्य से हिन्दी भाषा को जीवित नहीं रख पा रहे, या कहें कि मृतप्रायः बना रहे हैं तो इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी से भाषा को जोड़ने के कुछ खतरे तो उठाने ही होंगे। यदि देश की सीमा लांघकर अहिन्दी भाषियों और विदेशियों तक हम हिन्दी भाषा को अंग्रेजी का छोंक लगा कर पहुंचा रहे हैं तो यह सराहनीय हो या ना हो, पर निंदनीय इसीलिए नहीं लगता क्योंकि कोशिश भाषा की अस्मिता को बरकरार रखने की है। भाषा यदि तथ्यात्मक, सूचनात्मक, संवेदनाशून्य बन रही है तो इसका भी एक सुनिश्चित प्रयोजन है। साहित्य में हिन्दी भाषा के विविध प्रयोग उपलब्ध हैं। वह हमारे स्वर्णिम विकास तथा समृद्धि के द्योतक भी है किन्तु उसके आगे भी तो बढ़ना होगा। वहीं इतिश्री नहीं है। भाषा गति चाहती है। निरंतर प्रवाह ही उसे संजीवनी प्रदान करता है। उत्तर मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में

जैसे दरबार–आश्रय एक विवशता थी, अन्यथा दो सौ वर्षों तक हम साहित्य तथा भाषा से वंचित हो जाते, ठीक वैसे ही आज की जरूरत है कि हम हिन्दी को साहित्य मात्र की चारदीवारी के बाहर निकालें और उसे नए–नए क्षेत्रों, प्रयोगों–अनुप्रयोगों से जोड़ें।

वास्तव में आज जरूरत इस बात की है कि या तो हिन्दी भाषी तथा हिन्दी के विद्वान लोग, साहित्यकार, पत्रकार, कलाकार, अध्यापक–प्राध्यापक विज्ञान तथा तकनीकी के उद्योग तथा प्रौद्योगिकी के विषयों को, अनुशासनों को हिन्दी में लाएं या इन क्षेत्रों और अनुशासनों के विशेषज्ञ हिन्दी के माध्यम से इन विषयों को जन–जन तक पहुंचाएं। इससे ज्ञान एवं प्रतिभा का दोहरा विकास होगा और अंततः राष्ट्र प्रगति करेगा।

अब भाषा स्वयं उपभोक्तावादी संस्कृति का हिस्सा तो बन ही रही है साथ ही उपभोग, व्यवसाय तथा इसके संप्रेषण का माध्यम भी बन रही है। पहले लौह–तंत्र से जुड़ रही इस भाषा की कठोरता को हमें पहचानना होगा। फिर धीरे–धीरे इन क्षेत्रों में भी सहजता संवेदनात्मकता की सोच पैदा करनी होगी।

वास्तव में सूचना का उपयोग अब एक तकनीकी प्रक्रिया के द्वारा उपभोक्ता की दृष्टि से किया जाने लगा है। भारत अब मात्र हरित–क्रांति का ही नहीं, श्वेत–क्रांति और ब्लेक–डायमंड का भी देश बन गया है। भाषाई क्रांति और मशीनीकरण के गठबंधन ने सूचनाओं के अपार भण्डार को उपादेयता से जोड़कर उनका व्यावसायीकरण कर दिया है। यदि दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर हमें चलना है और उससे आगे निकलें या न निकलें, उससे पीछे नहीं रहना है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी को सक्षम, समर्थ एवं दक्ष बनाते हुए सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी से पूरी तरह जोड़ना होगा। संचार साधन के अद्यतन रूपों में उपग्रहों (सैटेलाइट्स) की आवश्यकता भी पड़ती है। पश्चिमी देशों से आयातित इस परिकल्पना के माध्यम से हम आंकड़ों और सूचनाओं के आदान–प्रदान हेतु देश–विदेश के अनेक दूरस्थ कम्प्यूटरों को आपस में जोड़कर 'इंटरनेट' का रूप प्रदान करते हैं। आज यदि भारत में बैठकर हम अपने व्यवसाय, रोजगार या परियोजना आदि को विदेशों में बैठे लोगों तक पहुंचाना चाहते हैं तो हम किसी भी ऐसी भाषा के माध्यम से जो कि वहां कम्प्यूटर पर उपलब्ध हो जहां सूचना भेजनी हो, इस कार्य को सहज ही कर सकते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यदि अमेरिका में, रूस में, चीन में या इसी प्रकार अन्य देशों में हम हिन्दी में सूचना भिजवा रहे हैं तो वहां के लोग हिन्दी न जानने के कारण उसका अनुवाद अपनी भाषा में कराएंगे और अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने का प्रयास करेंगे। परिणामतः हिन्दी का विस्तार होगा ही। इसी प्रकार 'वेबसाइट' का उपयोग भी 'इंटरनेट' पर किया जाता है। उसके लिए भी भाषा का माध्यम अनिवार्य होता है। ऐसे में हिन्दी ने आज इन सभी अवरोधों को पार कर लिया है। देश–विदेश की तमाम भाषाओं में अब हिन्दी तथा अंग्रेजी सूचनाओं को अनुवाद के माध्यम से पहुंचाया जा रहा है। आज का युग विज्ञापन का युग भी है और विज्ञापन के मूल में भी भाषा तथा अनुवाद की शक्ति कार्यरत है। विवाह का विज्ञापन, कार, स्कूटर, मोटर बाइक आदि वाहनों के खरीदने–बेचने के विज्ञापन, व्यक्ति या वस्तु के खाने–पीने के विज्ञापन, जीवन–मरण के विज्ञापन, जनहित के सरकारी अथवा गैर–सरकारी विज्ञापन, निविदा, रोज़गार तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक विज्ञापनों को अब या तो मूलतः हिन्दी–लिखित रूप में या हिन्दी में अनूदित रूप में देखा जा सकता है। प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में 'विज्ञापन की भाषा हिन्दी' ने अपना एक नया मुहावरा पैदा किया है, अपना एक नया तेवर प्रकाशित किया है। इस आधार पर यह तो स्पष्ट ही है कि 'भूमण्डलीकरण' अथवा 'वैश्वीकरण' की आधुनिक अवधारणा को सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी ने साकार बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जिसके पास उम्मीद है, उसके पास सब कुछ है।

सूचना प्रौद्योगिकी से हिन्दी को जोड़ने पर कुछ अत्यंत सुखद परिणाम स्पष्टतः दिखाई देते हैं। एक तो जन–मानस से जुड़ी भाषा हिन्दी 'एलीट क्लास' से भी जुड़ गई; कामकाज, खेल–जगत, शेयर–मार्किट, वित्त–मार्किट, वित्त–वाणिज्य, आंकड़े, कार्टून से जुड़ती चली गई। आई.टी. (Information Technology) की कार्य पद्धति में हिन्दी के जुड़ने के कार्य में तेजी आ गई, गुणवत्ता आ गई, आत्म–प्रसार के अवसर खुल गए, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का भाव पैदा हो गया और इन सबसे बढ़कर कुएं से निकल कर भाषा अथाह अपार समुद्र में विस्तार पाने लगी।

अतः भारतीय समाज के प्रत्येक नागरिक को विश्व–समाज से जोड़ने के मिशन में हिन्दी सूचना–प्रौद्योगिकी का सशक्त माध्यम है। 'इंटरनेट' के लिए जिस एक विश्व–भाषा को विकसित किए जाने का विचार है, उसमें हिन्दी भी अवश्य शामिल होगी। इससे कम से कम समय में पूरा राष्ट्र सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से अद्यतन सूचनाएं प्राप्त कर सकेगा। जन–साधारण के लाभ के अवसर बढ़ेंगे और धन का व्यय कम होगा। हम हिन्दी के माध्यम से अपनी संस्कृति, अपने विचार, अपनी प्रतिभा और अपनी उपलब्धियों से विश्व मानव को तत्काल अभिभूत कर सकेंगे। शिक्षा, ज्ञान, शोध तथा विचार–विनिमय का विस्तार हो सकेगा।

आज आवश्यकता है कि हम एक नए, पूर्णतः विकसित तथा वैश्विक दौड़ में अद्यतन सिद्ध होने वाले भारत का निर्माण करें। इसके लिए हमें कुछ भाषाई परिवर्तनों को बदलते मुहावरों को स्वीकारना होगा। पहले निर्माण, फिर परिष्कार के सिद्धांत को अपनाते हुए हमें इस प्रौद्योगिकी की तमाम चुनौतियों का सामना करना होगा। हिन्दी का वर्चस्व तभी दिनों–दिन बढ़ेगा। तोते, कौए, भौंरे, कबूतर या बाज़ के माध्यम से संप्रेषण तथा वैचारिक आदान–प्रदान का युग अब प्रासंगिक नहीं। धीरे–धीरे समाज में, व्यवस्था में तथा मानव समुदाय में जो परिवर्तन हो रहे हैं उन्हें हमें सहर्ष स्वीकारना चाहिए। अतः यह तकनीक का युग है। सूचना की भी एक खास तकनीक और उस तकनीक के लिए भी एक सशक्त भाषा चाहिए होती है। हिन्दी इस दृष्टि से हर तरह से समर्थ, सक्षम एवं वर्चस्वी भाषा है। संसार की किसी भी दुःसह, कठिन, विस्तृत, कोडपरक अथवा अन्य कैसी भी अवधारणा को आत्मसात् करने की शक्ति हिन्दी के पास है।

अब ई–मेल, टेलनेट, ई–कॉमर्स, ई–गवर्नेंस, ई–विजिलेंस, ई–एजुकेशन, टेलीमेडिसन, साइबर कैफे या साइबर ढाबे तथा ई–कंटेंट का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी के सहस्र हाथ हैं। इन सभी हाथों की शक्ति अब हिन्दी बन रही है। अब शब्दकोश से विश्वकोश की ओर अग्रसर होने का युग है। सूचना–तंत्र की जादुई शक्ति अब विश्व भर में बैठे मानस को तुरंत शक्तिमान बना रही है। इस शक्ति स्रोत में हिन्दी की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। भाषा का आधुनिकीकरण हो रहा है। नए पारिभाषिक शब्द विदेशी अवधारणाओं को आत्मसात कर हमारे ज्ञान–लोक को आलोकित कर रहे हैं। सभी प्रेस सूचना कार्यालय, फिल्म डिवीज़न, विज्ञापन तथा दृश्य प्रचार विभाग, प्रकाशन विभाग, संगीत तथा नाटक अकादमियां, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, फोटो डिवीज़न, संदर्भ तथा अनुसंधान निदेशालय, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संग्रहालय, रजिस्ट्रार न्यूज पेपर्स ऑफ इंडिया, फिल्म संबंधी केन्द्रीय बोर्ड तथा फिल्म उत्पादों के निदेशालय आदि अनेक संस्थान सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी भाषा का अनुप्रयोग कर रहे हैं। डबिंग–टाइटलिंग, कैपशनिंग आदि के क्षेत्र में भी अब हिन्दी अनुवाद होने लगा है। मूल बात है दिशा का प्रशस्त होना। पानी के बहने की राह बनाने में देर लगती है। एक बार छिद्र मिल जाए, फिर तो धीरे–धीरे राह बढ़ती–खुलती जाती है। हिन्दी ने भी अभेद दुर्ग निशाने पर रख दिए हैं। अब वह दिन दूर नहीं लगता, जब हिन्दी विश्व की भाषा बन चहुंमुखी विकास करेगी। पूरे परिदृश्य को देखें तो यह स्पष्टतः प्रकट है कि हिन्दी का वर्चस्व बाज़ारवाद, उपभोक्तावाद, व्यवसायवाद तथा रोज़गारवाद की अन्य अनेकानेक संभावनाओं के साथ–साथ बढ़ रहा है। हमें फिलहाल हिन्दी में अंग्रेज़ी या हिन्दी में तकनीकी स्पर्श, दुरुहता–विकटता तथा असहजता, शुष्कता जैसी बातें छोड़कर इस भागीरथ–यत्न को निरंतर गति प्रदान करनी होगी। यही हिन्दी अंततः अन्य भारतीय भाषाओं के भी समस्त बैरियर तोड़ते हुए उन्हें विश्व–मंच पर ले जाने का कार्य करेगी।

धैर्य कड़वा है लेकिन इसका फल मीठा है।

शब्द–शक्तियाँ एवं अनुवाद में उनकी भूमिका

टी. रामराज रेड्डी*

शब्दों द्वारा हृदयगत भावों तथा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है। किसी भी भाषा की लघुतम, सार्थक एवं स्वतंत्र इकाई को शब्द कहते है। शब्दों में बड़ी ताकत होती है। शब्द को वेदों में ब्रह्म तक कहा गया है। भाषा शब्दों के बिना नहीं हो सकती है। अतः शब्दों के बिना समाज की कल्पना नहीं हो सकती है। शब्द का अर्थ बोध कराने वाली शक्ति शब्द–शक्ति कहलाती है ।

शब्द शक्ति के प्रकारः

हिंदी व्याकरण में शब्द–शक्तियाँ तीन प्रकार की होती है–

1. अभिधा शब्द–शक्ति।
2. लक्षणा शब्द–शक्ति।
3. व्यंजना शब्द–शक्ति।

1. अभिधा शब्द शक्ति :- जिस शक्ति द्वारा किसी शब्द का सरल, स्वाभाविक, प्रचलित अथवा साक्षात् संकेतित अर्थ का बोध हो उसे अभिधा शब्द–शक्ति कहते है। अभिधा को शब्द की प्रथम शक्ति भी कहा जाता है। अभिधा में कहा गया वाक्य का शब्दिक अर्थ सभी पाठकों अथवा श्रोताओं के लिए समान होता है। सूचना प्रधान साहित्य की भाषा अभिधात्मक होती है।

उदाहरण– सूर्य पूर्व से उदय होता है और पश्चिम में अस्त होता है।

इस वाक्य का साधारण अर्थ निकाला जाएगा कि सूर्य प्रतिदिन पूर्व दिशा से निकलता है और पश्चिम दिशा में डूबता है।

2. लक्षणा शब्द-शक्ति :- वे वाक्य जिनका साधारण शाब्दिक अर्थ और भावार्थ में समानता न हो अर्थात् जिस शब्द शक्ति द्वारा किसी शब्द का साधारण अर्थ से भिन्न लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाए उसे लक्षणा शब्द–शक्ति कहते है। सृजनात्मक साहित्य एवं सभी मुहावरे एवं लोकोक्तियों में लक्षणा शब्द–शक्ति के सहारे अर्थ ग्रहण किया जाता है।

उदाहरण– ''इतना कुछ होने के बावजूद भी उसने कलेजे पर पत्थर रख लिया।'' इस वाक्य का साधारण अर्थ होगा कि उसने कलेजे पर पत्थर को लाकर रख लिया। परन्तु कलेजे पर पत्थर रखने का लक्ष्यार्थ होगा– दुख में भी धीरज रखना।

इसी प्रकार– ''आजकल औरतें अपने पतियों को उँगलियों पर नचाती है।'' उँगली पर नचाना का लक्ष्यार्थ होगा–वश में करना।

अंधे की लाठी, अधजल गगरी छलकत जाए, आ बैल मुझे मार आदि का भावार्थ क्रमशः एकमात्र सहारा होना, कम गुण वाला व्यक्ति दिखावा बहुत ज्यादा करता है, जान–बूझ कर मुसीबत मोल लेना आदि होगा।

3. व्यंजना शब्द-शक्ति :- व्यंजना – 'वि+अंजना' शब्दों से मिलकर बना है। यहाँ 'वि' का अर्थ विशेष से है और अंजना का अर्थ अंजन या काजल है। अर्थात् व्यंजना का अर्थ विशेष प्रकार का अंजन या काजल से है। काजल लगाने से आँखों की ज्योति बढ़ती है, विशेष प्रकार के अंजन लगाने से परोक्ष वस्तु भी दिखने लगती है। इसी प्रकार व्यंजना शब्द–शक्ति से अकथित शब्द–शक्ति स्पष्ट होती है। जब अभिधा एवं लक्षणा अर्थ व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है तब वहाँ व्यंजना शब्द–शक्ति प्रयुक्त होती है।

उदाहरण– "सूरज सिर पर आ गया है" इसका अभिधा में अर्थ होगा– सूर्य ठीक सिर के ऊपर आ गया है, तथा लक्षणा में इसका अर्थ होगा– दोपहर हो गई है।

परन्तु प्रसंग विशेष के अनुसार इस वाक्य के अनंत व्यंजनार्थ हो सकते है। उदाहरण के लिए एक फैक्ट्री में कार्य कर रहे विभिन्न व्यक्तियों से इसे जोड़ कर देखेंगे तो हम पाएंगे कि जो व्यक्ति "ए" शिफ्ट में रहेगा इसका अर्थ लेगा कि अब उसकी छट्टी होने वाली है, "बी" शिफ्ट वाला व्यक्ति इसका अर्थ लेगा कि उसका काम पर जाने का समय हो गया है, "जी" शिफ्ट के लोग

* हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि

वक्त पर थोड़ी सी कोशिश, आगे की बहुत-सी परेशानियों से बचाती है।

इसका अर्थ लेंगे कि दोपहर के भोजन का समय हो गया अब खाने की तैयारी करनी चाहिए। इसी वाक्य को पिता के कहने पर विद्यार्थी पुत्र यह अर्थ लेगा कि बहुत देर हो गई जल्द से जल्द उठ कर स्कूल या कॉलेज के लिए तैयार होना है, गृहणी इसका अर्थ अपनी सास को दोपहर का भोजन खिलाने के वक्त होने से जोड़ कर देखेगी। अर्थात् इसका भावार्थ प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग–अलग होगा।

अनुवाद में शब्द शक्तियों की भूमिका :

एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है और यह बात शब्दों द्वारा ही कही जाती है। अर्थात् अनुवाद के संदर्भ में शब्द–शक्तियों की भूमिका स्वयंसिद्ध है। अनुवाद करने के दौरान एक अनुवादक को दो प्रकार के साहित्यों का अनुवाद करना पड़ता है। एक सृजनात्मक साहित्य एवं दूसरा ज्ञानात्मक साहित्य।

1. **सृजनात्मक साहित्यः–** सृजनात्मक साहित्य के अंतर्गत कहानी, कविता, नाटक, एकांकी, उपन्यास, निबंध आदि साहित्यिक विधाएँ आती है। सृजनात्मक साहित्य के मुख्य आधार तत्व हैं अनुभूति, भाव, कल्पना आदि। सृजनात्मक साहित्य में लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों की प्रमुखता होती है। सृजनात्मक साहित्य में मुहावरे एवं लोकोक्तियों का भरपूर प्रयोग होता है और उनका अर्थ निर्धारण भी लक्षणा और व्यंजना से ही किया जाता है। इस प्रकार के साहित्य में मूल लेखक के देशकाल, संस्कृति, विचार, भाव, अनुभूति आदि तत्व जुड़े रहते है। सृजनात्मक साहित्य में भाषा के सौंदर्य और शैली का विशेष महत्व है। यह मूलतः आनंद प्रधान होता है।

2. **ज्ञानात्मक साहित्य :–** ज्ञानात्मक साहित्य के अंतर्गत गणित, रसायन शास्त्र, भौतिक विज्ञान, जीव–विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल, जनसंचार, राजनीति विज्ञान, प्रशासन, विधि, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, पर्यटन, बैंकिंग आदि विषयों को शामिल किया जा सकता है। इस प्रकार के साहित्य मूलतः ज्ञान एवं सूचना प्रधान होते हैं। इस प्रकार के साहित्य में अभिधा शब्द–शक्ति का प्रयोग होता है। इस प्रकार के साहित्य का उद्देश्य होता है– पढ़ने वाले ठीक वही समझे जो लिखा गया हो।

एक अनुवादक को अपने अनुवाद कार्य के दौरान इन दोनों ही प्रकार के साहित्यों को अनुवाद करना पड़ सकता है। एक कुशल अनुवादक बनने के लिए शब्द शक्ति का ज्ञान अनिवार्य है। अभिधामूलक वाक्यों का अनुवाद करते समय अनुवादक शब्दों का कोशगत अर्थ का प्रयोग करता है। जब अनुवादक प्रशासनिक हिंदी का अनुवाद करता है तो हमेशा ध्यान रखा जाए कि उसमें हमेशा अभिधा शब्द शक्ति का ही प्रयोग हो। प्रशासनिक हिंदी में लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग नितांत वर्जनीय है। कार्यालय में प्रयुक्त प्रशासनिक हिंदी में यदि अभिधा के स्थान पर लक्षणा या व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग किया जाए तो अर्थ की स्पष्टता खत्म होने की खतरा रहता है।

दूसरी ओर सृजनात्मक साहित्य अभिधा से जितना दूर होगा उतना ही सफल माना जाता है। किसी बात को घुमा–फिराकर कहना, एक ही अभिव्यक्ति के दो या अधिक अर्थ निकलना सृजनात्मक साहित्य की विशेषता होती है। इस प्रकार के साहित्य में लेखक पात्र के अनुसार भाषा का प्रयोग करता है। आँचलिक उपन्यासों में आँचलिक भाषा या बोली का प्रयोग होता है। अनुवादक को इस प्रकार के साहित्य को अनुवाद करते समय इन तत्वों को सुरक्षित रखना पड़ता है। अर्थात् शब्द–शक्तियों के ज्ञान के बिना सृजनात्मक अनुवाद करना असंभव ही माना जा सकता है। लक्षणा और व्यंजना प्रधान होने के कारण इस प्रकार के अनुवाद मात्र अनुवाद न होकर पुनःसृजन होते हैं।

वास्तव में शब्द–शक्तियों का बोध तथा उनकी परख का सामर्थ्य अनुवादक को जरूर होने चाहिए। भाषा में शब्द–शक्तियों के प्रयोग की सही परख न होने पर अनुवाद में अर्थ का अनर्थ होने की संभावनाएं रहती है।

जैसे "घर का चिराग" का अनुवाद "Hope of the Family" न करके "Lamp of the family" करें, "Cutting Edge level" का अनुवाद "आधुनिकतम अवस्था" न करके किनारे काटने की अवस्था किया जाए या "Grape vine" का अनुवाद "अफवाह" न करके "अंगूर का शराब" कर दिया जाए और "To miss the bus" का अनुवाद "अवसर गँवा देना" न करके "बस का छूट जाना" या फिर "Stick and carrot Method" का अनुवाद "ऐसा तरीका जिसमें दंड और पुरस्कार दोनों हो" न करके "डंडा और गाजर का तरीका" के रूप में अनुवाद किया जाए तो अर्थ का अनर्थ ही होगा। मशीन या सॉफ्टवेयर द्वारा किये गए अनुवाद में इस प्रकार की गलतियाँ होने की संभावनाएं ज्यादा रहती हैं, क्योंकि अब तक ऐसे सॉफ्टवेयर का आविष्कार नहीं हुआ जिसे शब्द–शक्तियों की परख हो।

कठिनाइयां मनुष्य को जीतना सिखाती हैं, उतना कोई भी नहीं सिखा सकता।

संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिंदी की अनंत यात्रा

महिमानन्द भट्ट*

भाषा विचार–विनिमय का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। मनुष्य सम्प्रेषण के लिए सबसे अधिक जिस माध्यम का सहारा लेता है वह है भाषा। जो समाज जितना समृद्ध, शक्तिशाली और सभ्य होगा, उसकी भाषा भी उतनी ही सशक्त और सम्पन्न होगी। भाषा–विहीन समाज की परिकल्पना संभव नहीं है और न ही समाज–विहिन भाषा जीवित रह सकती है। भाषा का अर्थ है– बोलना अर्थात् भाषा वह है जिसे भावों एवं विचारों से सार्थक ध्वनियों द्वारा प्रकट किया जा सके। सार्थक शब्दों और वाक्यों की संरचना से लिखित रूप में भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त किया जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि भाषा के दो मुख्य रूप हैं– मौखिक भाषा– जो बोलकर प्रकट की जाती है और लिखित भाषा– जिसे ध्वनि चिह्नों के माध्यम से लिखकर प्रकट किया जाता है। अर्थात् वह साधन जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर या लिखकर अपने भावों या विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है, भाषा कहलाती है।

स्पष्टतः भाषा का उद्देश्य विचारों या भावों का आदान–प्रदान है। लिखित भाषा की यह विशेषता है कि इसके माध्यम से ज्ञान भंडार को सुरक्षित रखा जा सकता है। मौखिक भाषा की इकाई ध्वनि है तो लिखित भाषा की वर्ण है। समाज में शिक्षित तथा शिष्ट लोगों द्वारा प्रयुक्त व्याकरण सम्मत भाषा ''मानक भाषा'' कहलाती है। शिक्षा, समाचारपत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि में मानक भाषा का ही प्रयोग जाता है।

भाषा के घटक में ध्वनि, वर्ण, शब्द, पद और वाक्य आते हैं। मौखिक भाषा की मूल ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों को लिपि कहते हैं। हिंदी और संस्कृत की लिपि देवनागरी है। इसका विकास प्राचीन लिपि ब्राह्मी से हुआ है। अंग्रेजी भाषा की लिपि रोमन है। उर्दू की लिपि फारसी है। पंजाबी की लिपि गुरूमुखी है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, मराठी, नेपाली और कोंकणी भाषाएं भी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। हर भाषा की कुछ विशेषताएं होती हैं। जो भाषा को व्यवस्थित एवं शुद्ध बनाए रखने में सहायक होती हैं तथा जिसकी सहायता से हम किसी भाषा को शुद्ध लिखना, पढ़ना और बोलना सीख सकते हैं। व्याकरण भाषा के नियमों की जानकारी देता है और उसके रूप को शुद्ध एवं मानक बनाए रखता है। भाषा, बोली और उपभाषा की अपेक्षा अधिक शुद्ध और व्याकरण के नियमों पर खरी उतरने वाली होती है। इसका विशाल शब्द भंडार, व्याकरण और लिखित एवं मौखिक साहित्य होता है तथा पूर्णतः सक्षम एवं समर्थ होती है।

हिंदी भाषा का महत्व

हिंदी भाषा का संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में विशेष महत्व है। इसकी लिपि देवनागरी है जो वैज्ञानिक है। आज हिंदी में ज्ञान–विज्ञान, धर्म, राजनीति, चिकित्सा शास्त्र, विधिशास्त्र आदि अनेक विषयों की असंख्य पुस्तकें उपलब्ध हैं। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक समाचार–पत्र एवं मासिक पत्र–पत्रिकाएँ हिंदी में प्रकाशित हो रहे हैं। विश्व के अनेक देशों तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी के पठन–पाठन की व्यवस्था होने के कारण वहाँ पर हिंदी का प्रचलन है।

हिंदी भाषा का रूप

1. संपर्क भाषा– जो भाषा सांस्कृतिक और भाषिक स्तर पर देश को जोड़ने का काम करती है वह संपर्क भाषा कहलाती है अर्थात् संपर्क भाषा उसे कहते है जिसे राष्ट्र के एक कोने से दूसरे कोने तक के लोग समझ सकते है और जिसके माध्यम से राष्ट्र के किसी कोने में जाने पर वहां के लोगों से संपर्क किया जा सके। संपर्क भाषा के रूप में बोलचाल में हिंदी का प्रयोग भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में होता है। यह भाषा साहित्य के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा–माध्यम तथा तकनीकी कार्यों की भाषा के रूप में विकसित हो रही है। देश को जोड़ने के लिए तथा समुचित विकास के लिए एक संपर्क भाषा होना आवश्यक है और हिंदी इस भूमिका को निभा रही है।

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

हिंदी को आगे बढ़ाना है, उन्नति की राह पर ले जाना है।

2. राष्ट्रभाषा : किसी देश के अधिकांश लोगों द्वारा समझी और प्रयोग की जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा होती है इसका सम्मान देश को गरिमा और गौरव प्रदान करता है तथा यह देश की भावात्मक एकता को आधार प्रदान करती है। भारतेंदु हरिश्चन्द ने राष्ट्रीय भावना से आन्दोलित होकर लिखा है – **निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।** राष्ट्रभाषा सदैव लोकभाषा होती है। यह भाषा सर्वसाधारण व्यापिनी होती है एवं राजभाषा शासन तक सीमित होती है। यह भाषा देश के विभिन्न बोलियों, उपभाषाओं आदि से समृद्ध होती है इसमें लोक प्रयोग के अनुसार नई शब्दावली जुड़ती रहती है परंतु राजभाषा का शब्द भंडार सुनिश्चित प्रयोजनमूलक प्रयुक्तियों तक सीमित रहता है। हिंदी के विविध रूप राष्ट्रभाषा के आधार स्वरूप है। इस भाषा की विविधता में एकता का मूल मंत्र होता है। यह भाषा देश की भावनात्मक एकता को आधार प्रदान करती है। अतः राष्ट्रभाषा से तात्पर्य किसी राष्ट्र में अधिकाधिक प्रयोग में अर्थात् बोलचाल में प्रयुक्त भाषा से है जो कि उस राष्ट्र की संस्कृति, एकता एवं अखंडता का परिचय देती है अर्थात किसी भी राष्ट्र की सबसे ज्यादा बोली तथा समझी जाने वाली भाषा ही वहां की राष्ट्रभाषा होती है।

गांधीजी ने राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की पहचान की और उसे स्वतंत्रता आन्दोलन का सशक्त माध्यम बनाया। इसी कारण हिंदी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बन सकी। हिंदी भाषा अपनी सरलता, समृद्धि और व्यापकता के कारण राष्ट्र की एकता और अखंडता का सुदृढ़ आधार प्रदान करती है। यह भाषा स्वतंत्र राष्ट्र की आत्मा की आवाज है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के भी राष्ट्रभाषा की जरूरत होती है क्योंकि भाषा के माध्यम से ही संस्कृति सुरक्षित रखी जा सकती है।

3. राजभाषा– प्रशासन की भाषा राजभाषा कहलाती है। राजभाषा का सामान्य अर्थ है– राजकाज चलाने की भाषा अर्थात् भाषा का वह रूप जिसके द्वारा राजकीय कार्य चलाने में सुविधा हो। केन्द्र की राजभाषा को संघ भाषा भी कहा जाता है। प्रशासन तथा न्याय की भाषा होने की कारण सरकारी दृष्टि से राजभाषा का बहुत महत्व होता है। इस भाषा का प्रयोग प्रमुख रूप से चार क्षेत्रों में किया जाता है– शासन, विधान, न्यायपालिका एवं विधानपालिका। किसी राष्ट्र के समस्त सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा को ''राजभाषा'' कहते हैं। 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है तथा अनुच्छेद 351 में हिंदी के प्रसार और विकास के संबंध में निर्देश दिए गए हैं। राजभाषा संबंधी प्रमुख प्रावधानों को चार वर्गों में बाँटा गया है। संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा (भाग 5, अनुच्छेद 120), विधानमंडल में प्रयुक्त होने वाली भाषा (भाग 6, अनुच्छेद 210), संघ की राजभाषा (भाग 17, अनुच्छेद 343), विधि–निर्माण एवं न्यायालयों में प्रयुक्त होने वाली भाषा (भाग 17, अनुच्छेद 348)। हिंदी में राजभाषा शब्द 'आफिशियल लैंग्वेज' के पर्याय के रूप में प्रयोग हो रहा है। यह पारिभाषिक शब्द है जिसका सीधा अर्थ है– सरकार के कामकाज के लिए प्रयुक्त भाषा। अतः राजभाषा से तात्पर्य शासन में उपयोग होने वाली भाषा से है।

4. अंतर्राष्ट्रीय भाषा– हिंदी आज अपना अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप स्थापित कर चुकी है। विश्व के अनेक देशों , फिजी, मारीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम, गुयाना, कनाडा, इंग्लैंड, नेपाल आदि देशों में हिंदी बोली जाती है। इतना ही नहीं इंडोनेशिया, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और खाड़ी देशों में हिंदी बहुत लोकप्रिय है। मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हिंदी को स्थान दे रहे हैं, भारतीय फिल्में और टीवी चैनलों के कार्यक्रम भी विश्व के कई देशों में चाव से देखे जाते हैं। विश्व हिंदी सम्मेलनों से शक्ति प्राप्त कर हिंदी आज विश्व भाषा और संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने की और अग्रसर है। हिंदी के प्रचार–प्रसार में विश्व हिंदी सम्मेलनों का भी विशेष योगदान है। अभी तक 11 विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं जो हिंदी के लिए एक नई ऊर्जा का संचार कर रही है। हाल ही के आँकड़ों के अनुसार देश में 77 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते और समझते हैं तथा विश्व के 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है तथा 05 में से एक व्यक्ति इंटरनेट हिंदी में चलाता है।

5. प्रयोजनमूलक हिंदी:– यह अंग्रेजी शब्द ''फंक्शनल हिंदी'' का पर्याय है। जिसका सामान्य अर्थ है– ऐसी

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भाषा है हिंदी।

विशेष हिंदी जिसका उपयोग किसी विशेष प्रयोजन के लिए किया जाए। कुछ भाषाविदों ने प्रयोजनमूलक हिंदी को व्यावहारिक हिंदी का नाम दिया है। कार्यालयों, बैंकों विभिन्न प्रबंधन संस्थानों, विधि, लोकसंचार, कम्प्यूटर, इंजीनियरी आदि कार्य क्षेत्रों में विशिष्ट प्रयोजन के लिए प्रयुक्त हिंदी प्रयोजनमूलक हिंदी है। इस हिंदी का प्रयोग उस कार्यविशेष से संबंधित व्यक्ति करते हैं तथा इसकी अपनी शब्दावली होती है। ऐसी हिंदी प्रायः तकनीकी होती है। प्रयोजनमूलक हिंदी को संचार माध्यम, कम्प्यूटर, संबंधी–कार्य और कार्यालयीन कार्य में वर्गीकृत किया जा सकता है।

वैश्वीकरण ने हिंदी के सामने नए द्वार खोले हैं। आर्थिक उदारीकरण की स्थिति में हिंदी संपर्क भाषा की भूमिका निभा रही है। निष्कर्षतः हिंदी एक सरल एवं व्यावहारिक भाषा है। इस भाषा में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। अतः यह वैज्ञानिक भाषा है, इसके पास विपुल शब्द भंडार है, संस्कृत के साथ–साथ इसने अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी, पुर्तगाली फ्रांसीसी आदि अन्य भाषाओं के हजारों शब्दों को ग्रहण किया है। हिंदी–हिंदुस्तान के एक विशाल भूभाग की भाषा है। भारत सरकार ने विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गुजरात के वर्धा में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी

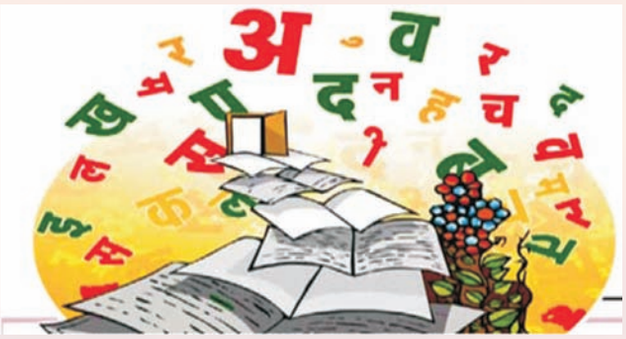

विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

हिंदी अब नई प्रौद्योगिक के रथ पर सवार होकर विश्वव्यापी बन रही है। आज हिंदी बाजार की भाषा हो गई है। वैश्वीकरण के दौर में हिंदी सबसे महत्वपूर्ण भाषा के तौर पर उभरी है। अतः हिंदी की व्यापकता को देखते हुए यह दुनिया के विशालतम भू–भाग में अपना स्थान स्थापित करने की ओर निरन्तर अग्रसर है। यह भाषा अपने सामर्थ्य के आधार पर गतिमान है और विश्व क्षितिज पर अपना परचम फैलाने के लिए सफल हो रही है। आज हिंदी की महानता को जानने–पहचानने और आत्मसात करने की आवश्यकता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि अपनी व्यापकता के कारण इस भाषा की अनंत यात्रा निर्बाध गति से आगे बढ़ रही है।

हिंदी

निर्भय नारायण गुप्ता*

भारत मां की शान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये,
भाषाओं की जान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये।

एक सूत्र में बाँधा है, इसने सारी भाषाओं को,
इक ऐसा परिधान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये।

जो हम लिखते वही बोलते, जो बोलें वो लिखते हैं,
वैज्ञानिक प्रतिमान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये।

प्रचुर विशद साहित्य संपदा, ज्ञान अथाह अकूत लिए,
जन–जन का अभिमान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये।

सत्यम शिवम सुंदरम की, मधुरिम सुगंध से ओतप्रोत,
ज्ञान, मान–सम्मान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये।

सूर, कबीरा, तुलसी और रसखान, जायसी को भायी,
साहित्यिक गुणगान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये।
अभी राजभाषा के पद पर, जल्दी बने राष्ट्रभाषा,
हर दिल का अरमान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये।

भोजपुरी, अवधी, बुंदेली और मराठी, गुजराती,
ब्रजभाषा का गान है हिंदी, हिंदी को अपनाइये।

बहुत सशक्त व्याकरण इसका, निर्भय सब स्वीकार करें,
अनुपम भाषा ज्ञान है हिंदी हिंदी को अपनाइये।

भारतीय भाषाओं को जो एक रखेगी वो हिंदी है,
भारतीय जन–मन की जिससे शान बढ़ेगी वो हिंदी है।

अलग–अलग भाषाओं के, फूलों की माला का धागा,
भारत माँ का इस जग में, अभिमान बनेगी यह हिंदी है।।

* पूर्व उप महाप्रबन्धक, 5/49 विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010

हिंदी देश की आन-बान और शान है।

अभिसार

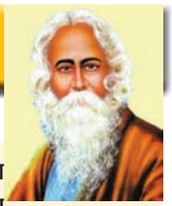

(बोधिसत्वा–वदान कल्प–लता)

यह कविता रविन्द्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है जिसको उन्होंने नाम दिया– अभिसार। जिसका अर्थ होता है प्रियतम से मिलने जाना या प्रियतम को अपने पास बुलाना। इस कविता में एक नगरवधू द्वारा दिए गए प्रस्ताव को भिक्षुक द्वारा नकार दिया जाता है, यह कहकर कि देवी जब वास्तव में तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी तो तुम मुझे अपने साथ पाओगी। एक घर में रहने से रिश्ते नहीं बनते, बल्कि दूर रहकर भी एक–दूसरे के काम आने से रिश्तों को मजबूती मिलती है। मैं समझता हूँ कि इसे पढ़ने के बाद आप भी इस रचना की सराहना किए बिना नहीं रह पाएंगे। –अरविन्द चौधरी

उपगुप्त– संन्यासी
एक बार मथुरापुरी के प्राचीर–तले सोए हुए थे।
हवा से नगर के दीप बुझ गए हैं।
पुरी के भवनों के द्वार बन्दक हैं।
निशीथ–नक्षत्र श्रावण–गगन के सघन मेघों में लुप्त हैं।

सहसा किसका नूपुर–शिंजित पद छाती पर बज उठा।
श्रेष्ठ संन्यासी चौंककर जाग उठे,
पलकों से स्वप्न की जड़ता भाग गई।
दीपक का प्रखर आलोक क्षमा–सुन्दर आँखों पर पड़ा।

यौवन–मद–मत्तात नगर–नर्तकी अभिसार को जा रही है।
अंग पर नीले रंग का आँचल है,
रुन–झुन स्वर में उसके आभरण बजते हैं
संन्यासी के शरीर पर पाँव पड़ते ही वासवदत्ता रुक गई

दीपक लेकर उसने उनकी नवीन, गौर कान्ति को देखा,
सौम्य, सस्मित, तरुण मुख को देखा,
करुणा की किरण से प्रफुल्लित नयनों को देखा।
उनके शुभ्र ललाट पर इन्दु–सी स्निग्धा शान्ति चमक रही है।

आँखों में लज्जा भरकर रमणी ने ललित कण्ठ से कहा–
"हे किशोर! हे कुमार! मुझे क्षमा करो,
यदि मेरे घर चलो तो मुझ पर कृपा होगी,
यह धरणी कठोर है, यह तुम्हारी शय्या के योग्य नहीं।"

करुण स्वर में संन्यासी कहता है, "अयि लावण्यमयी!
अभी तो मेरा समय नहीं हुआ,
धनी! जहाँ जा रही हो, जाओ।
जब समय आएगा, मैं स्वयं तुम्हारे कुंज में आ जाऊँगा।"

सहसा झंझा ने तड़ित–शिखा में विशाल मुँह खोला,
वायु में प्रलय–शंख बज उठा,
रमणी भय से काँप उठी,
आकाश में बिजली घोर परिहास में अट्टहास कर उठी।

वर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ, चैत की सन्याँुह आ गई है।
वायु आकुल–व्याकुल हो उठी है
पथ–वृक्षों की शाखाओं में कलियाँ लग गई हैं,
राज–वाटिका में बकुल, पाटल और रजनीगंधा फूल रही हैं।

बहुत दूर से वायु में बाँसुरी की मदिर–मंद्र ध्वनि आ रही है।
पुरी जनहीन है, अभी पुरवासी
पुष्पोत्सव के लिए मधुवन गए हैं।
नगरी को निर्जन देख पूर्णेन्दु नीरवता में हँस रहा है।

चाँदनी में निर्जन मार्ग पर संन्यासी अकेले जा रहे हैं।
तरु–वाथिका में बैठा कोकिल
सिर के ऊपर बार–बार कूक उठता है,
इतने दिनों बाद क्या आज उनकी अभिसार–रात्रि आई है?

नगर छोड़कर दण्डी बाहर प्राचीर के पास गए।
परिखा पार कर वे खड़े हो गए,
आम्रवन की छाया के अन्धकार में,
एक ओर उनके चरणों के पास वह कौन रमणी पड़ी है।

निर्दय रोग के दानों से उसकी देह भर गई है।
रोग की कालिमा से उसका शरीर काला है,
उसके विषाक्ता संग से बचने के लिए
लोगों ने उसे उठाकर परिखा के पार फेंक दिया है।

सन्यासी ने बैठकर उसके अवश मस्तक को अपनी गोद में लिया,
उसके सूखे अधरों में जल ढाला,
मस्तक के ऊपर मन्त्र का पाठ किया,
और अपने हाथों से शरीर पर शीतल चन्दन का लेप चढ़ा दिया।

मंजरी झर रही है, कोकिल कूकते हैं,
यामिनी ज्योत्स्ना से प्रमत्त है।
"तुम कौन आ गए हे दयामय"
नारी ने पूछा। संन्यासी कहता है,
"आज रात समय हो गया, वासवदत्ते, यह मैं आया हूँ।"

अभिसार (कथा ओ काहिनी)

निगम के क्षेत्रीय कार्यालय – एक परिचय

इस पत्रिका के पाठकों को क्षेत्रीय कार्यालयों की कार्यविधि एवं इनके अधीन वेअरहाउसों तथा अन्य कार्यकलापों की जानकारी देने के लिए संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया जाता है। पिछले अंकों में क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद, लखनऊ, भोपाल, हैदराबाद, जयपुर, गुवाहाटी, दिल्ली, भुवनेश्वर, रायपुर, कोलकाता, पंचकुला, कोच्चि, बेंगलुरु एवं चंडीगढ़, का संक्षिप्त परिचय दिया गया था। इस अंक में जानिये हमारे क्षेत्रीय कार्यालय– पटना और चेन्नई के बारे में।

क्षेत्रीय कार्यालय–पटना

केन्द्रीय भंडारण निगम का क्षेत्रीय कार्यालय, पटना विशाल क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकता से अपनी कार्यक्षमता के बदौलत अलग होकर दिनांक 01.01.1979 को अस्तित्व में आया। पटना क्षेत्रीय कार्यालय का कार्य क्षेत्र बिहार एवं झारखंड राज्य के बड़े भौगोलिक क्षेत्र मे फैला हुआ है। क्षेत्रीय कार्यालय, पटना द्वारा बिहार एवं झारखण्ड राज्यों में दिनांक 31.07.2018 तक कुल 2,11,163 मी.टन क्षमता वाले 20 वेअरहाउसों का संचालन 83 कर्मिको के माध्यम से किया जा रहा है। बिहार राज्य में 1,61,339 मैट्रिक टन के क्षमता वाले 17 वेअरहाउस तथा झारखंड राज्य में 49,824 मैट्रिक टन क्षमता वाले 03 वेअरहाउस कार्यरत हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय पटना के अंतर्गत उपलब्ध भंडारण क्षमता के 64 प्रतिशत का उपयोग भारतीय खाद्य निगम द्वारा किया जाता है जो बिहार एवं झारखंड राज्य के नागरिकों को अनाज जनवितरण प्रणाली के माध्यम से उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभाता है। नीचे दर्शायी गयी क्षमता में 40,000 मी. टन की क्षमता के पी.ई.जी. गोदाम भी संलग्न है। इसके अतिरिक्त शेष भंडारण क्षमता का उपयोग राज्य एवं केन्द्रीय सरकारी एजेन्सी, सहकारी संस्था, निगमित संस्था एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनी द्वारा किया जाता है।

बिहार राज्य

जिला	केन्द्रीय भंडारगृह	क्षमता (मैट्रिक टन)
दरभंगा	दरभंगा	6,220
कटिहार	कटिहार	8,000
किशनगंज	किशनगंज	12,000
मुंगेर	मुंगेर	17,787
पटना	1. फतुहा	6,293
	2. मोकामा	5,000
पटना	3. मुसल्लापुर	7,487
	4. पटना सिटी	6,500
कैमुर	मोहनिया	6,743
रोहतास	नोखा	6,220
समस्तीपुर	समस्तीपुर	17,650
मधेपुरा	मधेपुरा	4,211
सिवान	सिवान	16548
सुपौल	सुपौल	6,280
वैशाली	गोरौल	4,400
पश्चिमी चम्पारण	बेतिया	20,000
खगड़ियाँ	खगड़ियाँ	10,000
	कुल	**1,61339**

झारखंड राज्य

क्रम संख्या	जिला	केन्द्रीय भंडारगृह	क्षमता (मैट्रिक टन)
01	हजारीबाग	हजारीबाग	15,300
02	सरायकेला	जमशेदपुर	6,634
03	राँची	राँची	27,890
		कुल	**49824**

वित्तीय निष्पादन

(रूपया लाख में)

पटना क्षेत्र	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
आय	4964.89	5708.25	6159.27	1070.31
खर्च	4789.94	5202.40	5998.78	906.89
लाभ / हानि	+174.95	+505.85	160.49	163.42

जहां सच्चाई होती है, वहीं सरलता रहती है।

पटना क्षेत्र में कर्मियों की संख्या

	स्वीकृत संख्या	स्थिति में दि0 31.07.2018
समूह – क	06	04
समूह – ख	32	27
समूह – ग	86	43
समूह – घ	43	09
कुल	**167**	**83**

किसान विस्तार सेवा योजना

निगम नें 1978–79 के दौरान किसान विस्तार सेवा योजना को लागू किया था जिसका मुख्य उद्देश्य किसानों को वैज्ञानिक भंडारण के संबंध में शिक्षित करना, सार्वजनिक भंडारगृह का उपयोग करने एवं भंडारण रसीद को बैंक में बंधक रखकर कर्ज प्राप्त करने में किसानों की सहायता करना था। केन्द्रीय भंडारण निगम किसान विस्तार सेवा योजना के माध्यम से बिहार/झारखंड राज्य में प्रत्येक वर्ष 4000 किसानों को कृषि पैदावार के पहले की तकनीकी एवं वेअरहाउसिंग लाभ के विषय में जागरुक करती है। इसी प्रकार केन्द्रीय भण्डारण निगम ने किसानों को डब्ल्यू.डी.आर.ए. के विषय में जागरूक करने का अभियान छेड़ा है जिसका मुख्य उद्देश्य किसानों को लाभ पहुचाना है। केन्द्रीय भण्डारण निगम द्वारा सामाजिक दायित्व योजना के माध्यम से पैदावार के बाद होने वाली हानि के विषय में जानकारी देने हेतु प्रोग्राम भी चलाया जाता है। तकनीकी कर्मी किसान विस्तार सेवा योजना के तहत बिहार एवं झारखंड राज्यों में स्थित वेअरहाउसों के समीप वाले गाँव का दौरा कर उन्हें फसलोपरान्त की प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षण देते हैं ताकि फसल की पैदावार होने के बाद होने वाली हानि को रोका जा सके।

	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19 31.07.2018
दौरा किये गये गाँव की संख्या	176	208	169	38
प्रशिक्षित किये गये किसान की संख्या	4011	4103	4046	873

कीटनाशक योजना

इस योजना के तहत केन्द्रीय भंडारण निगम विभिन्न केन्द्रीय संगठन/लोक उपक्रम एवं निजी संगठन को पर्यावरण हितैषी तरीके से कीट नियंत्रण हेतु वैज्ञानिक साधन मुहैया कराता है। कीटनाशक योजना एक आधारभूत गतिविधि है जिसमें बहुत सारे क्षेत्र सम्मलित है। कीटनाशक योजना के अधीन बहुत अधिक संभावना है– जैसे की सामान्य जन्तुबाधा, कृन्तकनाशी नियंत्रण एवं दीमक रोधी उपचार की, रेलवे/एयरलाइन्स/बीमा कम्पनी एवं सरकारी कार्यालय हेतु अपार संभावना है। केन्द्रीय भंडारण निगम ने वार्षिक आधार/आकस्मिक आधार पर निम्नलिखित संस्थानों में तत्काल कीटनाशक सेवा मुहैया कराने का ठेका प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। विस्तृत विवरण इस प्रकार हैः–

हुडको, राँची, एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इण्डिया (जयप्रकाश नारायण अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा), नाबार्ड, पासपोर्ट ऑफिस, यूको बैंक, ब्यूरो ऑफ इन्डियन स्टेंडर्स, महावीर कैंसर संस्थान, पटना

पी.सी.एस. से आय	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19
	रु. 11,05,448	रु. 14,64,414	रु. 19,88,596	रु. 8,26,936

राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के कार्यान्वयन संबंधित गतिविधियाँ

भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के शतप्रतिशत कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, पटना में प्रत्येक तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाता है तथा वार्षिक कार्यक्रमों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की जाती है ताकि कार्यान्वयन समिति के समस्त सदस्य राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अपनी अहम भुमिका निभा सके।

इसके अतिरिक्त, अहिन्दी भाषी क्षेत्रीय कार्यालयों से स्थानान्तरित अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में शत–प्रतिशत कार्य करने हेतु जागृत करने के लिए प्रत्येक तिमाही के दौरान हिन्दी कार्यशाला का आयोजन आवश्यक रुप से किया जाता है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक सोमवार हिन्दी दिवस के रुप में मनाया जाता है तथा समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों से शत–प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने हेतु अनुरोध किया जाता है।

सक्षम प्राधिकारी के हस्ताक्षर से हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना कार्य हिन्दी में करने हेतु राजभाषा नियम 1976 के नियम 8 (4) के अन्तर्गत आदेश जारी किये जाते हैं तथा

बार–बार कहने से झूठ सच नहीं हो जाता।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 11 के पूर्ण अनुपालन हेतु डिस्पैच/क्रय अनुभाग को जाँच बिन्दु बनाया गया है।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूक करने हेतु निबन्ध/लेखन/टिप्पणी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त कर्मियों के अतिरिक्त समस्त प्रतियोगियों को भी पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के संसदीय समिति द्वारा किये गये निरीक्षण के दौरान राजभाषा हिन्दी में हो रहे कार्य की सराहना की गई है तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन समिति, कोलकाता एवं निगमित कर्यालय, नई दिल्ली द्वारा कई अवसरों पर पुरस्कृत भी किया जा चुका है।

क्षेत्रीय कार्यालय–चेन्नई

केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई की स्थापना अगस्त 1969 को हुई। क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई के अंतर्गत तमिलनाडु राज्य, पुदुच्चेरी और अंदमान व निकोबार द्वीपों के केंद्र शासित प्रदेशों में स्थित वेअरहाउसों का कामकाज संभाला जाता है। तमिलनाडु में 3 कंटेनर फ्रेट स्टेशन (सीएफएस) और 21 वेअरहाउस एवं केंद्र शासित प्रदेश पुदुच्चेरी और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में एक–एक वेअरहाउस सहित कुल 26 वेअरहाउस हैं। जिनकी कुल क्षमता 6.71 लाख मीट्रिक टन है। चेन्नई क्षेत्र के विरुगम्बक्कम वेअरहाउस में अंतरराष्ट्रीय वायुपत्तनों पर एअरकार्गो कॉम्पलैक्स का कार्य भी चल रहा है। क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई में विभिन्न प्रकार के वेअरहाउस का संचालन किया जा रहा है। जिनका विवरण निम्नवत है– (जुलाई 2018 तक)

जनरल वेअरहाउस : क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई के अतर्गत 22 जनरल वेअरहाउस है, जिनमें वैज्ञानिक भंडारण और हैंडलिंग सेवाओं के साथ कृषि उत्पादन, औद्योगिक कच्चा माल, तैयार माल आदि को भंडारित किया जाता है।

कस्टम बाण्ड वेअरहाउस : चेन्नई क्षेत्र में पांच कस्टम बाण्ड वेअरहाउस–मेप्ज़, होसूर, तुतुकुडी, विरुगाम्बक्कम तथा अम्बतुर है, केन्द्रीय वेअरहाउस, मेप्ज़ पर पूरी तरह से कस्टम बाण्ड वेअरहाउस है। कस्टम बाण्ड वेअरहाउस में निर्यात करने वाली इकाइयों एवं उद्यमियों को न्यूनतम निवेश पर अपना कारोबार चलाने और कस्टम ड्यूटी की आस्थागित भुगतान की सुविधाएं दी जाती है ।

कंटेनर फ्रेट स्टेशनः चेन्नई क्षेत्र के तीन कंटेनर फ्रेट स्टेशन– माधवरम, विरुगम्बक्कम तथा तुत्तुकुडी में जहाजों से आयात व निर्यात कंटेनरों की लोडिंग व अनलोडिंग के लिए बंदरगाह सुविधा के अतिरिक्त सीएफएस प्रचालक का कार्य करता है। इसके अलावा निर्यात कार्गो की प्राप्ति, इन हाउस कस्टम जांच, निर्यात कार्गो संग्रह एवं भंडारण कंटेनरों एवं निर्यात कार्गो का प्री–शिपमैट कीटनाशन, कस्टम की देख–रेख में कार्गो, आयातित कंटेनरों का पोर्ट से मूवमैंट एएलसीएल एवं एफसीएल कंटेनरों को खाली करना, कस्टम जांच इत्यादि कार्य भी करता है।

क्रम सं	केंद्र का प्रकार	क्षमता (लाख टन में)	उपयोग (लाख टन में)
1	जनरल वेअरहाउसिंग	5.77	4.58
2	कस्टम बोंडेड	0.21	0.15
3	सीएफएस/आईसीडी	0.73	0.46
	योग	**6.71**	**5.19**

एक दूसरे का सम्मान और शिष्टाचार ही संस्कृति की आधारशिला है।

कीट नियंत्रण सेवाएं :

केंद्रीय भंडारण निगम, चेन्नई कीटाणुनाशन सेवाएं वेअरहाउसों के अतिरिक्त होटलों, अस्पतालों, वायुयानों, जहाजों, रेलवे कोचों एवं सार्वजनिक क्षेत्रों आदि स्थानों पर भी उपलब्ध करा रहा है। कीट नियंत्रण सेवाओं के अंतर्गत वर्ष 2017–18 में कुल 375.44 लाख रुपया अर्जित किए गए।

किसान विस्तार योजना :

केंद्रीय भंडारण निगम, चेन्नई द्वारा किसानों को वैज्ञानिक भंडारण और फसलोपरान्त होने वाली हानि को कम करने संबंधी, स्टॉक/खाद्यान्न का भंडारण, कीड़ों व चूहों से अनाज का बचाव, रसायनों के उपयोग आदि के बारे में जागरूक किया जाता है। किसानों को उनके स्टॉक के भंडारण प्रभारों पर 30% की छूट के बारे में भी जानकारी दी जाती है। किसान विस्तार सेवाओं के अंतर्गत वर्ष 2017–18 तक कुल 873 गांवों पर किसान प्रशिक्षण शिविर लगाकर कुल 56,384 किसानों को प्रशिक्षित किया गया।

डब्लूडीआरए, 2007 और पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी के तहत आयोजित जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम

वर्ष	2014–15		2015–16		2016–17		2017–18	
	प्रशिक्षण	किसान	प्रशिक्षण	किसान	प्रशिक्षण	किसान	प्रशिक्षण	किसान
डब्लूडीआरए	3	100	3	150	6	300	4	200
पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी	2	540	––	––	1	45	2	90

श्रम शक्ति

31 जुलाई, 2018 के अनुसार केंद्रीय भंडारण निगम, चेन्नई क्षेत्र में कार्यरत कार्मिकों का विवरण इस प्रकार हैः–

ग्रुप	तमिलनाडु	पुदुच्चेरी	अंदमान व निकोबार द्वीप	कुल
क	15	–	–	15
ख	43	01	01	45
ग	96	02	01	99
घ	09	–	–	09
कुल	**163**	**03**	**02**	**168**

भौतिक व वित्तीय निष्पादन

वित्तीय वर्ष 2017–18 में केंद्रीय भडारंण निगम, चेन्नई क्षेत्र का भौतिक एंव वित्तीय कार्यनिष्पादन का ब्यौरा इस प्रकार हैः–

(लाख रुपये में)

वर्ष	क्षमता (लाख मी. टन में)	उपयोग (% में)	आय	व्यय	लाभ
2017–2018	6.71	65	12087	10155	1932

डब्ल्यू.डी.आर.ए. एडं ई-एन.डब्ल्यू.डी.आर. सिस्टम

- 18 वेअरहाउसों को डब्ल्यू.डी.आर.ए के तहत पंजीकृत किया गया है और वे नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीद जारी करने के लिए अधिकृत हैं जिन पर किसान/जमाकर्ता बैंकों से ऋण ले सकते हैं।
- 2017–18 के दौरान किसानों और व्यापारियों को कुल 1022 एनडब्ल्यूआर जारी किए गए हैं और 29.35 करोड़ रुपये के ऋण का लाभ उठाया गया है।
- 2018–19 (30.06.2018 तक) किसानों और व्यापारियों को कुल 486 एनडब्लूआर जारी किए गए हैं और किसानों द्वारा 9.5 करोड़ रुपये के ऋण का लाभ उठाया गया है।

ज्ञान बोलता है, लेकिन बुद्धि सुनती है।

- चेन्नई क्षेत्र में पहली बार सेंट्रल वेअरहाउस त्रिची में दिनांक 22.06.2018 को ई–एनडब्लूआर प्रणाली की शुरुआत और स्थापना की गई है।

डिपो ऑनलाइन प्रणाली

भारतीय खाद्य निगम द्वारा शुरू की गई डिपो ऑनलाइन सिस्टम (डि.ऑ.सि) भा.खा. निकेस्टॉक को संभाले जाने वाले वेअरहाउसों में लागू की गई है (सै.वे. चिदंबरम और तुतुकुडी को छोड़ कर जहां भा.खा.नि द्वारा आरक्षित सभी वेअरहाउसों में डि.ऑ.सि सेवाओं का उपयोग किया जा रहा है एवं सै.वे. चिदंबरम और तुतुकुडी में डि.ऑ.सि स्थापित किया जाना है)– डि.ऑ.सि स्थापित सभी 12 वेअरहाउसों में स्टॉक की प्राप्ति और स्टॉक के मुद्दों के संपूर्ण लेनदेन विवरण सिस्टम पर लाइव/ऑनलाइन दर्ज किए जाते हैं।

वेअरहाउस मैनेजमेंट सोल्यूशन

केंद्रीय भंडारण निगम में वेअरहाउस प्रबंधन और भंडारण के संचालन को सुव्यवस्थित बनाने के लिए वेअरहाउस मैनेजमेंट सोल्यूशन केंद्रीकृत है। चेन्नई क्षेत्र में वेअरहाउस मैनेजमेंट सोल्यूशन का कार्यान्वयन कार्यप्रगति पर है और चेन्नई क्षेत्र के 26 केंद्रों में से 7 वेअरहाउसों में वेअरहाउस मैनेजमेंट सोल्यूशन लाइव/ऑनलाइन रिकॉर्डिंग हो गए हैं। मैन्युअल रिपोर्ट और रजिस्टर की आवश्यकता को खत्म करने तथा वेअरहाउस के अन्य गतिविधियों के लिए 31 अगस्त 2018 तक सभी वेअरहाउसों में वेअरहाउस मैनेजमेंट सोल्यूशन के कार्यान्वयन के लागू होने की उम्मीद की जा रही है।

भारतीय खाद्य निगम भंडारण का संचालन

भारतीय खाद्य निगम वर्तमान में 2.78 लाख मीट्रिक टन क्षमता का उपयोग करने वाला प्रमुख जमाकर्ता है, जिसमें क्षेत्र की कुल क्षमता का 42% है। पिछले तीन वर्षों में एफसीआई का कुल उपयोग नीचे दिया गया है।

वर्ष	क्षमता (मीट्रिक टन) आरक्षण के तहत
2015–16	2,01,500
2016–17	2,16,500
2017–18	2,22,400
2018–19 (तारीख तक)	2,59,700

राजभाषा गतिविधियां

- क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता और उसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही के दौरान एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है जिसमें कार्यालय के अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अंग्रेजी तथा हिन्दी में वाक्य प्रयोग संबंधित एक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए अन्य विभागों से हिन्दी अधिकारी को आमंत्रित किया जाता है जिनके द्वारा हिन्दी नोटिंग–ड्राफ्टिंग, कंप्यूटर पर हिंदी में टाइपिंग, यूनिकोड, संसदीय प्रश्नावली प्रपत्रों को भरने संबंधित आदि विषयों पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाता है। बैठक में कार्यालयी कामकाज में राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु विचार–विमर्श किया जाता है।
- दिनांक 14 सितम्बर, 2017 से 28 सितम्बर, 2017 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन बड़ी धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया। राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।
- हिन्दी के कार्य में वृद्धि लाने एवं हिन्दी के प्रति रुचि जागृत करने के उद्देश्य से एक ''विशेष संगोष्ठी शीर्षक ''कार्यालय का कार्य राजभाषा में, घर का कार्य मातृभाषा में'' आयोजित किया गया।
- वित्त वर्ष 2017–18 के दौरान राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में वृद्धि हेतु कार्यालय में 6,246/– रुपये की हिन्दी पुस्तकों की खरीद की गई।
- वर्ष 2014–15 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नई द्वारा सार्वजनिक उपक्रम लघुतर की कोटि के अंतर्गत राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ट कार्य निष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई को ''**तृतीय पुरस्कार**'' से सम्मानित किया गया।
- वित्तीय वर्ष 2016–17 के दौरान निगमित कार्यालय द्वारा 'ग' क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई को ''**द्वितीय पुरस्कार**'' से सम्मानित किया गया।

जो बातें विचार पर छोड़ दी जाती हैं, वे कभी पूरी नहीं होती।

➢ नराकास, चेन्नई द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में केंद्रीय भंडारण निगम, चेन्नै क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा भाग लिया जाता है। चेन्नै क्षेत्र के कर्मचारियों द्वारा एक नाटक भी आयोजन किया गया था। श्री.अर्जुन कुमार, केंद्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई ने नराकास (उपक्रम) के तत्वावधान में दि.10.04.2018 को आयोजित हिंदी गायन प्रतियोगिता में ''**चतुर्थ पुरस्कार**'' प्राप्त किया।

ग्राहक प्रोफाइल

क्रम सं	सरकारी और सार्वजनिक	निजी क्षेत्र और बहुराष्ट्रीय कंपनियां	एक्सिम व्यापार
1.	भारतीय खाद्य निगम	अमेज़ान सेलर्स लिमिटेड	आल कार्गो मूवर्स
2.	गेल मेकॉन लिमिटेड	फर्स्ट फ्लाइट कुरियर्स	ए.एफ.एस लोजिस्टिक्स
3.	सेल	आई.टी.सी लिमिटेड	जर्मन एक्सप्रेस
4.	जनगणना संचालन निदेशालय	जेट एयरवेस	मैकनेल्स शिपिंग लाइन्स
5.	स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया	बिग बास्केट,	पेनान्स्हीं शिपिंग
6.	कैंटीन स्टोर डिपार्टमेंट	गेब्रियल इंडिया लिमिटेड,	ग्लोबल लोजिस्टिक
7.	भारतीय जीवन बीमा निगम	फ्लीट गार्ड लिमिटेड	वर्ल्डगेट एक्सप्रेस लाइन्स
8.	खनिज तथा धातु व्यापार निगम लिमिटेड	वाय्कूल लिमिटेड	चकियत एजेंसीज
9.	को–ऑप्टेक्स	एल.जी इलेक्ट्रॉनिकस इंडिया	पैरामाउंट फोर्वार्डर्स
10.	तमिलनाडु सरकार	अम्बिका सुगर्स लिमिटेड	फ्रेट सिस्टम्स इंडिया प्राइवेट लिमि
11.	पप्स्को नाफेड	फिलिपकार्ट	ग्रेट ओशन लाइन्स
12.	तमिलनाडु टेक्स्ट बुक कारपोरेशन	क्विकर इंडिया लिमिटेड,	फ्लेमिंगो ड्यूटी फ्री शॉप
13.	तमिलनाडु सिविल सप्लाई कारपोरेशन	नेरोलक पेंट्स लिमिटेड	
14.	कॉटन कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया	टी.वी.एस श्री चक्र लिमिटेड,	

अन्य विशेष उपलब्धियां :

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई एवं सभी वेअरहाउसों में दिनांक 30.10.2017 से 04.11.2017 तक ''**सतर्कता जागरूकता सप्ताह**'' का आयोजन किया गया। चेन्नई और मदुरै जिले के कॉलेजों और स्कूलों में भ्रष्टाचार के विरुद्ध तथा ईमानदारी को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। चेन्नई में मिनाक्षी कॉलेज फॉर वुमेन और सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, मडमपाक्कम, चेन्नई में छात्रों के लिए 'मेरा लक्ष्य–भ्रष्टाचार मुक्त भारत' थीम पर निबंध लेखन, पोस्टर/नारा और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कार तथा अन्य छात्रों को प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

दिनांक 16.02.2018 से 28.02.2018 तक क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई और सभी वेअरहाउस में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया और स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से बच्चों के लिए स्वच्छ भारत अभियान पर पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया और बच्चों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

कर्त्तव्य और वर्तमान हमारा है। फल और भविष्य ईश्वर के हाथ में है।

कार्यालयीन साहित्य का अनुवाद

विजयराम नौटियाल*

स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने हिंदी का महत्व समझते हुए, इसे राजभाषा के रुप में 26 जनवरी, 1950 को अंगीकार करने की घोषणा की। बाद में राजभाषा अधिनियम, 1963 द्वारा यह व्यवस्था की गई कि हिंदी संघ की राजभाषा होगी, किंतु अंग्रेजी के इस्तेमाल की छूट तब तक बनी रहेगी जब तक राज्यों के विधान मंडल अंग्रेजी का प्रयोग समाप्त करने के लिए संकल्प पारित न कर लें। ऐसी स्थिति में प्रशासनिक या कार्यालयीन अनुवाद आज स्वतंत्र भारत की आवश्यकता बन गई है। कई वर्षों की अंग्रेजी शासन व्यवस्था में राजकाज की भाषा अंग्रेजी होने के कारण शीर्ष स्तर पर शासन व्यवस्था चलाने से संबंधित आदेश, नियम, विनियम, प्रक्रिया साहित्य, लेखा संबंधी मूल सामग्री अंग्रेजी में तैयार की गई। स्वाधीनता के उपरांत देशवासियों ने देश के लिए लोकतांत्रिक प्रणाली का शासन स्वीकार किया और यह अनुभव किया कि शासन लोकतंत्रात्मक तभी हो सकता है जब उसका सारा कारोबार जनभाषा में हो।

इसी प्रयोजन से केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो जैसी संस्था पिछले 40–45 वर्षों से संपूर्ण कार्यालय साहित्य को हिंदी में अनूदित करने के लिए प्रयत्नशील है। कार्यालयीन साहित्य में विशेष रूप से भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/निगमों/उपक्रमों/कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली सामग्री जैसे कोड, मैनुअल, प्रशिक्षण साम्रगी (इंजीनियरी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के) स्थायी प्रकृति के फार्म, वित्त एवं बजट संबंधी नियम, विनियम, रिपोर्ट, राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी किए जाने वाले दस्तावेज शामिल हैं। इन विषयों का अनुवाद करते समय अनुवादक को न केवल दोनो भाषाओं की जानकारी होनी चाहिए अपितु संबंधित विषय के साथ–साथ कार्यालय पद्धति की भी जानकारी होनी चाहिए। कार्यालय पद्धति की जानकारी के अभाव में अनुवादक अर्थ का अनर्थ कर सकता है। उदाहरण के लिए अनुवादक यदि किसी सरकारी पत्र का अनुवाद कर रहा हो तो उसे "From" के लिए प्रेषक लिखना होगा। इस तरह "To" शब्द के लिए "सेवा में" और "Sir" शब्द के लिए "महोदय" का शब्द प्रयोग करना पड़ेगा। यदि कोई व्यक्ति कार्यालय पद्धति से अपरिचित है तो वह इन शब्दों का रूढ़ अथवा प्रचलित अर्थ नहीं समझ पाएगा। इसलिए कार्यलयीन अनुवाद करते समय अनुवादक को कार्यालय पद्धति एवं प्रक्रिया साहित्य की भी जानकारी होनी चाहिए।

इस प्रकार कार्यालय अनुवाद की कुछ व्यावहारिक समस्याएं है जिन पर निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से विस्तार से चर्चा की जा रही है:–

1. This letter may be sent to director under intimation to me. –

गलत अनुवाद– मुझे सूचित करते हुए यह पत्र निदेशक को भेजा जाए।

प्रस्तावित अनुवाद– यह पत्र निदेशक को भेजा जाए और उसकी सूचना मुझे भी दी जाए।

यदि इन दोनों अनुवादों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाए तो पहला वाला अनुवाद अर्थ की दृष्टि से तो ठीक है किंतु उसमें हिंदी भाषा की प्रकृति, संरचना और सरलता की दृष्टि से उतनी बोधगम्यता नहीं है जितनी दूसरे वाले (प्रस्तावित अनुवाद) अनुवाद में है। पहले वाले अनुवाद में लक्ष्य भाषा में निर्मित वाक्य में अंग्रेजी भाषा की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा की हू–बहू नकल है। जबकि दूसरे वाले अनुवाद में हिंदी भाषा की प्रकृति एवं संरचना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसमें अनुवाद पढ़ने में कही भी क्लिष्टता नहीं है और कार्यालय प्रक्रिया के अनुसार भी उचित है क्योंकि निदेशक का पद सर्वोच्च पद होने के नाते उनकी गरिमा को ध्यान में रखते हुए पत्र पहले उन्हें भेजा जा रहा है तथा उसकी सूचना निचले स्तर पर कार्यरत अधिकारी को दी जा रही है। यह विवेक कार्यालय पद्धति की जानकारी रखने वाला व्यक्ति ही महसूस कर सकता है। इसलिए कार्यालयीन अनुवाद करते समय अनुवादक को कार्यालय पद्धति की सूझबूझ एवं समझ भी होनी जरूरी है।

*सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली

समय से पहले और भाग्य से अधिक कुछ नहीं मिलता।

2. President of India will be visitor of this university.

गलत अनुवाद– भारत के राष्ट्रपति इस विश्वविद्यालय के आंगतुक अतिथि होंगे।

प्रस्तावित अनुवाद– भारत के राष्ट्रपति इस विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष होंगे ।

कार्यालयीन अनुवाद की दृष्टि से पहला अनुवाद शाब्दिक अनुवाद है अर्थात् मूल पाठ अंग्रेजी भाषा के शब्दों का हिंदी रूपांतरण। कार्यालयीन अनुवाद में कुछ शब्द संदर्भ विशेष की दृष्टि से विशिष्ट पारिभाषिक अर्थ रखते है। जैसे शिक्षा शब्दावली में visitor शब्द का प्रयोग विशिष्ट अर्थ में किया जाता है। अनुवादक यदि इस पारिभाषिक शब्द के मानक अर्थ से परिचित नहीं है तो वह उस शब्द का सामान्य अर्थ में प्रयोग कर कामचलाऊ अनुवाद कर सकता है जैसे कि ऊपर पाठ में किया गया है उसे ऐसे अवसरों पर संकल्पना को समझकर शब्द के विशिष्ट संदर्भ सापेक्ष प्रयोगगत अर्थ को ध्यान में रखकर पारिभाषिक शब्दावली में शब्दों के सामान्य और विशिष्ट मानक रूपों की खोज कर सही पर्याय का इस्तेमाल करना चाहिए, ताकि कार्यालयी अनुवाद का प्रयोजन पूरा हो सके।

3. Slow but sure transformation is taking place in the country.

गलत अनुवाद– देश में परिवर्तन धीरे–धीरे किंतु निश्चित रूप से हो रहा है।

प्रस्तावित अनुवाद– देश में विकास तो हो रहा है किंतु धीरे–धीरे हो रहा है।

उक्त वाक्य में अनुवादक ने अंग्रेजी भाषा संरचनात्मक व्यवस्था को हिंदी भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था में प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया है जिससे वाक्य में निहित अर्थ पूरी तरह से हिंदी भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था में आबद्ध नहीं हो पाया है। जबकि दूसरे वाले अनुवाद में (प्रस्तावित अनुवाद) अनुवादक ने लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप वाक्य में प्रयुक्त शब्द के अर्थ को सन्निकटतामूलक अर्थ देने वाले शब्दों का प्रयोग कर वाक्य को हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार ढालने का प्रयास किया है। यही विवेक और अभिव्यक्ति की परिपक्वता कार्यालयीन अनुवाद को उत्कृष्टता प्रदान करती है।

4. It will be appreciated if the above mentioned discrepancies are reconciled-

गलत अनुवाद– यदि उपर्युक्त विसंगतियों को दूर किया जाता है तो यह अंत्यत प्रशंसनीय होगा।

प्रस्तावित अनुवाद– यदि उपर्युक्त विसंगतियों का समाधान कर दिया जाता है तो हम आपके आभारी होंगे।

उपर्युक्त दोनों अनुवादों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि पहले वाले अनुवाद में अनुवादक ने शाब्दिक अनुवाद किया है और भाषा की प्रकृति के अनुरूप शब्दों का चयन नहीं किया है। कार्यालय में किसी विषय में समाधान न किए जाने की स्थिति में प्रशंसा नहीं की जाती, समाधान किये जाने पर आभार व्यक्त किया जाता है। अतः अनुवादक को कार्यालय की पद्धति के अनुसार विषय का संदर्भ लेते हुए आभार प्रकट करने जैसे शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए था और इसी के कारण अनुवाद कमजोर पड़ गया जबकि दूसरे वाले अनुवाद में (प्रस्तावित अनुवाद) में अनुवादक ने संदर्भ के अनुसार शब्द का प्रयोग करते हुए उपयुक्त अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया है जिसके फलस्वरूप अर्थ में बोधगम्यता और स्पष्टता आई है।

5. Quite a few Ministries are facing financial cirses for the last ten months.

गलत अनुवाद– कुछेक मंत्रालय पिछले 10 महीनों से वित्तीय संकट का सामना कर रहे हैं।

प्रस्तावित अनुवाद– अधिकतर मंत्रालय पिछले 10 महीनों से वित्तीय संकट का सामना कर रहे हैं।

अंग्रेजी विदेशी भाषा होने के कारण कभी–कभी हमें अनुवाद की विशिष्ट अभिव्यक्तियों के अर्थ का पता नहीं चल पाता है। सामान्य व्यक्ति तो उक्त वाक्य का अनुवाद "कुछेक" ही करेगा किंतु अंग्रेजी का सम्यक ज्ञान रखने वाला व्यक्ति ही ऐसी विशिष्ट अभिव्यक्तियों का सटीक अनुवाद कर पाएगा। इसलिए कार्यालयीन अनुवाद करते समय अनुवादक को विभिन्न Negative (नकारात्मक) तथा positive (सकारात्मक) अभिव्यक्तियों के अर्थ की जानकारी होनी चाहिए अन्यथा अनुवाद करते समय अनुवाद का अनर्थ भी हो सकता है।

6. The leave application of shri Ram lal, Hindi officer from your office who is at present under training in ISTM, New Delhi is forwarded herewith for further necessary action-

सच्चे मित्र भाग्य से मिलते हैं।

गलत अनुवाद– आपके कार्यालय के हिंदी अधिकारी, श्री राम लाल, जो इस समय आई.एस.टी.एम. में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है, का छुट्टी का आवेदन अगली आवश्यक कार्रवाई के लिए भेजा जा रहा है।

प्रस्तावित अनुवाद– आपके कार्यालय के हिंदी अधिकारी श्री राम लाल, इस समय आई.एस.टी.एम में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहें हैं। उनका छुट्टी का आवेदन आगे की आवश्यक कार्रवाई के लिए अग्रेषित किया जा रहा है।

स्पष्ट है कि पहले वाले अनुवाद की वाक्य संरचना हिंदी की प्रकृति के अनुरूप नहीं है। श्री राम लाल और उनका आवेदन एक दूसरे से अलग–थलग पड़ गए है। यदि मूल सरंचना का अनुकरण न कर हिंदी की सहज प्रकृति के अनुरूप अनुवाद किया होता तो यह अधिकर सरल और सहज होता क्योंकि हिंदी वाक्य संरचना में उसके निकटस्थ अवयव यथासंभव निकटतम स्थान पर रखे जाते है। अंग्रेजी के उपर्युक्त वाक्य में "श्री राम लाल का छुट्टी का आवेदन (कर्ता)" "अग्रेषित किया है (क्रिया)" से दूर है। इन दोनों के बीच में श्याम लाल का विवरण बताने वाला उपवाक्य अंतर्विष्ट किया गया है। जो अंग्रेजी की प्रकृति की दृष्टि से ठीक है किंतु हिंदी की प्रकृति की दृष्टि से वाक्य को दो खंड़ों में विभक्त करना आवश्यक होगा, ताकि वाक्य में सरलता, सहजता और सुबोधता लायी जा सके।

इसी प्रकार अंग्रेजी का एक वाक्य इस प्रकार हैः–

7. "Good Governanace gives rise to an informed, participative and responsible, society with shared values, norms, standards and aspirations".

गलत अनुवाद– "सुशासन साझा मूल्यों, मानदंड़ों और आकांक्षाओं सहित एक जानकार, सहभागी तथा उत्तरदायी समाज का निर्माण करता है"।

प्रस्तावित अनुवाद– "सुशासन एक ऐसे सूचना संपन्न, सहभागी तथा उत्तरदायी समाज का निर्माण करता है जिसके मूल्य, मानदंड और आकांक्षाए साझा हों।"

यदि इस अनुवाद को अनुवाद की कसौटी पर रख कर देखा जाए तो इसमें अंग्रेजी भाषा की छाया स्पष्ट रुप से दिखाई देती है। इसमें पठनीयता, बोधगम्यता और अर्थ मूलनिष्ठता का अभाव दिखाई देता है। यदि इस पाठ का अनुवाद इस प्रकार से किया जाता है कि "सुशासन एक ऐसे सूचना संपन्न, सहभागी तथा उत्तरदायी समाज का निर्माण करता है जिसके मूल्य, मानदंड और आकांक्षाए साझा हों" तो अनुवाद वाक्य विन्यास एवं हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार अधिक अर्थ बोधक. संप्रेषणपरक एवं बोधगम्य होगा। यहीं पर अनुवाद व्यक्ति सापेक्ष हो जाता है।

8. Know all men by these present that I, ... son/daughter of shri .... hereinafter called "Stipendiary" (which expression shall unless excluded by or repugnant to the contest include his heir, administrator or assignee) by myself to pay to the president of India (hereinafter called the Government) on demand and without demur a sum of Rs.1000/- or if payment is made in a country other than India, the equivalent of the said sum in the currency of that country converted at the official rate of exchange between that country and India.

   In the witness thereof the said stipendiary having put his/her respective hands the day and the year herein above written.

गलत अनुवाद– सभी उपस्थित व्यक्तियों को ज्ञात हो कि मैं ..... जो श्री..... का पुत्र/पुत्री हूँ और इसके बाद वृत्तिका ग्राही कहा गया है (इस अभिव्यक्ति के अंतर्गत जब तक संदर्भ अपवर्तित और विरुद्ध न हो, उसके उत्तराधिकारी, प्रशासक और प्रतिनिधि भी शामिल है) भारत के राष्ट्रपति को (जिन्हें इसके बाद सरकार कहा गया है) मांग की जाने पर अनापत्ति सहित 1000/–रूपए राशि या भुगतान यदि भारत से बाहर किसी देश में किया जाता है तो उसके देश की मुद्रा में उक्त राशि उस देश और दर पर परिवर्तित समतुल्य राशि का भुगतान करने के लिए स्वयं को आबद्ध करता है/ करती हूँ।

उक्त के गवाह के रूप में ऊपर लिखित तिथि को हस्ताक्षर कर दिए है।

प्रस्तावित अनुवाद– यह सब को ज्ञात हो कि मैं ..... जो श्री ..... का पुत्र/ की पुत्री हूँ, जिसे इसमें आगे वृत्तिकाग्राही कहा गया है (इसके अंतर्गत उसके वारिस, प्रशासक और समनुदेशिती भी है जब तक कि ऐसा संदर्भ से अपवर्जित या उसके विरूद्ध नहीं है) भारत के राष्ट्रपति को (जिन्हें इसमें आगे सरकार कहा गया है) मांग की जाने पर आपत्ति के बिना 1000/– रूपए की राशि या यदि संदाय भारत से भिन्न किसी देश में किया जाता है तो उस देश की मुद्रा में उक्त राशि की, उस देश और भारत के बीच की सरकारी विनिमय

दर से संपरिवर्तित समतुल्य राशि का संदाय करने के लिए अपने आप को आबद्ध करता/करती हूँ।

इसके साक्ष्य स्वरूप उक्त वृत्तिकाग्राही ने इस पर ऊपर लिखित/लिखी तारीख को अपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

उक्त दोनों पैराग्राफों का अनुवाद जब आप देखेंगे तो पता चलेगा कि अनुवादक ने पहले वाले अनुवाद में सामान्य शब्दों का प्रयोग किया जिससे विधिक अनुवाद में प्रयुक्त होने वाली भाषा में वैधानिकता का पुट प्रतीत नहीं होता है। इसी प्रकार दूसरे वाले अनुवाद में अनुवादक ने विधिक शब्दों का प्रयोग करते हुए अनुवाद में वैधानिकता लाने का प्रयास किया और केवल उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया है जो विधि विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित किए गए है ताकि अनुवाद को प्रयोजनमूलक बनाया जा सके।

इस प्रकार अंत में यह कहा जा सकता है कि अनुवाद अर्थ संप्रेषण की प्रक्रिया होने के कारण अनुवादक को इसमें व्याकरण के स्तर पर, सृजनात्मक के स्तर पर, व्याख्या के स्तर पर तथा सांस्कृतिक तत्वों के स्तर पर विचार करना होता है और कार्यालय की प्रक्रिया के अनुरूप अर्थ का संप्रेषण करना होता है।

चुप चुप रहना सखी

लक्ष्य शर्मा*

(1) चुप चुप रहना सखी,
किसी से न कहना सखी।
ये दर्द जो हमने सहा,
हर जुल्म की थी इन्तहा।
बचपन में खोदी हंसी,
तुम्हारी वो गुड़िया सखी।
भाई को प्यार मिला,
हमने क्या की थी खता।

(2) चुप चुप रहना सखी,
किसी से न कहना सखी।
वो रक्षा का बंधन जो था,
शिक्षा का हक ले गया।
वो राखी का वादा तो बस,
झूठी रसम बन गया।
उस राखी से ही बांध कर,
हर सपने को दफना दिया।

(3) चुप चुप रहना सखी,
किसी से न कहना सखी।
जब हाथों में मेहंदी लगी,
तुम तो बस तेरह की थी।
वंश को तुमने जना,
और दुनिया से ले ली विदा।
ये बात जो मैंने कही,
चुप चुप रहना सखी।

* प्रबंधन प्रशिक्षु (सामान्य), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जिंदगी

परशुराम गुप्ता*

जिंदगी एक हवा है, जिसका नहीं है कोई आधार
जरूरी नहीं कि यहाँ हर सपना हो साकार

एक हवा है ये,
यहाँ सावन की पुरवा चलती है,
तो कभी–कभी आंधी भी आती है
क्यूंकि जिंदगी एक हवा है, जिसका नहीं कोई आधार

जिंदगी एक आग है
जिसमें लोहा भी मृदुल हो जाता है।
कभी जल जाते हैं अरमान
तो कभी चिराग भी रोशन हो जाता है।

एक आग है ये
यहाँ सीता की अग्निपरीक्षा भी होती है,
तो कभी प्रह्लाद बच भी जाता है
क्यूंकि जिंदगी एक आग है
जिसमें लोहा भी मृदुल हो जाता है।

जिंदगी बहता हुआ पानी है,
इसके बहाव में हर कोई बहता है।
जिंदगी की भाषा
मौन खड़ा सागर अपनी गहराई में कहता है।

जिंदगी एक हवा है, जिसका नहीं है कोई आधार
जिंदगी एक हवा है, जिसका नहीं है कोई आधार

* कनिष्ठ तकनीकी सहायक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

भूत से प्रेरणा लेकर, वर्तमान में भविष्य का चिंतन करना चाहिए।

खिड़की वाली सीटः एक यात्रा राजभाषा के साथ

रोहित उपाध्याय*

पिछले सप्ताह की बात है, राजधानी एक्सप्रेस में मुम्बई से दिल्ली जा रहा था। मुझे खिड़की से बाहर का नजारा देखने में बहुत आनंद आता है, लेकिन या तो मुझे खिड़की वाली सीट मिलती नहीं या न चाहते हुए भी अपनी भलमनसाहत दिखाते हुए किसी बुजुर्ग से, जिसे ऊपर की सीट मिली हो, बदलनी पड़ती है। इस बार मुझे फिर से नीचे की सीट मिली थी। श्रीमती जी मेरे स्वभाव से भली–भांति परिचित थीं, इसलिए घर से ही हिदायत दे दी थी कि किसी से सीट बदलना मत, कुछ–न–कुछ बहाना बना देना। मैं भी हॉ–में–हॉ मिलाकर मुंबई सेंट्रल के लिए निकल पड़ा।

शाम 5:00 बजे की ट्रेन थी। स्टेशन घर से थोड़ा दूर है इसलिए घर से जल्दी निकला और समय पर स्टेशन पहुँच गया। ट्रेन प्लेटफार्म पर लगी हुई थी। मैं अपनी सीट पर जाकर बैठ गया। मेरे आस–पास कोई नहीं था। मैं खिड़की वाली सीट पर बैठकर अपने भाग्य पर इठला रहा था कि आज तो पूरी ट्रेन खाली है। आज किसी से सीट बदलनी नहीं पड़ेगी। आधे घंटे बाद अगला स्टेशन बोरीवली है। मन–ही–मन प्रार्थना कर रहा था कि अगले स्टेशन से कोई सीट बदलने वाला न चढ़ जाए। जब वहाँ से भी कोई नहीं चढ़ा और ट्रेन चल पड़ी तो मैंने राहत की साँस ली और खिड़की से बाहर देखने लगा। ऐसा लगा मानो आज 'अंधा क्या चाहे, दो आँखें' वाली कहावत मुझ पर ही चरितार्थ हो रही हो।

मन ही मन खुश होता हुआ मैं ख्यालों में डूब गया। अचानक एक मधुर नारी स्वर ने मेरी तंद्रा भंग कर दी। मुड़ कर देखा तो एक बुजुर्ग महिला बैठी हुई थी। उनके साथ लगभग 21–22 वर्षीया एक युवती भी दिखाई दी। मधुर स्वर उसी नवयुवती का था। बुजुर्ग महिला साड़ी पहने हुए थी और नवयुवती ने जींस और टी–शर्ट पहनी हुई थी। टी–शर्ट पर सामने की ओर लिखा था 'आई डोंट केयर'। मैं टी–शर्ट पर लिखे वाक्य के बारे में ही सोच रहा था कि नवयुवती ने मुझसे पूछा 'अंकल, आप कहाँ जाएंगे?' इस 'अंकल' शब्द ने मुझे हिला कर रख दिया, लगा कि इस कम उम्र में भगवान ने सिर से बाल गायब नहीं किए होते तो शायद आज यह अंकल शब्द नहीं सुनना पड़ता। खैर! अब तो यह अंकल शब्द को सुनने की आदत–सी हो गई है। मैंने नवयुवती को बताया कि मैं दिल्ली जा रहा हूँ। नवयुवती बोली कि हम भी दिल्ली जा रहे हैं। साथ में मेरी दादी हैं।

मैं मन–ही–मन डर रहा था कि अब इस बूढ़ी दादी के लिए तो अपनी नीचे की सीट की बलि चढ़ानी ही पड़ेगी। फिर वही हुआ जो मेरे साथ हमेशा होता आया है। मुझे साईड लाइन करके नवयुवती और दादी धन्यवाद देते हुए मेरी सीट पर बैठ गए और मन मसोस कर मैं रात के खाने का इंतजार करने लग गया।

नवयुवती कान में मोबाइल का ईयरफोन लगाए हुए खिड़की से बाहर देख रही थी और दादी बीच में चुपचाप बैठी हुई थीं। मैं भी चुपचाप बैठा अपनी किस्मत को कोस रहा था। बूढ़ी दादी मुझे ही देख रही थी, बोली– 'बेटा, कुछ समस्या तो नहीं है?' शायद उन्हें भी मेरे हाव–भाव से मेरी मनःस्थिति का आभास हो गया था। मेरे 'नहीं' कहने पर वह बोली, 'बेटा, मुझे भी सीट बदलना अच्छा नहीं लगता लेकिन अब उम्र हो गई है तो ऊपर की सीट पर चढ़ा नहीं जाता। दादी की सफाई पर मुझे मन–ही–मन ग्लानि भी हुई कि दादी मेरे मन की बात कैसे भांप गईं? मैंने बोला, नहीं दादी ऐसी कोई बात नहीं। मुझे 'नेकी कर दरिया में डाल' वाला मुहावरा याद आ रहा था। कुछ ही देर में मैं ठीक हो गया और दादी से बात करने लगा। पोती ने भी अपना ईयरफोन हटा लिया और हमारी बातें सुनने लगी। मैंने पूछा कि वो लोग कहाँ जा रहे हैं? पोती ने अब तक मोर्चा संभाल

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

लिया था। बोली मैं यहाँ एक मल्टीनेशनल कंपनी में इंटरव्यू देने आयी थी। यहाँ मुंबई में दादी की बहन रहती हैं, उन्हीं के पास रुके थे। दादी भी उनसे मिलने के लिए मेरे साथ चली आयीं। अभी दिल्ली जा रहे हैं। दादी बोली बेटा ऐसा भी तो बोल सकती थी ना कि एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में साक्षात्कार देने आयी थी। दादी के चेहरे पर वेदना का भाव साफ दिखाई दे रहा था। बोली, बेटा ये आजकल के बच्चे तो एक वाक्य भी शुद्ध हिंदी में नहीं बोल सकते। तुमने देखी न इसकी भाषा? पोती यह सुनकर खिल–खिलाकर हँस पड़ी बोली, दादी अगर मैं यही बहुराष्ट्रीय कंपनी और साक्षात्कार जैसे वर्ड बोलने लग गई न तो फिर मिल गई मुझे जॉब।

दादी मुझे बताने लगी, बेटा तुम मेरे बारे में जानना चाहते हो न तो सुनो, 'मैं राजभाषा हिन्दी हूँ और यह मेरी पोती मॉडर्न हिंदी है। यहाँ मुंबई में मेरी बहन मराठी रहती है। हम लोग उसके पास ही आए थे। ज्यादा दिन यहाँ रुक नहीं सकती। सितंबर का महीना आ रहा है। साल भर मुझे कोई पूछता नहीं। लेकिन अगस्त आते–आते मेरी बूढ़ी हड्डियों में फिर से जान आने लगती है। ऐसा लगता है कि किसी सूखे वृक्ष पर बरसात के बाद फिर से नई कोंपलें फूटने लगी हों। दादी धाराप्रवाह बोलती चली जा रही थीं। दादी ने बताया कि यूँ तो पूरे वर्ष उनकी देखभाल के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत एक पूरा राजभाषा विभाग है, जो जून 1975 से निरंतर उनकी देखभाल कर रहा है। इसके अलावा हर सरकारी कार्यालय एवं उपक्रमों में राजभाषा विभाग रहता है। केंद्र सरकार का राजभाषा विभाग सभी अधीनस्थ कार्यालयों से रिपोर्ट मंगाकर मेरी सेहत की जानकारी लेता रहता है। इसके अलावा, संसद की एक राजभाषा समिति भी मेरे स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखती है। मैं भी सोचने लगा कि तभी दादी इस उम्र में भी ट्रेन की यात्रा इतनी सहजता से कर रही हैं।

दादी ने आगे बताया कि उनकी 21 बहनें और भी हैं जो कि संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हैं। इसके अलावा उनकी अंग्रेजी नाम की एक सौतन भी है। दादी गर्व से बताती है कि वर्ष 2011 की भारत की जनगणना के आधार पर 44 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा हिंदी है। दादी बताती हैं कि आज उनके बुढ़ापे में यही 44 प्रतिशत लोग उनकी इज्जत नहीं करते। आधुनिक दिखने और नौकरी पाने के लिए उन्हें उनकी सौतन अंग्रेजी में अधिक संभावनाएं दिखाई देती हैं। हर कोई अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में ही पढ़ाना चाहता है। अपना पेट काटकर लोग इन अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अपने बच्चों का प्रवेश उन्हें बड़ा अधिकारी बनाने के लिए ही करते हैं।

दादी आगे अपना दर्द व्यक्त करते हुए कहती हैं, जानते हो मेरी सबसे अधिक सेवा गैर हिन्दी भाषियों ने ही की है। सबसे पहले गुजराती के महान कवि श्री नर्मद ने ही मुझे राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा था। 1872 में कोलकत्ता में केशव चंद्र सेन जब आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती से मिलने गए तो संस्कृत छोड़कर हिंदी अपनाने की सलाह दे डाली। तभी से स्वामीजी अपने व्याख्यान हिंदी में देने लगे और शायद इसी कारण स्वामी जी ने 1875 में सत्यार्थ प्रकाश की भाषा भी हिंदी ही रखी। 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी। 1918 में गुजराती भाषी महात्मा गांधी ने इंदौर में संपन्न आठवें हिंदी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था– मेरा यह मत है कि हिंदी को ही हिंदुस्तान की राष्ट्रीय भाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए। 1918 में ही महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की। 1935 में मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में सी. राजगोपालाचारी ने हिंदी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया। दादी वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा करने में तो बिल्कुल नहीं चूकती। दादी बताती है कि प्रधानमंत्री ने किस तरह से देश–विदेश में अपने भाषणों में हिंदी भाषा को ही माध्यम बनाया है। उनके केवल भाइयो और बहनो बोल देने मात्र से ही लोग तालियाँ बजाने लगते हैं। पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने तो अफसोस भी व्यक्त किया था कि केवल हिंदी न बोल पाने के कारण वे प्रधानमंत्री नहीं बन पाए। पी.वी. नरसिंह राव और मनमोहन सिंह गैर हिंदी भाषी होते हुए भी हिंदी में भाषण देते थे। देवेगौड़ा को तो प्रधानमंत्री बनने के बाद हिंदी सीखनी पड़ी, ताकि वे स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से देश को संबोधित कर सकें। दादी मुझसे पूछती है– क्या तुमने आज तक किसी भी प्रधानमंत्री को लाल किले से हिंदी के अलावा किसी अन्य भाषा में बोलते सुना है? मैं सोचने की कोशिश करता हूँ, लेकिन मुझे ऐसा कुछ याद नहीं आता। मैं 'न' में सिर हिला

देता हूँ। दादी के चेहरे पर एक अलग किस्म की आभा दिखाई देती है।

पोती बोल पड़ती है– अंकल, आप बोर तो नहीं हो रहे? दादी को तो कोई भी मिल जाता है न तो अपना वही पुराना घिसा–पिटा रिकार्ड चालू कर देती हैं। इन्हें अपना राजभाषा होने का बहुत घमंड है, लेकिन ये नहीं जानतीं कि 14 सितंबर को इनका जो जन्म दिवस मनाया जाता है वो केवल एक रस्म, अदायगी भर है। राजभाषा विशेषांक निकालकर इनके सम्मान में विभिन्न कार्यालयों की मैगजीन छपती हैं। विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। अवार्ड बाँटे जाते हैं। हिंदी के विद्वानों को सम्मानित किया जाता है और ये सोचती हैं कि इनका सम्मान किया जा रहा है। हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता और बढ़ते हिंदी चैनलों को देखकर इन्हें लगता है कि ये आज भी वही 1949 वाली हिंदी हैं। आज जमाना बहुत बदल गया है। आज फिल्मों के नाम तक हिंदी में नहीं रहते हैं– अगर आप 'टायलेट–एक प्रेम कथा' को 'शौचालय– एक प्रेम कथा' कह दें तो क्या फिल्म का नाम शोभा देगा? दादी समझती ही नहीं हैं, अब वह केवल अनुवाद की भाषा है। लोग अंग्रेजी में सोचते हैं और फिर उसका हिंदी अनुवाद करते हैं। इसकी बड़ी बहन संस्कृत का हाल तो आप जानते ही हैं शुद्धता के चक्कर में पड़कर आज न जाने कितने सालों से वह वेंटिलेटर पर हैं। 2011 की जनगणना के हिसाब से केवल 25,821 लोगों ने उन्हें अपनी मातृभाषा के रूप में दर्ज किया है।

पोती और दादी दोनों की बातों ने मुझे निरुत्तर कर दिया था। पोती बोल रही थी। अंकल, अब तो हिंग्लिश का बोलबाला है। आप आधी हिंदी आधी अंग्रेजी बोलकर मेरी तरह मॉडर्न बन सकते हैं। आजकल तो हिंदी चैनलों के नाम तक अंग्रेजी में हैं, आप देखते नहीं एन.डी.टी.वी., इंडिया टी.वी., इंडिया न्यूज, ए.बी.पी. न्यूज और भी न जाने क्या–क्या? वैसे आप इंटरनेट और मोबाइल को हिंदी में क्या बोलते हैं? हँसते हुए बोली, क्या आप भी दादी की तरह कम्प्यूटर को संगणक बोलते हैं?

अब जवाब देने की बारी दादी की थी। दादी बोली कि मैं तो बहती नदी की तरह हूँ। मेरी राह में जिस भी भाषा का कोई भी उपयोगी शब्द आया मैंने उसे गले लगा लिया। मैंने कभी किसी से यह नहीं कहा कि वह 'इंटरनेट' को 'अंतरताना' बोले, 'मोबाइल' को 'भ्रमणध्वनि' बोले और 'ट्रेन' को 'लोहपथगामिनि' बोले। मैं केवल इतना भर चाहती हूँ कि नए शब्दों को देवनागरी लिपि में इस तरह से लिखा जाए कि आसानी से दूसरे व्यक्ति को समझ आ जाए। मेरी पोती अभी छोटी है वह हिंग्लिश प्रेमी है। कभी मैं संस्कृत प्रेमी थी उसके बाद उर्दू और फारसी के शब्दों को भी अपनाने लगी। अंग्रेजी से मेरी कोई शत्रुता नहीं है, आज वह भी मेरे बहुत सारे शब्दों को अपना रही है और मैं भी उसके शब्दों को अपना रही हूँ। चेतन भगत के उपन्यास पढ़ने वाली मेरी पोती बाबू देवकीनंदन खत्री के 'चंद्रकांता संतति' के बारे में कुछ नहीं जानती। सुमित्रानंदन पंत, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे कवियों, हरिशंकर परसाई और शरद जोशी जैसे व्यंगकारों और मोहन राकेश और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जैसे कालजयी लेखकों के बारे में तो वह बिल्कुल अनभिज्ञ है। भारतेंदु हरिश्चंद्र तो मानो उसके लिए किसी दूसरे ग्रह के प्राणी हैं।

दादी ने यह सब बोल कर पोती को लगभग चुप ही करा दिया। पोती ने चुपचाप वापिस अपना ईयरफोन लगा लिया और मुझसे नजरें चुराती हुई दूसरी ओर देखने लगी।

मैंने दादी की ओर देखा, वह मंद–मंद मुस्करा रही थी। दादी से नजरें मिलीं तो बोली बेटा बस एक बात याद रखना, जबर्दस्ती कोई अनुवाद मत करना नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। मुझे अचानक याद आया कि किस तरह की चेतावनी दादी दे रही है, एक बार कार्यालय में मेरे एक सहयोगी ने अपना हिंदी में लिखा पत्र दिखाया। पत्र में लिखा था, 'काम के लिए श्रम की सगाई की गई। मुझे कुछ समझ नहीं आया। पूछा तो बोला, सर मैंने गूगल पर सर्च किया था, 'Engagement of labour for work' तो गूगल ने यही अनुवाद बताया। मैं अपनी हँसी नहीं रोक पाया।

तभी मुझे एक पुरुष स्वर सुनाई दिया, सर सुबह ब्रेकफास्ट में क्या लेंगे, वेज या नॉनवेज? सामने देखा तो पैंट्री कार का अटेंडेंट खड़ा था। आस–पास कोई नहीं था, न दादी न पोती। मैं ही शायद खिड़की से बाहर देखते–देखते कल्पना लोक में खो गया था। मन–ही–मन राहत की साँस ली कि आज मुझे किसी से अपनी खिड़की वाली सीट नहीं बदलनी पड़ी। लेकिन, कहीं–न–कहीं मेरे मन में दादी और पोती से बिछुड़ने का दुःख भी था।

हिंदी भाषा का विकास देश का विकास है।

विचार प्रबंधन

डॉ. सत्येन्द्र सिंह*

विचार मानव जीवन की उर्वरा शक्ति है। विचारों से हमारा व्यवहार बनता है। हमारा व्यवहार हमारा संस्कार बनता है। हमारे संस्कार हमारे जीवन का आधार है। इसी संस्कारों के आधार पर हमारे सुख–दुःख हैं। दुःख सुख का मूल हमारे विचारों पर निर्भर करता है। यदि विचार सकारात्मक होंगे तो उसके लिए किये जाने वाले कर्म व कर्म फल सुखमय बनेगा। परंतु यदि विचार नकारात्मक हैं तो उसके लिए किया जाने वाला कर्म दुःख एवं कष्ट का कारण बनेंगे। सकारात्मक विचार हमें इस बात के लिए प्रेरित करता है कि संसार हमसे है, हम संसार से नहीं। सकारात्मक विचारों से चीजें हमारे नियंत्रण में होती हैं। जबकि नकारात्मक विचारों से हम चीजों के नियंत्रण में हो जाते हैं। हमारे चारों ओर की स्थितियां, परिस्थितियां, घटनाएं व प्रघटनाएं हमारे जीवन की दिशा एवं देश को प्रभावित करती हैं। विचारों को सकारात्मक रखने से हम इन प्रतिकूल प्रभावों से बच सकते हैं। मनुष्य एक समाज प्राणी है। समाज से वह बोलना, चलना, व्यवहार करना तथा आचरण करना सीखता है। इस तरह सामाजिक प्राणी होने की वजह से उसका जीवन पग–पग पर चुनौती देने वाला है। चुनौतियों का सामना करने का आधार उसका ज्ञान है। मूलतः उसके पास अर्जित ज्ञान है। अर्जित ज्ञान से वह प्रकृति के अनुकूल और प्रतिकूल कार्य करता रहता है और सहज तरीके से जिए जाने वाले जीवन को कठिन, असहज, बोझिल, अनैतिक एवं परेशानी में डालने वाला बना देता है। इस प्रकार वह जीवन को तनाववयुक्त बना देता है। वह अपनी इस बुद्धि का इस्तेमाल कुछ अलग ही तरीके से करने लगता है। वह अपने लिए अंदर ही अंदर एक ऐसा जाल बुन लेता है, जिसमें वह फंसता ही चला जाता है और इतना दूर निकल जाता है कि फिर उसे संभलने का मौका ही नहीं मिलता है। इस तरह वह होश संभालते ही अपने जीवन में तनाव की ओर बढ़ने लगता है। दरअसल जीवन के सही मार्ग को पकड़ने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। विचार व ज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। अक्सर कहा जाता है कि Knowledge is power - लेकिन सच तो यह है कि Knowledge merely is not power] implementing knowledge is power- अर्थात विचारों की शक्ति को पहचाने से ज्ञान का उपयोग स्वहित एवं जनहित में किया जा सकता है।

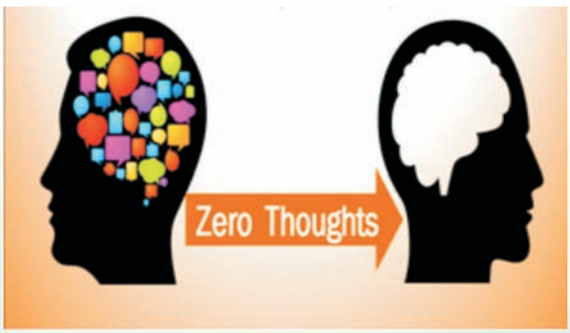

जीवन के उद्देश्य को समझने के लिए इसके माध्यम ज्ञान को समझना भी आवश्यक है। ज्ञान दो तरीके का होता है ।

1 नैसर्गिक 2 अर्जित

मनुष्य के अलावा सभी जीव प्राकृतिक जीवन व्यतीत करते हैं।

यहां प्रकृति का सही अर्थ समझना जरूरी है। प्र का अर्थ विशिष्ट और कृति का अर्थ है रचना। मनुष्य के अलावा सभी जीव समयानुसार अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

उनका अपना कोई वैचारिक संगठन या समाज नहीं होता है। वे अपने जीवन को प्रकृति के अनुकूल जीते हैं। उनको अपने घर बनाने, बच्चों को स्कूल भेजने, उनके भविष्य की चिंता नहीं होती। उनको किसी स्कूल, अस्पताल, सड़क, बिजली, पानी की चिंता नहीं होती है। इसके ठीक दूसरी तरफ मनुष्य को इन सबकी चिंता उम्रभर लगी रहती है। यही चीजें उसके दुःख और सुख दोनों का कारण बनती हैं। चाहे वे आसमान में उड़ने वाले पक्षी हों या जमीन पर चलने वाले पशु हों या फिर जमीन पर ही रेंगने वाले या जमीन के अंदर रहने वाले कीड़े–मकोड़े हों या फिर पानी में रहने वाले जीव हों सभी का एक मात्र अति साधारण सा केवल एक ही उद्देश्य होता है और वह है जीना। उनको जीने के लिए कैसे खाना है, कैसे चलना है, कैसे सोना है, कब सोना है, कब जगना है या फिर

* वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, संसदीय राजभाषा समिति सचिवालय, नई दिल्ली

क्या खाना है क्या नहीं खाना है कब खाना है, कब नहीं खाना है, सब पता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी भी जीव को पानी में फेंका जाता है तो वह तुरंत तैरना शुरु कर देता है या जंगल में जंगली जानवर अपने सूंघने की शक्ति से जड़ी–बूटियां खाकर अपनी बीमारी को ठीक कर लेता है। वह यह सब कुछ इसलिए कर पाता है कि क्योंकि उसके पास नैसर्गिक ज्ञान है। परंतु दूसरी तरफ मनुष्य का बच्चा पैदा होते ही ना तो चल पाता है, ना ही खा पाता है, न ही बोल पाता है। मनुष्य को जब तक तैरने का प्रशिक्षण न दिया गया हो तब तक वह तैर नहीं सकता है। अर्थात मनुष्य के पास जितना भी ज्ञान है वह अर्जित है। मनुष्य को सर्वप्रथम यह ज्ञान होना चाहिए कि मैं कौन हूं? आम तौर पर मनुष्य का परिचय उसके स्थूल शरीर से दिया जाता है किंतु वास्तविक रुप में पंचतत्व से बना मनुष्य का यह शरीर तो एक माध्यम है जिसके द्वारा आत्मा कार्य करती है। आत्मा की तीन ताकतें हमेशा कार्य करती रहती हैं।

1 बुद्धि, 2 मन, 3 संस्कार

प्रायः सभी लोग यह महसूस करते हैं कि आत्मा कभी कोई गलत कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं करती है। जब हमारा मन चंचलता दिखाता है तो हमारी अंतर्रात्मा से यह आवाज आती है कि गलत कार्य न किया जाए किंतु जब मन आत्मा पर भारी हो जाता है तो मनुष्य गलत कार्य भी कर बैठता है। मन को काबू करने के लिए इसके प्रबंधन के तीन पहलू हैं। पहला पहलू है विचार–

विचार ही हमारे शब्द बनते हैं।
हमारे शब्द ही हमारे कार्य बनते हैं।
हमारे कार्य ही हमारी आदत बनती है।
और हमारी आदतें ही हमारा चरित्र बनता है।

इसलिए विचारों को परखना, उनको समझना तथा तद्नुरुप कार्य करना ही ज्ञान है।

यह भी देखने वाली बात है किः
विचारों की संख्या
विचारों की गुणवत्ता
विचारों के अनुसार दिशा–निर्देश

सामान्यतः प्रतिदिन हमारे मन में 35 से 40 हजार विचार आते हैं ।

ये विचार मुख्यतः इस प्रकार होते हैं ।

1 सकारात्मक विचार– प्यार खुशी, प्रसन्नता और दया आदि से संबंधित विचार
2 नकारात्मक विचार– अहंकार या अभिमान, क्रोध, स्वार्थ, और कमजोरी भय आदि
3 आवश्यक विचार– दिन प्रतिदिन के कार्य के लिए चुने गए विचार
4 व्यर्थ विचार – अधिकतर बीते समय के विचार

विचारों की उपादेयता– विचारों में सुधार लाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिएः

स्वयं को पहचानना, स्वयं की सहृदयता, संतुलित जीवन

अध्ययनों से पता चलता है कि महाभारत काल से पूर्व का युग सत्य, अहिंसा, न्याय, सदाशयता, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग, बलिदान, प्रेम, उपकार, साधना, भक्ति, वीरता, शौर्य, कौशल, धैर्य, आत्मस्वाभिमान, आत्मनिर्भरता, आत्मबल, संस्कारयुक्त और प्रकृति प्रेमयुक्त युग था। महाभारत उत्तरकाल इसके ठीक विपरीत काल था, जब मानव मस्तिष्क सृजनशील बना। उसके इस छोड़कर विनाश की ओर कदम बढ़ाने लगा। वह महालक्ष्मी या लक्ष्मी को छोड़कर अलक्ष्मी की ओर बढ़ने लगा।

शास्त्र कहता है कि
अलक्ष्मी विनाश लाती है।
लक्ष्मी विलास लाती है जबकि

महालक्ष्मी विकास लाती है, क्योंकि जो अनीति से आए, वह अलक्ष्मी। जो नीति से आए वह लक्ष्मी और जो नीति, प्रीति और रीति से आए उसे महालक्ष्मी कहते हैं।

आज इस अलक्ष्मी से भौतिकवादी युग में व्यक्ति के पास खाने के लिए भोजन तो है, परंतु भूख नहीं।

सोने के लिए बिस्तर तो है पर, नींद नहीं
रहने के लिए घर तो है पर, सुकून नहीं।

यह भी सच है कि पैसे से दवा तो खरीदी जा सकती है, परंतु सेहत नहीं

पैसे से घड़ी तो खरीदी जा सकती है परंतु, समय नहीं।
पैसे से साथी खरीदा जा सकता है परंतु, दोस्त नहीं।

जब रीति नहीं होगी तो प्रीति नहीं होगी और प्रीति नहीं होगी तो नीति नहीं होगी और इनके बिना पैसा बनाया जाएगा तो जरा सोचिए कि वह पैसा अपना क्या असर छोड़ेगा।

जब ये तीनों होते हैं तब आत्म–स्वाभिमान जगता है, जब आत्म–स्वाभिमान जगता है तो आत्मनिर्भरता

बढ़ती है और जब आत्मनिर्भरता बढ़ती है तो ईमानदारी का भाव पैदा होता है और जब ईमानदारी का भाव पैदा होता है तब ऐसी स्थिति में कर्तव्यनिष्ठा और मेहनत की भावना पैदा होती है ।

सच यह भी है कि इस शरीर को जितना कष्ट दोगे यह शरीर आपको उतना ही आराम देगा और इस शरीर को जितना आराम दोगे यह शरीर आपको उतना ही कष्ट देगा। इन सब चीजों को जानने के लिए यह जानना जरुरी है कि मनुष्य क्या है और उसके जीवन का उद्देश्य क्या है? क्या उसको भौतिकवाद का क्षणिक आनंद चाहिए या परमानंद चाहिए जहां केवल सुख और शांति है, प्यार है, शुद्धता है। हमारा दृष्टिकोण हमारे व्यक्तित्व को बनाने में महत्वंपूर्ण भूमिका अदा करता है। सकारात्मकता से आत्मविश्वास, आशावादिता, सरलता, सुगमता, मधुरता व समरसता का वातावरण पैदा होता है। इससे हमारा चयन सम्यक होता है। सम्यक चयन से सम्यक परिणाम आते हैं। सम्यक परिणाम से सम्यक जीवन बनता है। सम्यक विचारों से श्रेष्ठतम जीवनशैली बनती है।

श्रेष्ठतम समय कौन सा है – अभी इसी वक्त
श्रेष्ठतम अवसर कौन सा है – यही जो हाथ में है
श्रेष्ठतम दिन कौन सा है – आज का दिन
श्रेष्ठतम अवसर कौन सा है – अभी प्राप्त अवसर

अतः कुछ भी अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य को करने के लिए अवसर हमें ढूंढना पड़ता है। विचारों के सम्यक प्रबंधन से शुभ अवसर बनते हैं। इसी से श्रेष्ठतम कार्य किए जा सकते हैं।

सकारात्मकता : जीवन में कुछ भी प्राप्त करने के लिए ज्ञान तथा कौशल के साथ–साथ अभिरूचि (attitude) शब्द का अहम महत्व है। इस शब्द की व्याख्या इस रुप में भी की जा सकती है।

A–	01	T–	20
T–	20	I–	09
T–	20	U–	21
D–	04	E–	05

अंग्रेजी के उपर्युक्त ATTITUDE शब्द का एल्फाबेट काउंट 100 ही क्यों आता है? यह एक विचारणीय विषय है। क्योंकि अगर हमारा ATTITUDE सकारात्मक होता है तो उसका परिणाम पूर्णतः सकारात्मक ही होता है, लेकिन ATTITUDE के नकारात्मक होने का परिणाम नकारात्मक ही होता है।

इसे हम एक उदाहरण से ज्यादा स्पष्ट तरीके से समझ सकते हैं। मान लीजिए किसी विद्यार्थी को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम 50 अंक चाहिए और किसी विद्यार्थी ने 49 अंक प्राप्त किए तो वह पास हुआ कि फेल? इसका सीधा जबाब यह कि वह विद्यार्थी जो 49 अंक प्राप्त करेगा फेल माना जाएगा।

विद्यार्थी द्वारा प्राप्त 49 अंक में उसके 01 से लेकर 49 की मेहनत का परिणाम शून्य निकला।

दूसरी तरफ जिस विद्यार्थी ने 50 अंक प्राप्त किए वह पास हुआ तथा उसके 50 अंक तक की मेहनत का परिणाम पास होने के लिए शतप्रतिशत है।

इस तरह हमारा नजरिया ATTITUDE भी है। यदि हमारा ATTITUDE नकारात्मक होगा तो हमारे व्यक्तित्व में छिपी कई अच्छाइयों का परिणाम शून्य के समान है। परंतु यदि हमारा ATTITUDE सकारात्मक होगा तो हमारे व्यक्तित्व की नकारात्मक चीजों का परिणाम भी सकारात्मक ही होगा ।

सकारात्मक नजरिया सिखाएगा कि जीवन में जो भी घटित होता है वह अच्छे के लिए होता है।

क्षमा करना सीखिए। महावीर जैन भी यही कहते हैं कि क्षमा वीरस्य भूषणम। बहादुर वही व्यक्ति है जो क्षमा करना जानता हो। क्षमा करना भी तभी आएगा जब नियमित, संयमित और सहिष्णु वाला जीवन अपनाया जाएगा।

महात्मा बुद्ध के संपूर्ण जीवन के अनुभव से निकली इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अप्प दीपो भवः अर्थात अपना दीपक स्वयं बने। अपना दीपक स्वयं बनने के लिए सदज्ञान होना आवश्यक है। सद्ज्ञान के लिए परख कर सदगुरू को ढूंढने की आवश्यकता है। सद्ज्ञान से विचारों को उचित दिशानिर्देश मिलते हैं।

राजयोग भी ज्ञान द्वारा ही प्राप्त होता है। सद्ज्ञान से पवित्रता आती है। पवित्रता का कोई स्वरुप नहीं है और वह जन्म और मृत्यु के आवागमन से मुक्त है। वह परमानंद का स्रोत है और वह सदैव सबके लिए सहायता और मार्गदर्शन के लिए मौजूद है। वह माता–पिता, मित्र और विवेकी मार्गदर्शक है।

ईश्वरीय और सद्ज्ञान की एक परिणति इस रुप में भी देखी जा सकती है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वभम देव–देव।

पूर्ण से ही पूर्ण की उत्पत्ति

अरविन्द चौधरी*

एक ऐसी प्रार्थना है जो हम सब नित्य प्रातः और सांय करते ही होंगेः

पूर्णमदः पूर्व मिदं पूर्णात पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते।।

कमाल का मंत्र है यह जो पूरे धर्म का सार कुछ शब्दों में व्यक्त कर देता है। ईशावास्य उपनिषद् का प्राण है, यह मंत्र जो ऋगवेद से लिया गया है। भारत में दर्शन की कमी नहीं। प्रत्येक शास्त्र को पढ़ना जानना संभव नहीं। इसीलिए गुरूकुल में ''**प्रस्थानत्रयी**'' सबसे पहले पढ़ाई जाती थी जिसमें उपनिषद, ब्रहा सूत्र और भगवद्गीता तीन ग्रन्थ शामिल थे। वेदान्त के ये तीन स्तम्भ थे जिस पर पूरी शिक्षा आधारित थी। सभी मुख्य विषय ज्ञान, कर्म, भोग तत्व –मीमांसा, जीवन जीने की कला एवं मोक्ष इनसें जाने जा सकते थे। इनमें प्रमुख थे उपनिषद् जिसमें विविधता थी और उपनिषदों का यह मंत्र ईशावस्य का आह्वान है जिसे स्तुति मंत्र भी कहा जाता है। ज्ञानी लोग तो कहते है ईशावस्य को पढ़ लिया तो सब जान लिया और इस मंत्र को जान लिया तो ईशावस्य भी पढ़ने की आवश्यकता नहीं।

इस मंत्र में तीन बातें मुख्य हैं, जिसमें पूरा का पूरा तत्वज्ञान समा गया है। ये तीन बातें हैः

– सृष्टि में यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है।
– पूर्ण से ही पूर्ण की उत्पति होती है
– पूर्ण से पूर्ण निकले तो तो शेष भी पूर्ण रहता है।

ब्रह्माण्ड में तीन सत्य ऐसे जिन्हें ''ऋत'' कहा जाता है, जो कभी बदलते नहीं– परमात्मा, आत्मा और प्रकृति। अद्वैतवादी मानते है कि परम सत्य तो एक ही है और वो है, परमात्मा। आत्मा और प्रकृति तो उसी परमात्मा की अभिव्यक्ति है। इस अनन्त ब्रहाण्ड की आत्मा के रूप में प्रकट हुआ ईश्वर और पिण्ड की आत्मा के रूप में अभिव्यक्त हुए जीव मं तत्वतः कोई न्यून या अधिक नहीं है। दोनों पूर्ण हैं।

यह विराट विश्व उसी की महिमामात्र है। वह पुरूष इससे परे, इससे महान है। पूर्ण परमात्मा से उत्पन्न यह विश्व भी पूर्ण है क्योंकि पूर्ण से कभी अपूर्ण उत्पन्न नहीं हो सकता। इसी प्रकार अपूर्ण से भी पूर्ण उत्पन्न नहीं हो सकता। एक माँ जब सन्तान को जन्म देती है तो वह पूर्ण ही रहता है और माँ का भी कुछ नहीं घटता। जो एक तीली में आग है वही प्रचण्ड अग्नि में पाई जाती है। तत्वतः उनमें कोई अन्तर नहीं। यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है।

जब पूर्ण से ही पूर्ण का आविर्भाव होता है तो मेंरे भीतर अपूर्णता की अनुभूति क्यों होती है? क्यों मैं अपनी न्यूनताओं और दुर्बलताओं को सोच कर व्याकुल हो जाता हूं? मुझमें खालीपन क्यों महसूस होता है जब संसार के एक कोने को भी पर ब्रहा रीता नहीं छोड़ता? शायद मेरी आत्मा ही सोई हुई है।

जिस दिन हम जागेंगे, उस पूर्णतः को पा लेंगे। उस दिन हम शत क्रतु हो जायेंगे। यजुर्वेद में एक मंत्र है– ''**पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुरनापत**''। परमात्मा से प्रार्थना है– ''**हे मेरी जीवन दर्वि (पात्र) पूर्ण हो–हो कर आपूर भर–भर कर परे गिर**''। थामस एलवा एडीसन ने कहा था कि प्रतिभाशाली व्यक्ति में एक प्रतिशत प्रेरणा और निन्यानवे प्रतिशत पसीना (श्रम) रहता है। जागृति बिना कर्म के अधूरी है। किन्तु प्रेरणा पहले है क्योंकि इसके बिना मनुष्य उस दिशा में बढ़ेगा ही नहीं। पहला कदम ही किसी लक्ष्य की और तभी बढ़ता है जब मनुष्य यह समझ लेता है कि परमात्मा ने उसे पूर्णता प्रदान की है। कुछ असंभव नहीं। उंचाईयों को छूना है और अलग कर दिखाना है तो इसी सकारात्मक सोच से आगे बढ़ना होगा। अफसोस तो यही होता है कि हम छोटी–छोटी बातों में ही स्वय को उलझा देते है। यदि गैर जरूरी बातें जीवन में जुड़ जाती है तो सपूर्ण शक्ति वहीं व्यय हो जाती है। ऐसे लोग लक्ष्य को क्या पायेंगे? जब हमारा मन शुद्ध, पवित्र और समाहित हो जाता है तब वह पूर्ण प्रबुद्ध कहलाता है। मनुष्य की सद्इच्छाओं से ही शरीर अपनी शक्ति, क्षमता और सामर्थ्य बढ़ाता हुआ तदानुसार कर्म करता है। आधे–अधूरे लोग कभी भी लक्ष्य को नहीं पाते और आधे–अधूरे ही अपने जीवन से कूच कर जाते है। ईशावास्य उपनिषद् में एक मंत्र आया है जो कि अक्सर मृत्युशय्या पर पड़े व्यक्ति के समक्ष बोला जाता है। इसका अर्थ है– '**ऐ मनुष्य जिस समय तरे भीतर से अंतिम श्वास बाहर आएगा तब तेरी आत्मा भी शरीर को छोड़ देगी। तब यह मृत शरीर भस्म के हवाले कर दिया जाऐंगे। इस लिए तूं अब सोच कि तूने क्या किया और अगली यात्रा पर क्या करना है**''

लक्ष्य प्राप्ति कोई दौड़ नहीं, कोई महत्वकाक्षाओं की पूर्ति नहीं। यह तो अपना आनन्द है। तुलसी दास ने कहा था– ''**स्वान्तः सुखाय**.....''। उपनिषद् ने तो

* समूह महाप्रबंधक (कार्मिक), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

और एक कदम आगे रखकर यह कहा–''**रसौ वे सः**'' जिसका अर्थ है कि **जिसमें रस आए वह ही परमात्मा है**। उसी कार्य में आपकी परिपूर्णता है। इसलिए कबीर ने भी कहा है– **कहे कबीरा मैं पूरा पाया**'' क्योंकि पूर्णता में ही सद्गति है। आचार–विचार में भिन्नता हमें कहीं का न छोड़ेगी।

मन से, वचन से और कर्म से हमें एक होना होगा।

पूर्णता की अवधारणा भारतीय दर्शन में कई जगह देखने को मिलती है। **अयमात्मा ब्रहां, तत्वमसि, सोऽहमस्मि, शिवोऽहं, अहम् ब्रहास्मि** जैसे महावाक्य कुछ और नहीं पूर्ण से पूर्ण का संबंध व्यक्त करते है। शिवसूत्र में तो स्पष्ट रूप से कहा– ''**जो वो है, वही मैं हूं**'' । हमारे ऋषि मुनि ही ऐसी साहसिक घोषणा कर सकते थे। फिर भी यदि हमें पूर्णता का भान नहीं होता, यदि कष्टों से त्राण नहीं पाते तो इसका एकमात्र कारण हमारा अज्ञान और अहंकार है।

जो जानते है, इस मंत्र द्वारा उनके हिसाब से बात पूरी हो गई। जो नही जानते है उनके लिए सिर्फ शुरू होती है। एक बार इस मंत्र को जान लिया उसके बाद कुछ नया मिलने वाला भी नहीं।

पूरब और पश्चिम के सोचने में भेद है। दो तरह के तर्क है। पश्चिम में हम खोजते हैं सत्य को। सत्य की खोज पहले होगी, विधि पहले होगी, प्रक्रिया पहले होगी और निष्कर्ष अंत में हाथ आएगा। पूरब विशेषतौर से भारत में ठीक उलटा है। हम जिस सत्य को खोजते है वह पहले से ही मौजूद है। जब हम नहीं थे तब भी वह सत्य मौजूद था। सत्य सिर्फ हमारे अनुभव में प्रकट होता है, निर्मित नहीं होता। जिस सत्य का उद्घाटन होगा, वह सत्य नहीं। पूरब में तो पहले उदघोषणा कर दी कि यह सत्य है और जो इतने से समझ ले, अच्छा है वरन् ईशावास्य उपनिषद् जैसी कई पुस्तकें विस्तार से पढ़नी और समझनी होगी।

गुरजियफ के शिष्य थे, पी.डी. आस्पेंस्की जिन्होंने एक पुस्तक लिखी ''**टर्शियम आर्गानम**''। उन्होंने इस पुस्तक के प्रारंभ में एक खूबसूरत बात कही– ''ज्ञान के सिद्धांत पर लिखी गई मेरी तीसरी पुस्तक है। पहली ''**आर्गानम**'' के नाम से अरिस्टोटल (अरस्तु) ने लिखी और ''**नोवम आर्गानन**'' के नाम से रोज़र बैकन ने।'' उन्होंने आगे कहा– ''जो सत्य मैंने इस तीसरी पुस्तक में उजागर किया, वह पहली पुस्तक से भी पहले था।'' हम कोई नई बात नहीं कहते, सिर्फ अपने अनुभव से जान लेने के बाद अभिव्यक्त करते है। आइंस्टीन इस मंत्र में कही बात को शायद न समझ पाए क्योंकि किसी मे से कुछ निकालने पर उतना रह ही नही सकता। किन्तु मीरा इस मंत्र के संदेश को बखूबी जानती है जहां देने से कुछ नहीं घटता, दुनिया में जो भी मापने योग्य (मेजरबल) है निकालने पर कम होगा। किन्तु दो चीज़े ऐसी है, प्रेम और ज्ञान जो बांटने से कभी कम नहीं होंगे। ईर्ष्या–द्वेष का मुख्य कारण है कि कोई दूसरा मुझे मिलने वाले प्रेम को कम न कर दे।

पूर्ण का एक और उदाहरण है, आकाश (Space)। यह घटता–बढ़ता नहीं। यदि एक महल बनाया जाए तो आकाश कम न होगा। महल गिरा दें तो आकाश बढ़ न जाएगा। आकाश का अर्थ ही है– जिसमें सब है और जो किसी में नहीं। आकाश दो नहीं हो सकते। इसी लिए जो कहते है कि हम इस ''जगत में'' आए है, गलत है। हम इसी ''जगत से'' उत्पन्न हुए है। दो आकाश नहीं तो दो जगत भी नहीं। जब जगत दो नहीं, एक है तो यह घट–बढ़ भी नही सकता और जो घट–बढ़ नहीं सकता वही तो पूर्ण होगा।

अभी तक उपरोक्त अनुच्छेदों (Paragraphs) में मंत्र का अर्थ कहा गया था। अब हम इसका अभिप्राय या भाव भी जान लें। यह सृष्टि असीम है इसका कोई छोर नहीं फिर भी पूर्ण है। कैसे पूर्ण से पूर्ण निकलता है और कैसे पूर्ण में पूर्ण वापस लौटता है, तर्क द्वारा समझा और समझाया नहीं जा सकता और पूर्ण की कोई व्याख्या नहीं। पूर्ण या जीवन अतर्क्य है, अव्याख्य है। एक कवि हुए स्टीन जिन्होंने अपनी किसी कविता में कहा कि एक गुलाब एक गुलाब एक गुलाब है। इसका अर्थ हुआ कि जो जैसा है वैसा है। (Thing in itself)। जो आप हैं, सो है और यही आपका परिचय है।

जीवन का क्षुद्रतम तथ्य भी अव्याख्य है। इसी लिए जीवन को खुला रहस्य (Open Secret) कहा जाता है। जीवन बिल्कुल खुला है, आँखों के सामने है, फिर भी रहस्य है। जीवन तर्कातीत है, ढूंढने से नहीं मिलने वाला। इसका उद्घाटन तो स्वयं करना होगा। इसकी जीने की कोई विधि (Method) भी नहीं। व्याख्याएं बदलती रहेंगी, नियम बदलते रहेंगे, विधियां बदलती रहेंगी क्योकि जीवन प्रतिक्षण बदलता है। जियेंगे कब? व्यर्थ की रूकावटे हमें दूर करनी हैं।

परमात्मा में आस्था, स्वयं में विश्वास और जीवन में श्रद्धा जीने के लिए परम आवश्यक है। इन पर संदेह नहीं किया जा सकता। जीवन में संदेह करना आज एक संभ्रांत लोगों के व्यवहार का हिस्सा बन गया है– चाहे अपने पर, चाहे दूसरों पर। कभी अपने संदेह पर भी संदेह करो। श्रद्धा दो प्रकार से आती है। पहले संदेह मत करो और दूसरे यदि संदेह है तो संदेह पर भी संदेह करो। यह सूत्र श्रद्धा का सूत्र है कि पूर्ण से ही पूर्ण उत्पन्न होता है। कहीं कोई कमी नहीं, वही है अकेला, कोई दूसरा नही। सीमाएं तो दूसरे से बनती है। पूर्ण से पूर्ण आया और पूर्ण में ही लीन होगा। बीच में आता है अपूर्ण जो हमारी मन–बुद्धि का खेल होता है। अच्छा होगा बस हम इसे समझ लें ताकि इस पूर्ण के अनुभव से हमें पूर्णता मिले।

धैर्य कड़वा है लेकिन इसका फल मीठा है।

राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिंदी

डॉ. मीना राजपूत*

भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। विचारों के आदान–प्रदान के लिए मानव समाज में भाषा की अनिवार्यता सर्वोपरि है। अपने दैनिक व्यवहार में हर व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत पसंद–नापसंद के आधार पर भाषा का प्रयोग करता है, जो उसके व्यक्तित्व की पहचान होती है।

राष्ट्रभाषा संपूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है और पूरे राष्ट्र की संस्कृति, प्रगति व कार्य–नीति का आइना होती है। राष्ट्रभाषा की भूमिका केवल संचार–संवाद तक ही सीमित नहीं होती, बल्कि वह देश की एकता, अखण्डता और संस्कृति की भी परिचायक होती है, इसलिए राष्ट्रभाषा के विषय में सजग, सतर्क और संवेदनशील होना जरूरी होता है। किसी राष्ट्र की राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो सरल हो, आसान हो और अधिकाधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जाती हो। इसके अलावा, उस भाषा के द्वारा देश का धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार सरलता से होता हो।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। यह जन–जन के विचार–विनिमय का माध्यम है और देश के विभिन्न समुदायों के बीच भावनात्मक एकता की कड़ी है। इसके माध्यम से किसी भी बात को सहजता, सरलता और पूर्ण सक्षमता से अभिव्यक्त किया जा सकता है। सामाजिक व सांस्कृतिक स्तर पर हिन्दी व देश को जोड़ने का काम करती है और यह इतनी व्यापक व लचीली है कि जनता के अनुरूप किसी भी रूप में ढल जाती है। हिन्दी भाषा में हमारा पूरा देश झलकता है। यह हमारे देश की संस्कृति, परम्परा और सभ्यता को विश्व के मंच पर भी बखूबी प्रस्तुत करती है।

मातृभाषियों की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का स्थान तीसरा है। भारत के अलावा अफगानिस्तान, कनाडा, गुयाना, ट्रिनीडाड,दक्षिण अफ्रीका, नेपाल, फिजी, बर्मा, बांग्लादेश, भूटान, मारिशस, यूगांडा, सूरीनाम जैसे अन्य कई देशों में हिन्दी बोली जाती है। विश्व के करीब 126 देशों में हिन्दी विषय का अध्ययन–अध्यापन होना हिन्दी भाषा की महत्व व लोकप्रियता का ठोस प्रमाण है।

देश के इतिहास पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि सम्पर्क भाषा के अभाव के चलते 1857 की क्रान्ति की विफलता के बाद देशभर में लोकप्रिय व सबसे ज्यादा प्रचलित हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने पर विचार किया जाने लगा था और हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित करने की दिशा में प्रयास तेज किए जाने लगे थे। हिन्दी प्रेम की भाषा है, हिन्दी अभिव्यक्ति का स्रोत है, हिन्दी संपर्क सूत्र है, हिन्दी देश की एकता की कड़ी है, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, हिन्दी राष्ट्रीय विकास का आधार है..... आदि हिन्दी से सम्बन्धित सूक्तियों तथा कथनों के माध्यम से महापुरुषों, प्रबुद्ध लेखकों, राजनीतिज्ञों, हिन्दीतर भाषा–भाषियों द्वारा हिन्दी के प्रति आत्मिक आस्था, प्रगाढ़ प्रेम व अटूट विश्वास के भाव व विचार अभिव्यक्त किए जाने लगे थे।

महात्मा गांधी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के सबसे बड़े समर्थक थे। स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी का बखूबी इस्तेमाल कर उन्होंने उसे पूरे भारत में प्रचलित किया था। स्वदेशी आंदोलन में तो उन्होंने अंग्रेजी का पूर्ण रूप से त्याग कर हिन्दी को अपनाया था। उनका कहना था कि– ''राष्ट्रभाषा की जगह मात्र हिन्दी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं। ''क्रान्तिकारी लोकमान्य'' बाल गंगाधर तिलक ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की जोरदार वकालत करते हुए कहा था– ''सरलता और शीघ्र सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिन्दी ही सर्वोपरि है।'' 'नेताजी' सुभाष चन्द्र बोस ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने के बारे में अपना मत दृढ़ता से रखते हुए कहा था– ''देश के सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।'' लाल बहादुर शास्त्री का कहना था, ''देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है। ''पंडित मदनमोहन मालवीय के तो मानो राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और राष्ट्रभाषा हिन्दी सम्भवतः यही दो परम

* सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लेगों का भी दिल जीता जा सकता है।

लक्ष्य थे। वीर सावरकर ने अंडमान कारागृह से ही हिन्दी भाषा के प्रचार का महत्वपूर्ण कार्य किया था। उनका मत था कि ''देश के सर्व भागों के लोगों को जोड़ने वाली एक भाषा हो तथा वह देवनागरी लिपि की 'हिन्दी' ही हो। ''उनका कहना था कि 'विशिष्ट प्रसंगों में यदि किसी को कोई भेंट देने का मन करे तो हिन्दी पुस्तकें भेंट स्वरूप देनी चाहिए।''

'आर्य समाज' के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती, 'ब्रह्म समाज' के संस्थापक राजा राममोहन राय और 'सनातन धर्म समाज' के संस्थापक गोस्वामी गणेश दत्त ने मन, वचन और कर्म से हिन्दी की सेवा की थी, जिससे हिन्दी को एक नई गति, एक नई चेतना तथा नवजीवन मिला था। भारतेंदु हरिशचन्द्र, मुंशी प्रेमचन्द्, जयशंकर प्रसाद, हरिशंकर परसाई, महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन, सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे लेखकों और कवियों ने हिन्दी के माध्यम से लोगों के हृदय में आजादी की अलख जगाकर स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इस तरह स्वतन्त्रता सेनानियों, राजनीतिज्ञों, सामाजिक और धार्मिक नेताओं, साहित्यिक संस्थाओं आदि सभी के सम्मिलित प्रयासों से हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन हुई थी।

स्वतन्त्रता के बाद 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि स्नेह, सहयोग, सहानुभूति एवं संवेदना की भाषा हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। राजभाषा उस भाषा को कहते हैं जिसे संघ अथवा कोई राज्य अथवा सरकार विधि द्वारा अपने सरकारी काम–काज में प्रयोग के लिए स्वीकार कर ले। यह किसी राज्य में एक से अधिक भी हो सकती है। प्रायः राष्ट्रभाषा ही किसी देश की राजभाषा होती है। 26 जनवरी, 1950 को महान संविधान देशभर में लागू हो गया। देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसमें यह भी निश्चय किया गया कि धीरे–धीरे हिन्दी राजभाषा के रूप में अंग्रेजी का स्थान लेती जाएगी और 1965 तक अंग्रेजी का स्थान हिन्दी पूर्णतया ले लेगी। राज्यभाषा विभिन्न राज्यों में राजभाषा के रूप में रहेगी, किंतु अखिल देशीय और विभिन्न राज्यों व केंद्र के पारस्परिक व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने व हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के उद्देश्य से राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को सम्पूर्ण भारत में 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय संविधान में राज्यों और केंद्र प्रशासित प्रदेशों के लिए हिन्दी के अतिरिक्त फिलहाल 21 अन्य भाषाएं हैं, यथा– असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मराठी, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगू, उर्दू, सिंधी, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली, बोडो, डोंगरी, मैथिली और संथाली जो राजभाषा के रूप में स्वीकार की गई हैं। इस प्रकार संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल सभी 22 भारतीय भाषाओं को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान प्राप्त है। राज्यों की विधानसभाएं बहुमत के आधार पर किसी एक भाषा को अथवा चाहे तो एक से अधिक भाषाओं को अपने राज्य की राजभाषा घोषित कर सकती है।

राजभाषा के गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद प्रयोजनमूलक हिन्दी, जो कि प्रशासनिक हिन्दी, कार्यालयी हिन्दी, व्यावहारिक हिन्दी, कामकाजी हिन्दी के नाम से भी जानी जाती है, के कार्यों का महत्वपूर्ण दायित्व हिन्दी को प्राप्त हुआ। राजभाषा का उत्तरदायित्व ग्रहण करने के बाद हिन्दी भाषा साहित्य से इतर प्रशासन, वाणिज्य, विज्ञान, न्याय, जनसंचार, विज्ञापन की भाषा बन गई। इसी के साथ केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारें एवं जनता सभी एकजुट होकर हिन्दी के विकास के लिए भगीरथ प्रयत्न करने में जुट गए। हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए सरकारी कार्यालयों में हर सम्भव प्रयास किए जाने लगे। राजभाषा के प्रचार–प्रसार, विकास के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गईं।

हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी, हिन्दी टाइपिंग, हिन्दी आशुलिपि, अनुवाद, कम्प्यूटर आदि में प्रशिक्षित कर उन्हें हिन्दी में कार्य करने के लिए सक्षम बनाने का कार्य किया जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत लाखों अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिए पारंगत किया गया है और यह कार्य अब भी जारी है।

चूँकि प्रयोजनमूलक हिन्दी का अस्तित्व जनभाषा, राष्ट्रभाषा, साहित्यिक भाषा से अलग है इसलिए इसकी संरचना और शब्द संपदा भी अलग है। डॉ. विनोद गोदरे के अनुसार– ''प्रयोजनमूलक हिन्दी का सम्प्रेषण अधिक सन्दर्भ–संगत, अर्थ–गर्भित, लक्ष्य–भेदी, स्पष्ट

तथा सरल है। ''साहित्यिक या सामान्य हिन्दी की तरह इसमें लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता, आलंकारिकता और बहुअर्थता नहीं होती। सौंदर्यपरकता, आत्मकेन्द्रीयता, आत्म–सुख का इसमें अभाव होता है, इसलिए आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के सम्प्रेषण के लिए हिन्दी भाषा व साहित्य के विकास के साथ हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली का भी विकास किया जा रहा है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में शब्दावली की मानकता, एकरूपता और सर्वत्र स्वीकार्यता की दृष्टि से विषयों के विशेषज्ञों एवं भाषाविदों द्वारा सभी राज्यों के साथ समन्वय कर नई संकल्पनाओं के लिए सरल, प्रभावी, एकार्थी, सर्वसम्मत शब्द लाखों में गढ़े जा रहे हैं। पारिभाषिक व तकनीकी शब्दावलियाँ प्रकाशित व प्रचालित की गई हैं।

शब्द–सम्पदा के आदान–प्रदान में हिन्दी ने भी उदारता और अनन्यता का परिचय दिया है। सैंकड़ों वर्षों तक विदेशी शासन में रहने तथा शुद्धिकरण जैसी बाध्यता हिन्दी के साथ नहीं होने के कारण हिन्दीं भारतीय भाषाओं के साथ विदेशी भाषाओं से शब्द ग्रहण कर अपनी शब्द–सम्पदा निरन्तर बढ़ा रही है। हिन्दी के अधिकतर शब्द संस्कृत, अरबी, फारसी भाषा से लिए गए हैं। इसके साथ ही हिन्दी ने अपने में तत्सम् तद्भव, देशज, विदेशज सभी शब्द आत्मसात किए हैं, जो चलन में भी हैं। विदेशी शब्दों में विदेशी संस्थाओं, जैसे– कचहरी, फौज, स्कूल, धर्म आदि से सम्बन्धित शब्द तथा विदेशी प्रभाव के कारण आयी नई वस्तुओं के नाम, जैसे– खाने, खेल, पहनावे, यंत्र आदि की वस्तुओं के नाम हिन्दी में आए हैं और गांवों की बोली तक में सम्मिलित हो गए हैं। तुर्की से आए शब्द– आक़ा (मालिक), उजबक (मूर्ख), कलगी, कुली, कैंची, खातून (स्त्री), खानुम (स्त्रीण), गलीचा, चाकू, चिक, तोप, दरोगा, बहादुर, बावर्ची, बीबी, बेगम, लाश, सौगात आदि। पुर्तगाली शब्दों– अचार, अलमारी, आलपिन, इस्त्री, कनिस्तलर, कमरा, कमीज, काज, गमला, गोदाम, चाबी, तंबाकू, तीला, तौलिया, नीलाम, परात, पाव, पीपा, फर्मा, फीता, बाल्टी, बिस्कुट, बोतल, मिस्त्री, मेज, लबादा, साया आदि। फ्रांसीसी शब्द– कारतूस, कूपन आदि। अंग्रेजी शब्द– अपील, ऑपरेशन, ऑर्डर, ऑफिस, इंजीनियर, इंस्पेक्टर, एजेंट, एजेंसी, एफ.आई. आर., ओवरकोट, कंपनी, कमिश्नर, कमीशन, कमेटी, कलक्टर, कांफ्रेंस, कूपन, केक, कोर्ट, क्लार्क, गजट, गार्ड, गिन्नीव, गिलास, गेट, चॉक, चॉकलेट, चिट, जज, जेल, जेलर, टब, टाइम–टेबल, टिफिन, टीम, टेंपरेचर, टेलीफोन, टोल, ट्यूब, ट्रंक, ट्राली, ट्रेन, डायरी, डिक्शनरी, डिप्लोमा, डॉक्टर, ड्रामा, थर्मामीटर, नोट, नोटिस, परेड, पार्सल, पेंशन, प्रेस, फीस, फेल, फैशन, फोटो, बटन, बूट, बोर्ड, मनी आर्डर, रेलवे स्टेशन आदि।

कई हिन्दी शब्द जो ग्लोबल होते जा रहे हैं और अंग्रेजी शब्दकोशों व भाषा की शोभा बढ़ा रहे हैं। कुछ दार्शनिक और धार्मिक शब्दों– आर्गन, गुरु, चक्र, धर्म, निर्वाण, पंडित, पर्दा, मंडल, योग, सती, सूत्र, स्वास्तिक आदि। परम्परागत भारतीय श्रृंगार जगत के शब्द अंग्रेजी, पुर्तगाली और फ्रेंच जैसी भाषाओं को भी अपने अलौकिक सौंदर्य से संवार रहे हैं, यथा– कमरबंद, धोती आदि। भारतीय लजीज व्यंजन से सम्बन्धित शब्द भी लोकप्रिय हो रहे हैं, उदाहरणार्थ– करी, घी आदि।

हिन्दीं में अनुवाद का काम भी बहुत हुआ है। अनुवाद दायित्व का निर्वाह करते हुए हिन्दी ने एकता, अखण्डता व मानवीयता का मार्ग प्रशस्त किया है। सम्पर्क एवं सम्प्रेषण क्षमता से पूर्ण हिन्दी ने समस्त भाषाओं के साहित्यिक सौंदर्य, सांस्कृतिक चिंतन को अनुवाद के माध्यिम से प्रतिबिंबित किया है और सांस्कृतिक सेतु निर्माण का पावन कार्य किया है। विविध भारतीय भाषाओं के साहित्य का अनुवाद कार्य निरन्तर जारी है।

देश भर में हिन्दी की लोकप्रियता व ग्राह्यता का ही परिणाम है कि हिन्दी लोकप्रिय विज्ञापनों की भी भाषा है। अपनी शब्द निर्माण क्षमता, सहज व प्रभावकारी सम्प्रेषणीयता, जनता पर सीधे और तेज असर के चलते ही आज पहले से कहीं गुना ज्यादा विज्ञापन हिन्दी में दिखाई/सुनाई देते हैं। 'उसकी साड़ी मेरी साड़ी से सफेद कैसे', 'दाग़ ढूँढते रह जाओगे', 'जोर का झटका धीरे से लगे', 'ठंडा मतलब कोकाकोला', 'जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी', 'कुछ मीठा हो जाए', 'हीरा है सदा के लिए', 'चौबीस घंटे दुनिया आपकी मुट्ठी में' ऐसे अनगिनत विज्ञापन हैं जो हरेक की जबान पर चढ़े हैं और जिन्होने हिन्दी को भारत के कोने–कोने में पहुँचाया है। आधुनिकता, सरलता, संक्षिप्तता, विशिष्टता, सांकेतिकता आदि गुणों की वजह से आज हिन्दी विज्ञापन की सशक्त, प्रभावशाली व आकर्षक भाषा बन गई है।

सूचना प्रौद्योगिकी और विपणन के दौर में कार्य का माहौल तेजी से बदल रहा है। हिन्दी के शब्द दरअसल जबरदस्त अपील रखते हैं इसलिए इस क्षेत्र में भी हिन्दी के साथ युद्ध स्तर पर नित नए प्रयोग

किए जा रहे हैं और नई ऊँचाइयों को छुआ जा रहा है। इससे हिन्दी का विकास हो रहा है, हिन्दी समाज की जीवंत भाषा बनती जा रही है और उसमें नित नया निखार आ रहा है। इंटरनेट पर ऐसी हजारों साइट्स मौजूद हैं जो हिन्दी को हर तरह से स्थापित करने का कार्य कर रहे हैं। हिन्दीं ब्लॉग की लोकप्रियता भी काफी बढ़ गई है और लाखों की संख्या में हिन्दी ब्लॉग मौजूद हैं। लोग अपने विचार इसके माध्यम से निःसंकोच प्रकट कर रहे हैं। अंग्रेजी के समाचार–पत्रों में हिन्दी के शब्द, शीर्षक, वाक्य, कटाक्ष, पंच लाइनें आज आम बात हो गई है।

विभिन्न सरकारी–गैर सरकारी कार्यालय, बैंक आदि हर क्षेत्र में कम्प्यूटर व मोबाइल दिन–प्रतिदिन के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इनके माध्यम से घर बैठे–बैठे ऑन लाइन बिल भरना, टिकट निकालना, परीक्षा देना आदि सब कुछ सरल, सुगम व सुविधाजनक हो गया है। युवा पीढ़ी भी इन आधुनिक तकनीक में अंग्रेजी–हिन्दी का मेल–मिलाप धड़ल्ले से कर रही है। लचीलापन हिन्दी की सबसे बड़ी ताकत है और इस नए तरह के मेल–जोल से हिन्दी को नया व अनूठा विस्तार मिल रहा है। चूँकि नई तकनीक में देवनागरी लिपि सार्थक, संगत और उपयोगी है, इसलिए आधुनिक तकनीक के इन क्षेत्रों में भी हिंदी ने अपना विशेष स्थान बना लिया है।

पूर्ण रूप से सक्षम, समर्थ, समृद्ध और प्रभावशाली भाषा हिन्दी आज हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई है। हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री व हिन्दी प्रेमी स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी जी ने विश्व स्तर पर संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपना भाषण हिन्दी में देकर जिस तरह हिन्दी की गरिमा को बढ़ाया और हमारे वर्तमान प्रधानमन्त्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी भी देश–विदेश में अपने भाषण हिन्दी में देकर हिन्दी को गौरवान्वित कर रहे हैं उसी तरह हम सभी हिन्दी प्रेमियों का कर्तव्य व नैतिक दायित्वं है कि हम भी हिन्दी के प्रचार, प्रसार, विकास व कार्यान्वयन के लिए हिन्दी तथा हिन्दीतर राज्यों, सरकारी तथा गैर–सरकारी क्षेत्रों और वाणिज्यिक तथा औद्योगिक क्षेत्रों में ऐसे सहज और सार्थक वातावरण का निर्माण करें कि सभी लोग हिन्दी को आत्म–गौरव तथा आत्म–सम्मान की भाषा बना लें।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्पष्ट कहा है–

निज भाषा उन्नति है, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।

आइए, हम सभी मिल जुलकर अपनी राष्ट्रभाषा व राजभाषा हिन्दी की श्रद्धा, प्रेम व पूर्ण निष्ठा से सेवा करें तथा राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य निभाएं, जिससे कि देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक स्थिति मजबूत हो और देश सम्पन्न, सशक्त, संगठित व गौरवशाली बन सके।

हिन्दी में प्रवीणता एवं कार्यसाधक ज्ञान की परिभाषा

1. **हिन्दी में प्रवीणता–** किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त हैं यदि–

(क) उसने मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या इससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी को माध्यम के रूप में अपनाकर उत्तीर्ण की है, अथवा

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समकक्ष या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को उसने एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था, अथवा

(ग) वह यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है।

2. **हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान–** किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हैः यदि उसने

(क) मैट्रिक परीक्षा या इसके समकक्ष या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण की है, अथवा

(ख) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट वर्ग के पदों के संबंध में निर्धारित कोई निम्नतर परीक्षा उत्तीर्ण की है, अथवा

(ग) यदि वह यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

कप्तान (कथा–कहानी)

शिवरानी देवी प्रेमचंद, कथा–सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जीवन–संगिनी थीं। उनके पिता का नाम मुंशी देवीप्रसाद था। शिवरानी बाल–विधवा थीं और 1905 में उनका विवाह मुंशी प्रेमचंद से हुआ। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। जिसके लिए उन्हें 1930 में 2 महीने का कारावास हुआ। ''प्रेमचंद घर में'' उनकी चर्चित साहित्य–कृति है। उनकी रचनाएं ''चाँद" व ''हंस" में प्रकाशित होती रही हैं।

ज़ोरावर सिंह की जिस दिन शादी हुई, बहू आई, उसी रोज़ ज़ोरावर सिंह की कप्तानी को जगह मिली। घर में आकर बोला ज़ोरावर अपनी बीवी से – 'तुम बड़ी भाग्यवान हो। कल तुम आई नहीं, आज मैं कप्तान बन बैठा।'

उसकी बीवी का नाम था सुभद्रा। सुभद्रा यह सब सुन करके खुश होने के बजाय चिन्तित हो गई।

ज़ोरावर– तुम तो खुश नहीं मालूम हो रही हो।

सुभद्रा– जिसको लोग खुशी कहते हैं, उस खुशी के अन्दर गम भी तो छिपा रहता है।

ज़ोरावर– कैसा ग़म! इस उमंग के दिनों में ग़म का नाम ही क्या! बहू आई शाम को, सुबह अच्छा ओहदा! इससे ज़्यादा खुशी की बात मेरे लिये और तुम्हारे लिये और हो ही क्या सकती है?

सुभद्रा– ज़रा ठण्डे दिल से सोचो कि ये दोनों खुशी की बातें नहीं हैं। मेरा आना यह भी एक तरह की ज़िम्मेदारी, तुम्हारी–मेरी दोनों की; और जो आपको ओहदा मिला इसमें भी कर्तव्य का अपना बंधन। पूरे उतरे तो सब ठीक ही ठीक है, कच्चे उतरे तो और मिट्टी पलीत हो जाएगी।

ज़ोरावर– तुम तो न मालूम क्या–क्या बातें बक गई, मेरी समझ में ख़ाक–पत्थर कुछ भी नहीं आया और ये तो बुढ़ापे के चरखें हैं सब। जवान आदमी कभी यह नहीं सोचता। क्या कर्तव्य और काम भी कोई चीज़ है।

सुभद्रा– यह तुम्हारी समझ में नहीं आयेगा। इसको बारीकी से, जो दोनों के विषय में सोचो, तो ये दोनों महँगे सौदे हैं।

ज़ोरावर– मैं यह सब नहीं सुनना चाहता तुम्हारे मुँह से। इस उम्र में कोई इन बातों को सुनना गवारा नहीं करता। मैं सच कहता हूँ तुमसे, मैंने अभी अम्मा से यह नहीं बताया कि मुझे आज यह ओहदा मिला है। मैं तो सीधा तुमको आया यह खुशख़बरी देने।

सुभद्रा– तो बता आइये माताजी से भी, बता आइए।

'अच्छा, अच्छा, मैं जाता हूँ। तुम्हारे पास तो बहुत उपदेश सुने! देखू, अम्मा भी उपदेश सुनाती हैं।'

सुभद्रा– अम्माजी सुनायें तो मुझसे कहीं ज़्यादा सुना सकती हैं, और मुझसे कहीं ज़्यादा दुनिया का ज्ञान उन्होंने पाया है।

ज़ोरावर– पूरे उम्र में तो मैं भी तुमसे ज़्यादा हूँ।

सुभद्रा– जो चीज़ तुम पुरुषों को नहीं मिली, क्या अब हमसे उधार लोगे? तुम दूसरे धातु के बने हुए हो।

ज़ोरावर– अच्छा मैं जाता हूँ।

उठ करके ज़ोरावर माँ के पास पहुँचा। माँ ने उस समय गाना करवाने के लिए गानेवालियों को बुला रखा था। माँ के पैर छूते हुए बोला– अम्मा तुम्हें खुशख़बरी सुनाता हूँ। मैं कप्तान हो गया।

माँ, बेटे की सीने से लगाकर बोली– बेटा, जो काम तुमको सौंपा गया है, ईश्वर करे उसमें तुम सफल हो।

'सफल' शब्द सुनकर ज़ोरावर अपने मन में उसे दोहराने लगा। अपने दिल से पूछता है, क्या इस शब्द में, जो सुभद्रा ने कहा है, क्या माँ के दिल में भी वही बात है? यह 'सफल' शब्द.... अगर मैं माँ से पूछने लगूं कि यह 'सफल' लफ्ज़ आपने क्यों कहा? क्या आपके मन में भी कुछ सफल–विफल होने का रहस्य है? ज़रूर इन्होंने भी इसमें कुछ माने–मतलब लगाये हैं। अगर पूछता हूँ तो वे भी मुझे उपदेश देने लगेंगी। मगर कुछ

बोला नहीं। (माँ से) अम्मा मुझे कल ही तो जाना है।

कल का शब्द सुनकर माँ कुछ दहल–सी गई। अभी कल ही तो बहू आई है घर में और कल सुबह यह चला जाएगा! माँ पर जैसे एक बोझ–सा लद गया।

रात को जब सुभद्रा के पास पहुँचा, बोला– कल तो मुझे जाना है। एक बात का मुझे अफ़सोस है कि मैं कल ही चला जाऊंगा तुम्हें छोड़कर! यह बात मुझे तकलीफ़ देती है।

सुभद्रा– सिपाही और कप्तान के लिए यह सोचना बिलकुल ग़लत बात है, क्योंकि उसकी डयूटी जो है। जहाँ ओहदा मिलता है, ओहदे के सामने मौत सर पर रहती है। जिस खुशी से आप ओहदे को गले से लगाते हैं, उसी तरह खुशी से कप्तान और सिपाही की मौत को भी गले से लगाना चाहिये। कर्तव्य के सामने विमुख होना यह बहादुर का काम नहीं है। फिर कैसी माँ, कैसी बीवी और कैसी दुनिया !

उसको तो जो काम मिला है, ड्यूटी–ड्यूटी को ठीक–ठीक अदा करना चाहिये। कहीं ज़्यादा बेहतर है कि भागा हुआ सिपाही मौत को गले से लगाये। उसके लिए तो दो ही रास्ते हैं, या तो विजय, या मौत।

ज़ोरावर का चेहरा उतर गया। अभी से ऐसी बात! बोला– क्या मैं मौत के मुँह में जा रहा हूँ? आज पचास बरस से सिपाही कप्तान मुफ्त का खाते हैं सरकार के यहाँ। वहाँ न मौत है न कुछ। मौत का निशान भी नहीं है।

सुभद्रा– अगर लड़ाई नहीं है, झगड़ा नहीं है, मुफ्त की तनख़्वाह ही खानी है, तब तो कोई बात नहीं है। अगर हो तो डयूटी आपकी यही करती है, या तो विजय, या मौत। दूसरा रास्ता नहीं आपके लिये।

ज़ोरावर– वह तो वक्त आने की बात है। आज तो इसका कोई ज़िक्र ही नहीं है और मान लो मैं लड़ाई में काम आऊँ?...

सुभद्रा– उस वक्त मैं सर ऊंचा करके चलूँगी। हाँ, आप भाग आयेंगे उस वक्त मैं आपकी सूरत देखना गवारा नहीं कर सकती ।

रात इस गपशप में बीती।

तब तक सुबह हो जाती है। और जाने का समय।

दरवाज़े पर आदमी खड़े हैं और जाने की पूरी तैयारी है। ज़ोरावर बार–बार अन्दर जाता है.... और बाहर निकलने का नाम भी नहीं लेता है।

सुभद्रा– समय हो गया, गाड़ी का समय हो गया।

ज़ोरावर– ये कम्बखत तो जैसे यम के दूत की तरह सर पर सवार हो जाते हैं। उसी समय वह जाने को जब खड़ा होता है सुभद्रा स्वयं नमस्कार देती है और आशीर्वाद देती है– जाओ और विजयी होकर आओ !

ज़ोरावर की आँखों में आंसू छलछला आये। बाहर माँ खड़ी, दही और चावल माथे से लगाते हुए बोली– जाओ बेटा, भगवान् तुम्हारा भला करे।

मुंह से ज़ोरावर के कोई आवाज नहीं निकली और चुपके से चला गया ।

एक महीना रहने के बाद ज़ोरावर फिर आया। वहाँ कोशिश करके अपने भाई के लिए जगह दिलवाई। माँ से बोला– इसको भी जाने दो, बलवान को भी।

माँ– ले जाओ, बेटा, जाओ। बलवान तो तुम्हारे जाने के बाद ही से सोच रहा था। कई बार कहा था।

'मगर साहब मेरे काम से बड़े खुश हैं नहीं तो यह जगह किसी को देते थोड़े ही जल्दी।"

यह बात सुनकर सुभद्रा मुस्कराई। वह मुस्कराहट जैसे एक व्यंग्य की थी।

ज़ोरावर– तुम्हारी हँसने की ख़ास आदत है। शायद तुम मेरी बातों पर हँस रही हो।

सुभद्रा– मैं तुम्हारी बातों पर नहीं हँस रही, मैं तुम्हारी नादानी पर हँस रही हूँ।

'तुम मुझसे उम्र में कम हो, सुभद्रा। तुमको मेरी नादानी नहीं देखनी है।"

सुभद्रा– स्वारथ जो है आदमी में, वह आदमी को अन्धा बना देता है। मुझे उस अन्धेपन पर हँसी आ रही है।

ज़ोरावर– तुम तो जैसे हम लोगों पर उधार खाये बैठी हो ।

सुभद्रा– स्वारथ छोड़कर कोई बात करे, तो उसको सब साफ़ दिखाई देता है। स्वारथ लेकर जो कोई कुछ बात करता है तो वह उसकी अन्धा बना देता है। यह बात आपको मालूम नहीं है शायद।

उन्हीं के पास बलवान भी खड़ा था। भावज की ये बातें सुनकर बोला–भाभी, जो चीजें हम लोगों को मिली हैं वह आपको नहीं मिलीं, और जो चीज़ें आपको मिली हैं वह हमको नहीं मिलीं। आप लोगों का काम है भावुकता

की सोचना और हिन्दी की चिन्दी निकालना। हम लोगों का बहादुरी का काम है। हम लोगों को लड़ना आता है और विजय करना आता है। न उस जगह हम कर्तव्य सोचने जाते हैं, न कर्म। जो ड्यूटी भैया को मिली है उसको आप देखें तो घबरा जायें । आप लोगों को घर में बैठे–बैठे हिन्दी की चिन्दी निकालना आता है।

सुभद्रा– जब करना तो कर लेना, दुनिया देख लेगी। कहने से लाभ ही क्या है !

बलवान– हाँ, हाँ, देख लीजियेगा।

सुभद्रा चुप।

'जिस रोज़ विजय करके आयेंगे, उस रोज़ मैं गर्व से फूल जाऊँगी।'

दोनों भाई दूसरे रोज़ वापस गये।

इन लोगों को गये तीन महीने भी नहीं होने पाये थे कि बर्मा में जापानियों के गोले गिरने लगे। लड़ाई के पहले ही मोर्चे पर जानेवाली फ़ौज में पहले बलवान गया। लड़ाई के वक़्त सिपाही जो गिरते हैं उनमें जिनके ज़िन्दा रहने की कुछ आशा है, उन्हें तो उठा करके ले जाते हैं, जिनको समझते हैं कि ये महीने दो महीने लेंगे उनको घोड़ों से और टापों से रौंद देते हैं।

बलवान सिंह गिरता है। ठीक निशाना लगता है। ज़ोरावर दूर खड़ा है। दूर है, मगर जैसे ही उसे बलवान के गिरने का मालूम होता है, वैसे ही ज़ोरावर बलवान की लाश के लिए लपकता है और उठाए हुए भागता है, कंधे पर लादकर। इधर देखता है न उधर देखता है। भागता है दरिया की तरफ़, जिसे कि पार करके उसे जाना है। रात का समय।

माझी पूछता है– तू कौन है!

ज़ोरावर– मैं हूँ कप्तान ।

– क्या तुम फ़ौज से भाग रहे हो? क्या मौत के डर से भाग रहे हो! रात को पार करने का सरकारी हुक्म नहीं है।

ज़ोरावर– मैं भाग नहीं रहा, माँझी। मेरी माँ की अमानत मेरा भाई था। वह लड़ाई में काम आया। उसी की लाश देने जा रहा हूँ।

माझी– सरकारी हुक्म लाओ। तुमको एकाएक करके यहाँ हुक्म नहीं है भागने का।

ज़ोरावर– मैं भाग नहीं रहा। मुझे सिर्फ़ इसकी लाश को पहुँचा आना है।

माझी– जो अमानत थी, वह थी। लाश थोड़े ही अमानत है। लाश को लेकर तुम्हारी माँ क्या करेगी! ये जितने मरने वाले मर रहे हैं, ये सभी तो अमानतें हैं। सभी तो माँ से पैदा होते हैं। बगैर माँ के कोई है! माताओं ने तो दे दिया, बेच दिया– चाँदी के टुकड़ों पर और कागज़ के चिन्हों पर। आज तुम लाश लिये जा रहे। कल तुम्हारी यही हालत हुई तो तुम्हारी लाश क्या मैं पहुँचाने जाऊँगा?

ज़ोरावर– कुछ नहीं, मैं तुमसे आज आरजू करता हूँ। मैं कल सुबह आ जाऊँगा। मैं कभी आरजू नहीं करता। सिर्फ माँ की इस अमानत के लिए आरजू कर रहा हूँ। क्या तुम मेरी इतनी आरजू नहीं सुनोगे?

माझी– वादा करते हो, कल सुबह आ जाओगे?

जोरावर– हाँ, वादा करता हूँ मैं कल आ जाऊँगा।

–जाओ। चलो मैं किश्ती खोले देता हूँ।

माझी किश्ती खोलता है। पार उतारता है। जोरावर लाश लिए हुए 8 बजे दिन घर पहुँचा। माँ के सामने रख के– माँ यह तुम्हारी अमानत है ।

माँ को उस समय रोना नहीं आया। बोली– एक दिन, बेटे, सबकी माओं की अमानतें वापिस आयेंगी। यह अमानत कहाँ। बलवान था, वीरगति पाई!

कहकर तो आया था ज़ोरावर, कि मैं सुबह आ जाऊँगा मगर घर आने पर उसकी इच्छा नहीं हुई जाने की।

सुभद्रा से बोला– क्या करूं, मैं अपने वचन से झूठा बना। मुझे नरक मिले, स्वर्ग मैं नहीं चाहता। मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकता हूँ। मगर हाँ एक मजबूरी है। मैं घर पर रहने नहीं पाऊँगा। आज तुम्हारे वह शब्द मेरे कान में गूँज रहे हैं जो तुमने कहे थे, कि सिपाही और कप्तान के लिये– या तो विजय या मौत! इस लड़ाई की हालत देखकर, विजय तो हमको क्या मिलेगी– शायद मौत ही मिले। सुभद्रा– विजय! विजय बड़ी मूल्यवान चीज़ है। अब यह देखना है कि उसका सेहरा किसके माथे पर बँधता है– मेरे या आपके माथे। यह आप क्यों सोचते हैं कि विजय का सेहरा आप ही लोगों के सर पर चढ़ेगा। अगर तुम मेरे प्रेम में पड़ करके छिपना चाहते हो– तो चलो, बहादुर की मौत तुम भी मरना, मैं भी मरूं!

ये शब्द सुभद्रा के, माँ के भी कान में पड़े– 'मैं तुम्हारे साथ चलू!'

माँ– अरे बेटा, यह कायरों का काम है। आज यहाँ तू सरकारी नौकर है तो यह काम कर रहा है। कल दुश्मन चढ़ आये तो क्या हमारी लोगों की इज्ज़त बाक़ी रह जायेगी ? आज तो एक सरकार है सर पर। उसके रुपये देने से तुम सब काम करने गये। अगर हमारी सरकार होती तो तुम सब के सब बगैर रुपये के, बगैर सहारे के, अपने–अपने घर से निकलते। और कोई समय आयेगा जब तुम अपने–अपने घर से निकलोगे। छिपने का नाम भी सुनके मुझे हँसी मालूम होती है।

ज़ोरावर– माँ, कैसी बात करती हो! एक की लाश देखकर के भी तुम्हें अभी तस्कीन नहीं हुई। वहाँ, माँ, लाशों को तुम देखो तो पता चले। वहाँ लाशों से बच के निकलना मुश्किल है।

माँ– मैं..., ख़ैर, यह लड़ाई तो मैंने देख ली। मगर कहो तो मैं चलू। मैं और बहू दोनों चलें। ये शैतान जर्मनी और जापान अगर मुल्क में आ जायेंगे, तुम समझते हो, तुम्हारी बहू–बेटियों की ख़ैरियत है! उस वक़्त तुम्हें जो तकलीफ़ होगी अपनी हालत देखकर और हम लोगों की दुर्दशा– तो क्या उससे भी मौत मुश्किल है? फिर मैं तुम्हें आज अपने आँचल के नीचे, गोदी के नीचे, छिपा लूँ? वह माताओं के लाल नहीं हैं?

माँ की फटकार से और सुभद्रा की लताड़ से ज़ोरावर के बल आया।

सुभद्रा नहीं मानी, साथ में गई। दोनों साथ–साथ चले जाते हैं, गुम–सुम, न कोई किसी से बोलता है न चालता है। जैसे अपरिचित हों कोई। जब दरिया के किनारे पहुँचे, माझी ने पूछा– कप्तान साहब, आप आ गये! उस समय ज़ोरावर के दिल में महान शक्ति आई। जैसे सोये से कोई जागा हो।

माझी– यह तुम्हारे साथ स्त्री कौन है?

जोरावर– यह मेरी स्त्री है ।

–यह गुलाब का ऐसा फूल क्यों लाये? यहाँ तो नर–संहार है।

सुभद्रा– नर–संहार है तो क्या यहाँ कोई घबराने वाला है। फूल अगर फूला है तो कुम्हलाने ही के लिए तो। आदमी ने अगर जन्म लिया है तो मरने ही के लिए तो। कुत्तों की मौत से बहादुरों की तरह मरना फिर भी अच्छा है।

इतना कहते हुए सुभद्रा मुस्करा उठी। सुभद्रा की उस हँसी में व्यंग की हँसी नहीं थी, बल्कि कर्तव्य की हँसी थी; ––– 'शायद मैं भी कुछ करके जाऊँ।'

जब पार आये, कप्तान अपने ख़ेमे में गया। सुभद्रा साथ में। जब वह मैदान में गया, जोरावर सिंह– सुभद्रा भी उसी के कपड़े पहनकर उसके पीछे साथ में गई। चार रोज़ तक, जब जाता था तब वह साथ में रहती थी।

पाँचवे रोज़ जोरावर सिंह की बारी थी, सुभद्रा ने गिरते देखा। सुभद्रा ने झुककर लाश उठाई। अपने ख़ेमे में ले जाकर वहाँ उसे चूमा। लाश थी निर्जीव। उस समय उसके मुंह से निकला– हाँ, तुम विजयी हो! तुमने वादा पूरा किया। अभी थोड़ी देर में मेरी भी तो यही हालत होगी।

उसी माझी के पास गई।

– माझी! यह मेरी लाश है। पता देती हूँ। माँजी को दे आओ! उनकी अमानत थी।

राजभाषा संबंधी नियम

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
2. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
3. केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होगी।

सबसे प्यारा मेरा हिंदुस्तान, हिंदी जिसकी है पहचान।

वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ और उसका निदान

नम्रता बजाज*

हिन्दी एक विकासशील भाषा है। संघ की राजभाषा घोषित हो जाने के बाद यह धीरे–धीरे अखिल भारतीय भाषा का रूप ग्रहण कर रही है। यह सही है कि एक विस्तृत भूखंड में और बहुभाषी समाज के बीच व्यवहृत किसी भी विकासशील भाषा के उच्चारणगत गठन में अनेकरूपता मिलना स्वाभाविक है, उसे व्याकरण के कठोर नियमों में जकड़ा नहीं जा सकता। भाषा प्रयोग में उच्चारणगत अशुद्धियां, वर्तनी संबंधी अशुद्धियां, व्याकरणिक अशुद्धियां, मानक प्रयोग में अशुद्धियां तथा शैलीगत अशुद्धियां अधिकतर मिल जाती हैं। लेखन, टंकण और मुद्रण के क्षेत्र में हिन्दी भाषा की एकरूपता और मानकीकरण की तत्काल आवश्यकता है। भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने सन् 1983 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा पूर्व में किए हिन्दी भाषा की लिपि व वर्तनी के मानकीकरण संबंधी प्रयासों का समन्वित रूप 'देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' के रूप में प्रस्तुत किया।

किसी शब्द को लिखने में प्रयुक्त वर्णों के क्रम को वर्तनी या अक्षरी कहते है। अंग्रेजी में वर्तनी को 'Spelling' तथा उर्दू में 'हिज्जे' कहते हैं। किसी भाषा की समस्त ध्वनियों को सही ढंग से उच्चारित करने हेतु वर्तनी की एकरुपता स्थापित की जाती है। जिस भाषा की वर्तनी में अपनी भाषा के साथ अन्य भाषाओं की ध्वनियों को ग्रहण करने की जितनी अधिक शक्ति होगी, उस भाषा की वर्तनी उतनी ही समर्थ होगी। अतः वर्तनी का सीधा सम्बन्ध भाषागत ध्वनियों के उच्चारण से है। लेखन में प्रयोग होने वाले इन शब्दों को एक दो बार भी ध्यानपूर्वक देख लिया जाए तो वर्तनी की सामान्य गलतियों से काफी हद तक बचा जा सकता है।

उच्चारण– मुख से अक्षरों को बोलना उच्चारण कहलाता है। सभी वर्णों के लिए मुख में उच्चारण स्थान होते हैं। यदि वर्णों का उच्चारण शुद्ध न किया जाए, तो लिखने में भी अशुद्धियां हो जाती हैं, क्योंकि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। इसे जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा भी जाता है।

वर्तनी– किसी भी भाषा की समस्त ध्वनियों को सही ढंग से उच्चरित करने के लिए ही वर्तनी की एकरूपता स्थिर की जाती है। जिस भाषा की वर्तनी में अपनी भाषा के साथ अन्य भाषाओं की ध्वनियों को ग्रहण करने की जितनी अधिक शक्ति होगी, उस भाषा की वर्तनी उतनी ही समर्थ समझी जायेगी। अतः वर्तनी का सीधा सम्बन्ध भाषागत ध्वनियों के उच्चारण से है।

अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ
	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
	ष	स	ह	
	क्ष	त्र	ज्ञ	

उच्चारण और वर्तनी की विशेष अशुद्धियां और उनके निदान

व्याकरण के सामान्य नियमों की ठीक–ठीक जानकारी न होने के कारण बोलने और लिखने में प्रायः भूलें हो जाती हैं। शुद्ध भाषा के प्रयोग के लिए वर्णों के शुद्ध उच्चारण, शब्दों के शुद्ध रूप और वाक्यों के शुद्ध रूप जानना आवश्यक हैं। प्रायः दो तरह की भूल होती हैं– एक शब्द–संबंधी और दूसरी वाक्य–संबंधी। प्रायः लोग कई शब्दों के उच्चारण एवं वर्तनी में अशुद्धियां करते हैं, उन शब्दों के अशुद्ध और शुद्ध रूप इस प्रकार हैं–

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

स्वर संबंधी अशुद्धियां

अ तथा आ संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
अकाश	आकाश
अगामी	आगामी
अन्त्यक्षरी	अन्त्याक्षरी

इ तथा ई संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
आशिर्वाद	आशीर्वाद
दिपिका	दीपिका

उ तथा ऊ संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
अनुदित	अनूदित
हनूमान	हनुमान

ऋ संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
अनुग्रहीत	अनुगृहीत
रिगवेद	ऋग्वेद
त्रितीय	तृतीय

ए तथा ऐ संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
जेसा	जैसा
फैंकना	फेंकना
सैना	सेना

ओ एवं औ संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
अलोकिक	अलौकिक
ओद्योगिक	औद्योगिक

अनुस्वर (ं) चंद्रबिन्दु (ँ) संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
आंख	आँख
दांत	दाँत

विसर्ग (:) संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
प्रातकाल	प्रातःकाल
प्राय	प्रायः

व्यंजन संबंधी अशुद्धियां

छ तथा क्ष संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
आकांछा	आकांक्षा
नछत्र	नक्षत्र
छीण	क्षीण

ज तथा य संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
अजोधा	अयोध्या
जाचना	याचना

ट तथा ठ संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
कनिष्ट	कनिष्ठ
इकट्टा	इकट्ठा
विशिष्ठ	विशिष्ट

ड, ड़, ढ एवं ढ़ संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
कन्नड	कन्नड़
षड्यंत्र	षड्यंत्र
सीड़ियां	सीढ़ियां

ण एवं न संबंधी अशुद्धियां

अशुद्ध	**शुद्ध**
अर्चणा	अर्चना
श्रवन	श्रवण
विस्मरन	विस्मरण

इसके अतिरिक्त, वाक्य संबंधी कुछ अशुद्धियां के नमूने निम्नानुसार हैं:

अशुद्धः हम यह किताब पढ़े थे।
शुद्धः हमने यह किताब पढ़ी थी।
अशुद्धः मोहन ने मेरे को बुलाया है।
शुद्धः मोहन ने मुझे बुलाया है।
अशुद्धः एक पानी का गिलास दीजिए।
शुद्धः एक गिलास पानी दीजिए।
अशुद्धः मैं इसे अनेकों बार देख चुका हूं।
शुद्धः मैं इसे अनेक बार देख चुका हूं।

इस प्रकार अंग्रेजी के शिक्षा–माध्यम होने से भी हिंदी की संरचना पर प्रभाव पड़ता है जिसके कारण हिंदी भाषा के प्रयोग में विभिन्न प्रकार की अशुद्धियां मिल जाती हैं। भाषा नियमों की पूरी जानकारी न हो पाना भी इसका एक कारण है। अतः इन सबकी सही जानकारी एवं अभ्यास से कई अशुद्धियों में सुधार हो सकता है।

बार–बार कहने से झूठ सच नहीं हो जाता।

शिक्षा और सामाजिक दायित्व

सत्यपाल सिंह राठौर*

शिक्षा अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा असम्भव को सम्भव बना देने की कला है आदि, शिक्षाविदों ने अनेक प्रकार से शिक्षा को परिभाषित करने की कोशिशें की है। शिक्षा के सार्वभौमिक महत्व को हम सभी जानते हैं।

भारत को आजादी मिलने के बाद सन् 1952 में भारत की साक्षरता लगभग 18 प्रतिशत थी। उसके बाद सभी सरकारों ने शिक्षा के प्रचार और प्रसार करने का बखूबी प्रयास किया गया जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान में साक्षरता लगभग 74.4 प्रतिशत है। शिक्षा के प्रचार और प्रसार के समय राजनीतिज्ञों और शिक्षाविदों ने यह कल्पना की थी कि शिक्षा के प्रसार से जन–साधारण को अपनी समस्याओं को सुलझाने में समझ बढ़ेगी, तथा समाज में नैतिकता, करूणा, सहयोग व परस्पर प्रेम का विकास होगा।

1. आजादी प्राप्ति के समय हमारे देश की आबादी लगभग 33 करोड़ थी आज देश की आबादी लगभग 125 करोड़ है। देश के साक्षरता प्रतिशत तथा देश की आबादी में कई गुना वृद्धि हुई है और समस्याएं भी कई गुना बढ़ी है।
2. यातायात के साधनों में कई गुना वृद्धि होने के बाबजूद, ट्रैफिक जाम व दुर्घटनाओं का अनुपात बढ़ा है।
3. ग्रीष्म ऋतु आने पर, देश के अनेक क्षेत्रों में जल संकट उत्पन्न हो जाता है। कुछ कस्बों व शहरों में पीने के पानी को लेकर मारपीट व झगड़े हो जाते हैं तथा कभी–कभी जन–हानि भी होती है।
4. खाद्यान्न उत्पादन, दुग्ध उत्पादन में भी कई गुना वृद्धि होने के बाबजूद देश में कुपोषण की समस्या बरकरार है।
5. अधिकांशतः नागरिक शिक्षित हैं, उसके बावजूद रेलों/बसों में सीट को लेकर मारपीट, जनहानि तथा महिलाओं के साथ अभद्रता, बलात्कार की समस्यायें हम सभी से छिपी नहीं हैं। नागरिक उत्तरदायित्व की भावना में कमी है।
6. बैंकों में एन.पी.ए. बढ़ने तथा बैंकों का ऋण लेकर वापस भुगतान न कराना तथा विदेश भाग जाना भी इस देश की समस्या बना हुआ है।
7. काश्मीर की समस्या हमारे देश की राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है। काश्मीर में खाद्यान्न, गन्ना, तिलहन आदि का आधारभूत उत्पादन नगण्य है केवल फलों तथा औषधीय उपयोग की वस्तुओं, शाल आदि का न्यून उत्पादन है फिर भी उग्रवादियों/चरमपंथियों द्वारा मानवता को त्याग कर, नागरिकों व सैनिकों की हत्या आम बात है।
8. इसके अतिरिक्त छोटे–छोटे मुद्दों पर सड़क यातायात व रेल यातायात बाधित करना भी समझदारी नहीं है।

इसके अतिरिक्त बेरोजगारी की समस्या आदि अनेक समस्याएं विकराल रूप में खड़ी है। देश का एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम सभी का दायित्व है कि व्यक्तिगत स्तर से ऊपर उठकर, राष्ट्रहित में समाधान सोचें तथा शान्ति व सौहार्दपूर्ण माहौल स्थापित करें तभी देश की सतत् प्रगति सम्भव हो सकेगी।

हर समस्या का समाधान उसके इर्द–गिर्द ही होता है जरूरत इस बात की है कि हम गम्भीरता से समस्या पर विचार करें, समस्या के कारणों का विश्लेषण करें तथा उसका सर्वमान्य समाधान खोजें अथवा जनहित व देशहित में निराकरण करें। कभी–कभी देश हित में समस्याओं के निराकरण में कुछ निजी हितों को त्यागने की आवश्यकता भी पडती है। अतः लोक हित के लिए हमारे जन प्रतिनिधियों को आदर्श प्रस्तुत करने होंगे तभी नागरिक उनका अनुकरण, लोक कल्याण तथा राष्ट्र उत्थान हेतु कार्य कर सकेंगे।

आज देश की बढ़ती हुई जनसंख्या, विकास हेतु किये गये सभी कार्यों को बौना साबित कर रही है। बढ़ती जनसंख्या देश के लिए अभिशाप है। हम सभी इसे अनदेखा कर रहे हैं। आवास, कार्यालय तथा उद्योगों के भवनों के निर्माण से कृषि भूमि घट रही है। रेल मार्गों पर लगभग प्रत्येक 15 मिनट पर, रेलगाड़ी (एक्सप्रेस/सुपरफास्ट) उपलब्ध है फिर भी रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की भीड़ बरकरार है।

* भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली।

दोस्ती और भाईचारा ही मानव जीवन के सर्वश्रेष्ठ रत्न हैं।

सड़क परिवहन की स्थिति भी हम सभी के समक्ष भयावह स्थिति उत्पन्न करती है। मार्गों में दुर्घटना में मुसाफिर तड़पते रहते हैं तथा संवेदनहीन लोग आगे निकल जाते हैं तथा लोग अकाल मृत्यु को प्राप्त करते हैं। वायुमार्ग से परिवहन की व्यवस्था भी नागरिकों को उपलब्ध है उसके बावजूद सर्वत्र यात्री, आने जाने हेतु प्रतीक्षारत् हैं।

आई.टी. पार्क, आटोमोबाइल उद्योग, दूरसंचार उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा, सेना तथा पुलिस के क्षेत्र में अनेकों रोजगार उपलब्ध हैं फिर भी बेरोजगारों की भीड़ देश के लिए एक गम्भीर चुनौती बनी हुई है।

अतः देश के सभी समुदायों को, लोगों को निज हित से ऊपर उठ कर जागरूक होने की आवश्यकता है। सभी समुदाय के लोगों को एक सन्तान; पुत्र या पुत्री तक स्वंय को सीमित करना होगा तभी बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या से निजात मिल सकेगी। इसके अतिरिक्त पड़ोसी देशों की सीमाओं से अवैध प्रवेश करने वालों को भी रोकना आवश्यक है। प्रत्येक शिक्षित व संवेदनशील नागरिक को अपना कर्तव्य समझना होगा।

हालात के अन्धेरों से जूझते हुए लोगों को असुविधाओं से मुक्ति पाने के लिए विवेक रूपी शमा हमें जलानी होगी। यह शमा अपने उजाले से न जाने कितने इंसानों को राह दिखाएगी। असुविधाओं और तकलीफों के अंधेरे आगे भी होंगे। विवेक रूपी शमा की जरूरत हम सभी को होगी।

किसी ने ठीक ही कहा है कि –

हम सफर हम सभी, सफर हमसे ही निकलेगा।
हमारे पॉव का कॉटा, हमीं से निकलेगा।

राजभाषा संबंधी नियम

नियम 8–

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना–

(क) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत हिन्दी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा भी नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें।

(4) उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण आर ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विर्निष्ट किए जाए केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा।

नियम 10(2)–

यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारी में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम 10(4)–

केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के कर्मचारियों ने हिन्दी कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे।

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी, अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया हैं, तो वह, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा।

नियम 12–

अनुपालन का दायित्व (1) केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह

1. यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है औरः
2. इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करें।
3. केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय–समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

जो बातें विचार पर छोड़ दी जाती हैं, वे कभी पूरी नहीं होती।

तनाव प्रबंधन

रेखा दुबे*

आज के दौर की गंभीर समस्या है तनाव जो हमारे इस संसार में आने के पश्चात ही शुरू हो जाती है। इसका कारण भी हम हैं और निवारण भी हम ही कर सकते हैं। लेकिन हमें पता ही नहीं चलता कि कब, कहां और कैसे हम इसका शिकार हो गए। हमें हमारी जिंदगी में खुश रहने का पूरा अधिकार है लेकिन क्या ये अधिकार हम खुद को दे पा रहे हैं? ये प्रश्नचिह्न तो है। मनुष्य और तनाव का आपस में साथ चोली और दामन जैसा है। तनाव के बिना आजकल जीवन असंभव है। अब ये तनाव है क्या बला? इसके आने की प्रक्रिया से आपको रूबरू कराती हूं। मेरे संधिच्छेद से आपके चेहरे पर एक मुस्कान तो आएगी, ये मेरा पहला प्रयास है तनाव को भगाने का और मुस्कराहट को लाने का। तन + आओ अर्थात हम स्वयं ही इसे अपने जीवन के अंदर ला रहे हैं। तनाव हमारी स्थिति और परिस्थिति के बीच असंतुलन से उत्पन्न एक विकार है। ये मन में चलने वाला एक ऐसा द्वंद है जो हमें विचलित करता रहता है और जीवन से खुशियों को गायब कर देता है। ये उत्पन्न तो मन से होता है लेकिन तन को भी अस्वस्थ कर देता है और हमारे आसपास का वातावरण भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। ये हमारी जीवन शैली, कार्यक्षमता, परिवारिक सुख, यहां तक कि हमारे रिश्तों को भी बुरी तरह प्रभावित करता है।

तनाव के कारण : हमारी परिस्थितियां, जिम्मेदारियां, काम का बोझ, वक्त की कमी, हमारी स्टडी, हमारा कैरियर, अकेलापन, रिश्तों में बेमेल विचार, बढ़ती दूरियां, अत्यधिक महत्वकांक्षाएं कई वज़ह हो सकती हैं इसकी। इसके अलावा कार्यालय में किसी सहयोगी या अधिकारी का आपके प्रति पक्षपात पूर्ण रवैया या बॉस की दिन–प्रतिदिन की फटकार, माता–पिता की रोक–टोक, स्कूल में टीचर का रवैया और भी न जाने क्या–क्या इसके कारण हो सकते हैं। इसके कारण का दायरा असीमित है। जीवन के बढ़ते बोझ जब मस्तिष्क को आराम नहीं लेने देते तो भी तनाव उत्पन्न होता है। तनाव के कारण शरीर में कई प्रकार के हार्मोंस का स्तर बढ़ने लगता है। ये सभी कारण हमारी पैदाइश से ही शुरू हो जाते हैं अब आप सोचेंगे कैसे? बच्चा जब बहुत छोटा होता है तो मॉ ज्यादातर उसके आसपास ही रहती है और अचानक मां का उठकर चले जाना उसे भी परेशान कर देता है और उसके छोटे से माथे पर भी शिकन आ जाती है। कई बार किसी छोटे बच्चे से आप बात करें या उसके सामने कोई नई वस्तु रखें या खिलौना, आपकी कुछ अटपटी सी बातें या चेहरे के हाव–भाव भी उसे कई बार दुविधा में डाल देते हैं और बच्चा कुछ गुमसुम या कुछ चिंतित सा दिखने लगता है। ये सभी उसके मासूम से चेहरे के सुकून को कुछ पलों के लिए गायब कर देते हैं। ये भी बच्चे के लिए एक प्रकार का तनाव ही है अर्थात् हमारे इर्द–गिर्द सामान्य से कुछ अलग घटने पर चिंताग्रस्त होना तनाव ही है।

लक्षण: जब जीवन के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण होने लगे, कभी अकेले में रहने का मन करें, नकारात्मक विचार उत्पन्न हों तो आपको समझ लेना चाहिए कि अब तनाव ने आपके शरीर पर असर डालना शुरू कर दिया है और अगर आपने उसे रोका नहीं तो यह आपके जीवन की सारी खुशियों और सुकून को नष्ट कर देगा। इसकी वजह से हमारे जीवन में कई मुश्किलें आती हैं। इसकी अति ये भी है कि आत्महत्या तक के ख्याल तनावग्रस्त व्यक्ति को आने लगते हैं और आपने कई बार अखबार या टीवी में भी देखा होगा कि फला–इंसान ने तनाव में आकर आत्महत्या की। ऐसा नहीं है कि पढ़ा–लिखा व्यक्ति आत्महत्या जैसे निर्णय नहीं ले सकता। ऐसे निर्णय अकस्मात् ही हमारे अंदर आते हैं और हम न करने वाले कार्य भी कर जाते हैं। कुछ समय पहले टीवी में न्यूज देखी कि एक आईएएस ने खुदकुशी की। इस घटना ने अंतर्मन को झकझोर दिया कि माता–पिता ने इतनी कठिनाईयों से परवरिश की होगी और उन्होंने अपने बच्चे को लेकर कितने

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

समय से पहले और भाग्य से अधिक कुछ नहीं मिलता।

सपने संजोय होंगे और इतनी पढ़ाई–लिखाई और संघर्ष के बाद आईएएस जैसे पद पर आना और तनाव के कारण जीवन से हार मानकर ऐसा निर्णय लेते वक्त उसके हाथ भी कांपे होंगे। जीवन में कुछ भी असामान्य सा घटित होना, तनाव को इस कदर हमारे भीतर लाकर बैठा देता है कि अपना जीवन गंवाने का निर्णय भी आसान लगता है। तनाव हमारे विवेक को निगल जाता है। कई बार जरूरत से ज्यादा तनाव के कारण चीजें रख कर भूलने की आदत भी हो जाती है। मस्तिष्क में जरूरत से ज्यादा विचार या कल्पनाएं रहेंगी तो कुछ तो छूट ही जाएगा।

निवारणः ''हर समस्या का हल होता है आज नहीं तो कल होता है'' इससे आप सभी परिचित हैं। रात के बाद सुबह होनी ही है ये प्रकृति का नियम है और आप उससे विपरीत कुछ नहीं कर सकते। सुबह उठें तो ईश्वर को धन्यवाद करें कि उसने एक नई सुबह आपके जीवन में दी क्योंकि विश्व में कई ऐसे लोग होंगे जिनको ये सुबह देखनी नसीब नहीं हुई होगी। ईश्वर से प्रार्थना करें कि आज का दिन आपके लिए शुभ और सुरक्षित हो। जाने–अनजाने में हुई गलतियों के लिए माफी मांगे। इसके बाद अपनी आगे की दिनचर्या से निपट कर वॉक पर जाएं लेकिन सकारात्मक सोच के साथ। मेरा ये मानना है कि जीवन में हम जो भी करते हैं अगर सकारात्मक सोच के साथ करेंगे तो उसके परिणाम भी अच्छे होंगे। आप अपने आपको हमेशा स्वस्थ मानें तो आप खुद को स्वस्थ महसूस करेंगे अगर व्यायाम करते हैं तो ये सोच कर करें कि इससे आपके शरीर को लाभ मिलेगा तो लाभ मिलकर रहेगा। अगर सोच ही ऐसी रखेंगे कि मैं कुछ भी करूं मेरे साथ कुछ अच्छा नहीं होगा तो कभी अच्छा होगा भी नहीं। उस परमपिता परमात्मा पर अपनी आस्था बनाए रखें क्योंकि जो कार्य आप जीवन में सोच भी नहीं सकते, उसे पल में करना उस प्रभु के ही हाथ में है। सबसे पहले खुद से प्यार करें, खुद के अस्तित्व को महसूस करें कि आप कितने महत्वपूर्ण हैं। जो भी कार्य करें उसमें खुद को समर्पित करें। सुनहरे भविष्य के ख्वाब लेना भी तनाव से मुक्त होने का एक सरल मार्ग है। कोई ऐसा लक्ष्य निर्धारित करें जो आपको सुकून दे। जब भी तनाव महसूस करें, अपना पसंदीदा संगीत सुनें। कुछ पल के लिए ही सही लेकिन आपके चेहरे पर ''**मुस्कुराहट ऑन और तनाव गॉन**'' लगेगा। आपके साथ जो भी हो रहा है उसे ईश्वर की रज़ा मानें और उसमें राज़ी होना भी सीखें। अपने जीवन में किसी भी चीज को अपनी कमजोरी न बनाएं क्योंकि आपकी कमजोरी आपको लक्ष्य से डिगा देती है और लक्ष्यविहीन व्यक्ति का जीवन खुशनुमा नहीं रह पाता। ''**मन भर कर जीयें, मन में कुछ भर कर नहीं**''।ये जीवन बहुत अनमोल है, इसके हर पल का मजा लें। मुस्कराना सेहत के लिए फायदेमंद है। यदि ये मौका मिल रहा है तो इससे चूके मत। खुद भी हंसे और दूसरों को भी हंसाएं।

अंत में बस इतना ही कहूंगी कि खुद से एक वादा करें कि अपने तन और मन के आसपास तनाव को फटकने नहीं देंगे। पूरी निष्ठा के साथ कर्म करें बाकी सब संभालने के लिए ईश्वर तो है ही।

राजभाषा नियम, 1976 के अन्तर्गत क, ख एवं ग क्षेत्रों का वर्गीकरण

इस नियम के अनुसार पूरे देश को तीन भागों अर्थात् क ख तथा ग क्षेत्रों में बाँटा गया है।

क. क्षेत्र में बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश राज्य और अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह एवं दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं।

ख. क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य एवं चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं।

ग. क्षेत्र में ऊपर दिए गए राज्यों एवं संघ राज्यों को छोड़कर सभी संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं।

क, ख, एवं ग क्षेत्रों में केन्द्रीय भण्डारण निगम के निम्नलिखित क्षेत्रीय कार्यालय आते हैं–

क्षेत्र कः निगमित कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली, लखनऊ, पटना, भोपाल, जयपुर, पंचकुला एवं रायपुर।

क्षेत्र खः मुम्बई, अहमदाबाद एवं चंडीगढ़

क्षेत्र गः चेन्नई, हैदराबाद, बेंगलूरू, भुवनेश्वर, गुवाहाटी, कोलकाता एवं कोच्चि

बार–बार कहने से झूठ सच नहीं हो जाता।

कमीज की आत्मकथा

मोहिनी मल्होत्रा*

हम सब एक सामाजिक परिवेश में रहते हुए एक दूसरे से जुड़े रहते हैं चाहे वो भावात्मक रुप से हो, आर्थिक रुप से हो, पारिवारिक रिश्तों के संबंधों से हो, पड़ोसी से अच्छे व बुरे रिश्तों से हो, मित्रता के संबंधों के रिश्तों के हो, इनमें से कुछ संबंध इतने गहरे बन जाते हैं कि हम अपना सुख–दुख उनसे बांटने लग जाते हैं। पता ही नहीं चलता कि थोड़ी व छोटी सी जान–पहचान गहरे रिश्तों में कब बदल जाती है, कब अपने मन की हर बात को कहना व उनकी सुनना बड़ा ही अच्छा लगता है, क्योंकि हम इंसान हैं आपस में कह सुन सकते हैं। हमारे पास सुनने के लिये कान हैं, बोलने के लिये जुबां है, समझने के लिये दिल व दिमाग है, लेकिन कुछ ऐसी भी चीजें है जो हमारे आसपास रोजमर्रा की जिंदगी में उपयोग होने वाली होती हैं। हम कभी उन पर ध्यान ही नहीं देते। कभी सोचा भी नहीं होगा कि इनको भी दर्द होता है, इनको भी तकलीफ होती है। परन्तु सच तो यह है कि दर्द तो सभी को होता है तकलीफ भी सभी को होती है पर हमें तो केवल अपने दर्द से व अपनी तकलीफ से मतलब है। दोस्तों इससे भी बाहर निकल कर देखें अपनी सोच से जरा हटकर अपने आस–पास देखें और महूसस करें क्योंकि मेरी कहानी में नायिका कोई और नहीं एक कमीज है जो कि अपनी तकलीफ को बयान नहीं कर सकती केवल आपको अहसास करायेगी जो कि इस प्रकार है–

गर्मियों में जून–जुलाई माह का गर्म महीना चल रहा था और गर्मी भी खूब जोरों पर थी, मैं बाजार में अपने दोस्तों के साथ था। सोचता था कि दोस्तों के साथ रहना ही जिंदगी है और उन्हीं के साथ रहते हुए मस्त रहता था, जहां वो बैठते उन्हीं के साथ रहना अच्छा लगता था। हम सब इकटठे ही रहते थे। आते–जाते लोगों को देखकर ठिठोली करना हमारी आदत बन चुकी थी। एक दिन लगा कोई व्यक्ति आया थोड़ी देर तक हम सभी दोस्तों को अपने हाथों से सहला रहा था। कभी कोई ऊपर तो कोई नीचे होता, हम सब एक दूसरे की तरफ हैरान थे कि यह व्यक्ति क्या कर रहा है और वह फिर चला गया। हम सबने राहत की सांस ली। एक–दूसरे की तरफ देखा सब ठीक–ठाक थे। एक–दूसरे को ठीक–ठाक देख कर मुस्करा रहे थे। लेकिन हमारी यह मुस्कराहट ज्यादा देर तक नहीं रही। थोड़ी देर में दूसरा व्यक्ति आया उसने ठीक वैसे ही किया सभी गुमसुम से बैठे हुए सोच रहे थे कि आगे क्या होगा परन्तु इस व्यक्ति ने कुछ बातचीत करने के बाद अपने साथ ले लिया। हम टुकर–टुकर एक–दूसरे को देख रहे थे कि हममें से कौन आया और कौन उधर ही रह गया। सभी गुमसुम से उस व्यक्ति के साथ थे। कभी वह हमें ऊपर उछाल देता फिर थोड़ी ही देर में अपनी पीठ पर लटका देता। हम सभी चुपचाप उसके साथ चल रहे थे। काफी समय के बाद हमें लगा कि वो व्यक्ति हमें घर ले आया क्योंकि घर में और भी लोगों की बातें करने की आवाजें आ रहीं थी। वह किसी को बता रहा था कि हां आज काम हो गया है। हमें उनको भी दिखा दिया, हमें देख कर सभी खुश नजर आ रहे थे और हमें घर के एक कोने में डाल दिया। सभी रातभर सांस को रोके हुए उस कोने में पड़े रहे। सुबह होने पर फिर सभी की बातों की आवाजें आने लगी। लगा कि सुबह हो गई है। शुक्र था कि हम एक को आंखों ही आंखों से एक–दूसरे का हालचाल पूछ लेते थे और सोच रहे थे कि अब आगे क्या होगा? फिर हमें महूसस हुआ कि उसे हमें उठा लिया। हम हिलते–डुलते उसके साथ फिर चल पड़े। वह हमें उबड़–खाबड़ रास्ते से होते हुए ले जा रहा था। तभी वह एक जगह रुका, हम भी धीरे से अपने कान लगाकर उनकी बातों को सुनने की कोशिश

* वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

दुनिया एक खूबसूरत किताब है।

करने लगे परन्तु ज्यादा नहीं पता लगा पाये क्योंकि वहां पर और भी लोगों की आवाजें आ रहीं थी। हमारा बुरा हाल था, फिर एक आवाज जोर से आयी, अब शुरु हो जाओ। एक हाथ आया उसने हमें अपने हाथ से उठा ऊपर से नीचे की तरफ उछाल दिया। हमारी तो बस चीख ही निकल गई, पर लगा किसी को भी हमारी चीख से कोई लेना–देना नहीं था। मैं तो सीधा नीचे ही चला गया और चारों तरफ देखने की कोशिश भी की लेकिन कुछ भी नहीं दिख रहा था। फिर लगा मेरी तो सांस भी घुटने लगी है। मैं जोर से चिल्लाने लगा, कोई तो सुनो मुझे यहां से बाहर निकालो। पर किसी ने मेरी आवाज को नहीं सुना। मेरे दूसरे दोस्तों का क्या हुआ पता नहीं। पिछले कुछ समय से मैं अपने दोस्तों के साथ ही रहता आया था इसलिये मुझे उनकी बहुत याद आ रही थी। जिन लोगों की आवाजें थी वो अब नहीं आ रहीं थी। लगता है सभी अपने–अपने घर को चले गये थे। इतने घंटों में तो पूरी तरह से नीचे दब चुका था। रो–रो कर मेरा गला सूख चुका था और मैं थक भी बहुत गया था।

फिर कब मेरी आंख लग गई पता ही नहीं चला। ऐसा अब कितने दिन चलेगा रोज हमें उन लोगों की आवाजें आती पर हमारी आवाज वो नहीं सुनते और न ही हमें बाहर निकालते। मैं रोज चिल्लाता पर मेरी आवाज को कोई नहीं सुनता। हार कर मैंने अब रोना बंद कर दिया और उसी अंधेरे में रहने को अपनी किस्मत समझ लिया। इंतजार करने लगा कभी तो बाहर निकलूंगा। फिर कुछ दिनों के बाद मैं अभी सो रहा था मुझे लगा जैसे मैं रोशनी को देख रहा हूं, मैंने सोचा कि मैं सपना देख रहा हूं जिसमें मुझे सूरज की रोशनी दिखाई दे रही है। मैंने भी बड़ी मस्ती में रहते हुए अपनी एक आंख को मटकाते हुए खोला देखा कि वह सपना नहीं था। मैं सचमुच पूरी तरह सूरज की रोशनी में नहाया हुआ हूं और नन्हा–सा एक पौधे की कोपल बन कर धरती से बाहर आया था। हां दोस्तों मैं और कोई नहीं मैं एक कपास का बीज था और मेरे दोस्त भी थोड़ी–थोड़ी दूरी पर नजर आ रहे थे। मैं तो अपने दोस्तों को देखकर खुशी से चिल्ला पड़ा। सभी ने एक–दूसरे को देखकर अपने छोटे–छोटे पत्तों को हिलाकर अपनी–अपनी खुशी जाहिर की। एक बार फिर हम सब इकटठे हो गये। हम रोज सभी ठंडी–ठंडी हवा से बातें करते और ढेर सारी मस्ती करते। एक–दूसरे को देखकर लगता था कि हम धीरे–धीरे बड़े हो रहें है। कभी कोई हमें ठंडे ठड़े पानी से नहला देता तो पानी की उन बौछारों के साथ सारे दोस्त बड़े मजे करते। पता ही नहीं चला हम सब कब बड़े हो गये। मैंने खुद में परिवर्तन देखा कि बड़े होने पर मेरे शरीर पर जगह–जगह पर फूल आ गये। मैं जब भी अंगड़ाई लेता सारे फूलों की झंकार सी एक साथ बजती जिससे और मस्ती छा जाती, उन सफेद फूलों के साथ रहना और भी अच्छा लगने लगा। कुछ दिन बाद मेरे शरीर पर फूलों का रुप भी बदल गया और सब फूल छोटी–छोटी डोडियों में परिवर्तित हो गये। थोड़े ही दिनों में यह डोडियां से सुन्दर कपास की रुई निकलने लगी और जहां तक हम देखते सब तरफ सफेद ही सफेद रुई की चादर दिखाई देती। हम सारे खुशियों में डूबे थे कि एक दिन फिर से सुना कि हमें अलग करने की बात हो रही है। कल हमें चुन लिया जाएगा। अगली सुबह एक बार फिर जुदाई के दिन के रूप में आई। एक मशीन के द्वारा हमें उतार लिया गया और गट्ठर में बंद कर दिया गया। मैं फिर से अपने दोस्तों से अलग हो गया। इन गट्ठरों में भरकर हमें एक ट्रक में डालकर दूर शहर में एक फैक्ट्ररी के आंगन में डाल दिया गया, मैं तो घबराहट के मारे सारा दिन इस गट्ठर में गुमसुम सा बैठा रहा। यहां पर मैंने देखा कि इन फैक्ट्रियों में बहुत शोर होता है। मशीनों के चलने की तेज–तेज आवाजें, मजदूरों का शोर कोई किसी तरफ ना देखता है, ना सुनता है, कानों को फाड़ देने वाले इस शोर में हम दो दिन इन घरों में बंध कर बैठे रहे। तीसरे दिन हमें मजूदरों ने उठाया और हॉल में बड़ी बेदर्दी से फेंक दिया। थोड़ी ही देर में सारे मजदूरों के द्वारा हमें खोला गया। जब गट्ठर से बाहर आया तो सबसे पहले मेरी नजरों ने दोबारा अपने दोस्तो को ढूंढा परन्तु कोई भी नहीं मिला, कौन किस गठठर में बंद था पता नहीं। दूसरी बार फिर मैंने इस जुदाई के दर्द को सहा जब मैं अपनों से बिछड़ा था। फटाफट सभी मजदूरों ने खिली हुई रुई को जब अलग किया तो मैंने महसूस किया मेरे साथ एक और नई पहचान मेरे भीतर जुड़ी है। एक और नये बीज के साथ उस मातृत्व को महसूस किया। लेकिन एक झटके से जब मजदूरों ने हम दोनों को अलग किया तो मैंने अपने भीतर पल रहे अंश को अपने से जुदा होते देखा तो अपने उस दर्द को मैं बयां नहीं कर सकती। अब फिर एक तेज आवाज ने

सभी को चौंका दिया कि कल तक काम पूरा होना चाहिए। अब कल क्या होगा यह सोचते हुए पूरी रात निकल गई। सुबह होते ही हमें उठा कर एक मशीन के सामने रख दिया गया। फटाफट मजदूरों ने एक पतले धागे में बदल दिया। मैं तो सोचता ही रह गया कि अभी कुछ देर पहले मैं कैसा था और बड़ी बड़ी रीलों में चढ़ा दिया गया दूसरी शिफ्ट वालों ने रीलों से बदल कर हमें बड़े बड़ें लच्छों में बदल दिया। सोचने का तो मौका ही नहीं मिलता उससे पहले मेरा रुप बदल गया। मैं कपास के फूल से एक पतले धागे में बदल दिया गया, अगली सुबह के बारे में क्या बताऊं भट्टी के ऊपर गरम–गरम पानी के उबलते हुए बड़े–बड़े पतीलों में डाल दिया गया और मेरा शरीर जलने लगा मैं तेज हो रही इस जलन से फिर बड़ी जोर से चिल्लाया परन्तु वहां कोई नहीं सुनता बल्कि उस उबलते पानी में रंग डालकर मुझे पकाया गया और जब मैं बाहर निकाला गया तो मेरा स्वरुप फिर पूरा ही बदल गया। सफेद रंग से मुझे दूसरे रंग में रंग दिया गया। इतने सुंदर सफेद से जब मैं दूसरे रंग का हो गया तो मैं हक्काबक्का अपने आप को ही देखा जा रहा था कि मैं क्या था और क्या बन गया। रात भर मुझे सूखने के डाल दिया गया। अगली सुबह फिर मुझे मशीनों के रोलर पर चढ़ा दिया गया। मैंने अपने आप को रोलर पे लिपटा देखकर सोचा कि अब मेरा क्या होगा तभी मशीनों की घरघराहट शुरु हुई और बड़ी ही तेजी के साथ मेरे ऊपर रोलर चलने लगा, यहां भी मेरी शक्ल को बदल दिया गया और मैंने देखा रोलर के द्वारा मुझ पर प्रिंट कर दिया गया। मैं बड़े ढेरों के साथ मिल गया अब तो मैं बस यही सोच रहा था कि अब क्या होगा। दूसरे मजदूरों ने एक गत्ते की छोटी चौड़ाई वाले डंडों पर लपेटना शुरु कर दिया। उसके ऊपर एक पन्नी को चढ़ा कर टेप से बांध दिया। फटाफट वहां पर खड़े ट्रकों पर रख दिया गया। एक बार फिर ट्रक हमें लेकर चल दिये। धीरे–धीरे फैक्ट्रियों के धुंए व शोर से दूर हो गये। कुछ घंटों के बाद फिर शोर सुनाई देने लगा। यह शोर तो कुछ जाना–पहचाना सा लगा जैसे मैं दोबारा बाजार में पहुंच गया हूं। पों–पों की आवाज करता हुआ वह ट्रक बाजार में एक शोरुम के सामने रुका और फटाफट हमें उठा कर शोरुम के गोदाम के अंदर पहुंचा दिया गया। अपने बिल्कुल बदले स्वरुप के साथ मैं सब चुपचाप देख रहा था, सोच रहा था कि मैं पहले कैसा था अब तो अपनी पहली पहचान से बिल्कुल परे हूं। अब अगले दिन शोरुम का मालिक आया और बोला जो कल नया माल आया है उसको शोरुम में सजाने के लिये कह रहा था। हमें उठा कर शोरुम की शैल्फों में लगा दिया गया। थोड़े समय के बाद ग्राहकों का आना–जाना शुरु हो गया। दुकानदार सभी ग्राहकों को नये डिजाइन वाले कपड़े जरुर दिखलाता कुछ हाथ लगाते कुछ दूर से ही रंग व डिजाइन को देखते। कुछ समय के बाद एक ग्राहक ने मुझे पसंद कर लिया तब जो मेरे साथ हुआ उसकी तो मैंने कल्पना भी नहीं की थी। दुकानदार ने मुझे नापा और कैंची लेकर उतना मुझे काट दिया गया, मैं उस पीड़ा से इतना भयभीत हो गया। मैंने उस पीड़ा को झेलते हुए दुकानदार व ग्राहक की तरफ देखा। दोनों के चेहरे पर कोई शिकन तक न थी कि मुझे किस बेदर्दी से काटा गया। दुकानदार ने झट से मुझे लपेट कर एक थैले में डालकर दे दिया। मैं भी चुपचान उस नये मालिक के साथ चल रहा था। इतने में मैंने देखा वो एक नई दुकान की तरफ जा रहा है वहां पहुंच कर उसने मुझे नये दुकानदार के सामने रख दिया। उस दुकानदार से कुछ देर बातें करने के बाद मेरा मालिक चला गया। ऐसा लगा जैसे वह एक दो दिन के बाद आयेगा, तभी उस नये दुकानदार ने मुझे फिर से एक टेबल पर बिछा दिया पहले तो मुझे अच्छी तरह सीधा किया। कभी इधर से खींचा कभी उधर से फिर झटका कर फैला दिया। जल्दी से स्केल रख कर मुझे काटना शुरु किया, मैं फिर असहनीय पीड़ा से चिल्लाता रहा परंतु यहां फिर से किसी ने मुझे होने वाले दर्द को नहीं सुना और मेरा अंग–अंग काट दिया और मुझे लपेट कर एक तरफ रख दिया। मैं जार–जार रोता रहा। तभी एक और आदमी की टेबल पर मुझे फेंक दिया गया। अपनी बीड़ी पीने के बाद उस आदमी ने मुझे फिर से उठाया। मुझे खोलकर उन काटे हुए टुकड़ों को सिलना शुरु कर दिया। मशीन ने मेरे ऊपर चलना शुरु किया मेरे शरीर के रोम रोम से सुई व धागे से दर्द की प्रकिया शुरु हुई मैं बयान नहीं कर सकता अपने उस दर्द का जिसे मैं सहन कर रहा था। सुई की हर वो नोक जो मेरे अंदर से निकल कर चुभती थी। बीच–बीच में वह व्यक्ति कभी फिर से बीड़ी पीता और बातें करता हुआ हंस रहा था। उसे मेरी तकलीफ से कोई सरोकार नहीं था और मैं उस पीड़ा को सहता हुआ हाय–हाय करता

रहा। दो घंटे तक मैं उस तकलीफ से निकलता रहा। इसके बाद उसने मुझे पूरा सिल दिया। मैं तो भौंचका सा अपने को देख रहा था कि एक बार फिर मेरा रुप बदल दिया गया। मैं कपड़े से एक कमीज बन गया था। दर्द के साथ हल्की सी खुशी भी हुई कि मैं एक बीज के रुप में था, मैंने सोचा चलो शायद अब मेरी तकलीफ खत्म परंतु ऐसा शायद मेरी किस्मत में अभी नहीं था। उसी समय मुझे एक दूसरे कारीगर को दे दिया गया। उसने फिर से मुझे उठाया और मुझे आठ या नौ जगह से काट दिया। जगह–जगह दोबारा फिर कटने से मेरा सारा सीना छलनी हो गया। मैं दर्द के मारे अपने सीने को पकड़ के बैठ गया। जगह–जगह काटने से मेरा चेहरा व शरीर फिर से बड़ी तकलीफ को सह रहा था। अभी कटने की तकलीफ को भूला भी नहीं था उसने फिर से सूई धागा लेकर उस कट को चारों तरफ से बींधना शुरु कर दिया। फिर सुई की चुभन बार–बार दर्द को नया रुप देती गई। मुझ पर काज बना दिया गया अब उसके सामने बटन टांकने के लिये फिर से सुई धागा लेकर बटन को रखकर ना जाने कितनी बार सुई मेरे शरीर से आर–पार होती रही और मैं उतनी बार उस दर्द को सहता रहा। अब तक जितनी बार भी दर्द मिला मैं उस दर्द और तकलीफ को सहन करता रहा। अब क्या बताऊं बटन टंगने के बाद मैंने सोचा कि अब शायद मेरी सारी तकलीफें खत्म, परन्तु ऐसा नहीं हुआ मेरी तो मां व बाप की तौबा हो गई। मुझे दिन में तारे नजर आ रहे थे, सुइयों की चुभन के आगे व कैंची से कटने की तकलीफ, आप भी सोच रहे होंगे। आगे मैं क्या कहना चाहती हूं अब तो मैं कमीज बन कर तैयार हो गई हूं, पर नहीं अभी थोड़ी कसर बाकी है अब जब मैं पूरी कमीज बनकर मास्टर के टेबल पर पहुंची तो जल्दी से मुझे अपने सामने फैलाया आप सोच रहे होंगे अब क्या हुआ होगा? एक प्रकिया जो बाकी थी, वह प्रैस करने की। उसने प्रैस को गर्म कर मेरे पूरे शरीर पर चला दी मेरा सारा शरीर उस गर्म प्रैस के चलने से धूं–धूं कर जलने लगा। हर जगह से मुझे दागा जा रहा था। मेरा रोम–रोम आंसुओं से भरा हुआ था उसे भी मेरी इस भंयकर पीड़ा से कोई सरोकार नहीं था उन्होंने बड़ी मस्ती से अपने कारीगर को कहा यह कमीज तैयार हो गई है इसे शोकेस में टांग दे और मुझे हैंगर में डालकर लटका दिया गया। कमीज बनने तक किन–किन तकलीफों से निकला हूं ये तो मेरा दिल ही जानता है। रात होने पर दुकान बंद हो गई। सभी दुकान के कारीगर व मास्टर घर चले गये। सुबह होते ही बाजार की सभी दुकानें खुल गई। देखते ही देखते बाजार लोगों की भीड़ से भरने लगा। मैं भी मजे से यह सब देख रहा था। उनमें से कुछ लोग शोकेस के सामने रुक कर मेरी ओर निहारते, कभी मेरे रंगों की, कभी प्रिंट डिजाइन की प्रंशसा करते, कोई दुकान के अंदर आकर मास्टर से पूछते यह कमीज किसने सिलवाई है। हमें भी ऐसी सुंदर कमीज बनवानी है अपनी सुंदरता की तारीफ सुनकर मैं अपना पिछला दुख भुलने लगा। मुझ पर भी तारीफ सुनने का नशा छाने लगा। इतने में मैंने देखा मेरा मालिक दुकान के अंदर आया और मेरे बारे में पूछा तो मास्टर जी ने कहा आपकी कमीज तैयार है। मुझे हैंगर से उतार कर दोबारा से तह लगाकर एक थैले में डाल दिया गया। पैसे देते समय मेरे मालिक ने भी मुझे पसंद किया और कहा कि इसका डिजाइन मुझे बहुत पसंद आया था और सिलने के बाद तो और भी सुंदर लग रही है। मैं तो अपनी प्रंशसा सुनकर फूला नहीं समा रहा था और पिछला सारा दुख भूलकर कर खुशी–खुशी अपने मालिक के साथ जा रही थी। मुझे वक्त ने यह समझा दिया था कि जब तक आप अपने लिये जीते हैं, उसमें उतनी खुशी नहीं मिलती परंतु जब आप दूसरों के काम आने के लिये जीतें हैं उसमें आप अपने सभी दुखों को भूल जाते हैं। दूसरों की खुशी में आपको ज्यादा आनंद मिलता है। जिस प्रकार इस कमीज ने शुरु से अंत तक कितनी तकलीफों को सहा परन्तु अंत में अपने सभी दुःख भूलकर अपने मालिक की खुशी में खुश हो गई।

* हिंदी भारत की राजभाषा है। सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को समेटे हिंदी अब विश्व में लगातार अपना फैलाव कर रही है। देश–विदेश में इसे जानने समझने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। इंटरनेट के इस युग ने हिंदी को वैश्विक धाक जमाने में नया आसमान मुहैया कराया है। हिंदी तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।

एक दूसरे का सम्मान और शिष्टाचार ही संस्कृति की आधारशिला है।

भाषा का सौन्दर्यः लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे

शशि बाला*

भारतीय इतिहास पर नजर डालें और विशेषकर सामाजिक जीवन पर तो हम देखते है प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति बेहद समृद्ध थी जो किसी भी विकसित सभ्यता को टक्कर देती थी। उस समय की समृद्ध भाषाओं में पालि, संस्कृत इत्यादि कई भाषाएं और अनेक बोलियां प्रचलन में थीं। जन साधारण में विशेषकर हमारे बुजुर्ग अपने अनुभव के आधार पर अक्सर लोकोक्ति व मुहावरों के माध्यम से थोड़े शब्दों में ही गहरी बात कह जाते थे। भाषा को सजीव, प्रवाहपूर्ण और आकर्षक बनाने के लिए लोकोक्तियों व मुहावरों का प्रयोग विशेषकर ग्रामीण समाज ने ही हमें प्रदान किया है जिसे परिवेश में सार्थक और अतुलनीय कहा जा सकता है। अब मैं आपको साधारण शब्दों में लोकोक्ति और मुहावरों के बारे में बताना चाहूंगी।

लोकोक्ति– लोकोक्ति का अर्थ है लोक की उक्ति अर्थात लोक में प्रचलित कहावतें। अधिकतर श्रेष्ठ कवियों, लेखकों तथा विचारकों के निजी उत्पन्न वाक्य कहावत बन जाते हैं। इनका प्रयोग किसी को चेतावनी देने, व्यंग्य करने, उलाहना देने के साथ भाषा को युक्तिसंगत बनाने के लिए किया जाता है। लोकोक्तियाँ ऐसी कहावतें होती हैं जो अपनी लोकप्रियता व व्यापकता के कारण पद्यमय बन जाती हैं अथवा किसी सहज सत्य की अभिव्यंजना बन कर जनमानस में स्थान पा लेती हैं।

लोकोक्तियां लोकानुभव पर आधारित होती हैं जिनमें कथन की पूर्णता विद्यमान होने के साथ–साथ व्यंजना शक्ति होती है। इनका प्रयोग किसी परिस्थिति को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। लोकोक्ति प्रायः किसी घटना या प्रसंग पर आधारित होती है और जीवन के सत्यानुभव को प्रकट करती है। ये कई व्यक्तियों के दीर्घकाल के अनुभवों का परिणाम होती हैं। लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है। ये अपरिवर्तनीय होती है। इसकी क्रिया में परिवर्तन नहीं होता है। इसमें व्यंजना तथा ध्वन्यात्मकता होती है। ये गद्यात्मक व पद्यात्मक दोनों प्रकार की होती है। लोकोक्ति के प्रयोग में इसके स्वरूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता ।

मुहावरा– यह अरबी भाषा का शब्द है जिसका सामान्य अर्थ है– बातचीत। हिंदी में यह एक ऐसे वाक्यांश के लिए प्रयुक्त होता है, जो अपने वास्तविक अर्थ के स्थान पर एक विलक्षण अर्थ का बोध कराता है। मुहावरों का सबसे विशेष गुण इनका आकार में छोटा होना है और छोटा होते हुए भी ये बड़े भाव व विचार को प्रकट करने में सक्षम होते हैं। मुहावरे सहज व नैसर्गिक होते हैं। अतः इनका रूप परिवर्तन नहीं किया जा सकता। मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर पर्यायवाची शब्द नहीं रखे जा सकते। मुहावरे ऐसा वाक्यांश होते हैं जो अभिधार्थ से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ का बोध कराए और सामान्य अर्थ से भिन्न किसी और अर्थ में रूढ़ हो जाए। मुहावरे सामान्य शब्दों की भांति अंतःकेन्द्रित नहीं होते हैं बल्कि बहिर्केन्द्रित होते हैं। ये लिंग, वचन, पुरूष, काल, निषेध, प्रश्न आदि के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं। इनमें क्रिया अनिवार्य होती है और इसका अंत मूल क्रिया से अर्थात् 'ना' से अन्त होने वाली क्रिया से होता है। मुहावरे किसी दशा, क्रिया या क्रिया व्यापार की अभिव्यक्ति होते हे।

वैसे तो हर भाषा में लोकोक्तियों व मुहावरों की अपनी एक अलग जगह होती है किन्तु एक हिंदी अनुवादक को हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान होने के साथ–साथ उन भाषाओं के सामाजिक व लोक

* हिन्दी अनुवादक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जीवन तथा वहाँ के देशज शब्दों, लोकोक्तियों व मुहावरों की जानकारी भी होनी चाहिए। मैं यहां नीचे हिंदी व अंग्रेजी के समान भावों को व्यक्त करने वाले मुहावरों व लोकोक्तियों को उनके अंग्रेजी अनुवाद के साथ वर्णित कर रही हूँ।

लोकोक्तियां/मुहावरे

ऊंट के मुंह में जीरा–A drop in the ocean, अंत भला तो सब भला–All is well that end's well, कहे खेत की सुने खलिहान की–Talk of chalk and hear of cheese, कर भला तो हो भला– Light reflects light, एक पंथ दो काज–To kill two birds with one stone, अंधे के आगे रोए, अपने नैना खोए भैंस के आगे बीन बजाना–To throw pearls before swine, दूध का जला छाछ भी फूंक–फूंक कर पीता है–The burnt child dreads the fire, जैसा अन्न, वैसा मन–Men muse as they use, जो गरजते हैं, वो बरसते नहीं–Barking dogs seldom bites, जैसी करनी, वैसी भरनी–As you saw, so shall you reap, नाम बड़े दर्शन छोटे–Much cry little wool, दूर के ढोल सुहावने–Distance lends enchantment to the view, चित भी मेरी पट भी मेरी–Head I win, tails you lose, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत–It is no use crying over spilt milk-After death the doctor, छुपा रुस्तम–A rough diamond, नौ नगद न तेरह उधार–A bird in hand is better than two in the bush, मुंह में राम, बगल में छुरी–A wolf in the lamb's clothing, सहज पके सो मीठा होय–Slow and steady wins the race, होवे है वही जो राम रचि राखा–Man proposes God disposes, करत–करत अभ्यास, जड़मति होत सुजान–Practice makes the man perfect, नीम–हकीम, खतरा–ए–जान–Little knowledge is a dangerous thing, भागते चोर की लंगोटी ही सही–Something is better than nothing, नाच न जाने, आंगन टेढ़ा–A bad worksman quarrels with his tools, थोथा चना, बाजे घना–An empty vessel make much noise, दाल में कुछ काला होना–Smell a rat, बली का बकरा होना–Throw before wolves, बात का बतंगड़ बनाना–To make mountain out of mole hill, रोटी कमाना–To earn livelihood, चावल और दोस्त, पुराने ही अच्छे–Old is Gold- जिसकी लाठी उसकी भैंस–Might is right, करो या मरो–Do or Die, छठी का दूध याद दिलाना–To be in tight corner, जिस थाली में खाना उसी में छेद करना–Bite the hand that feeds you, एक हाथ से ताली नहीं बजती–It takes two to make quarrel, एक ही थाली के चट्टे–बट्टे–Birds of same feather, देखें ऊंट किस करवट बैठता है–See how the cat jumps- Which way the wind blows, लोहा ही लोहे को काटता है–Diamond cuts diamond, जितने मुंह उतनी बातें–So many men, so many minds, जैसे को तैसा–Tit for tat-,

सामान्य अर्थ में लोकोक्तियां व मुहावरे एक जैसे प्रतीत होते हैं परन्तु ऊपर हमने जाना कि ये एक–दूसरे से कितना भिन्न हैं। कुछ भी हो पर इनके प्रयोग से भाषा का श्रृंगार होता है। ये हर भाषा के प्राण होते हैं इसलिए किसी भाषा की समुचित जानकारी के लिए उसके मुहावरों व लोकोक्तियों की जानकारी होना बहुत आवश्यक है। ये लोकानुभवों की सिद्ध मणियां है। इनमें युग–युगान्तरों का अनुभव बोलता है। ये नैतिक, सामाजिक व धार्मिक जीवन की आधारशिला हैं। ये भावों की अभिव्यक्ति को सशक्त, प्रभावशाली, अलंकारिक, प्रभावोत्पादक, तर्कपूर्ण तथा व्यवस्थित बनाते हैं। इनसे भाषा का सौन्दर्य निखरता है। इनसे संप्रेषणियता बढ़ती है। इनके प्रयोग से भाषा में लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता तथा ध्वन्यात्मकता आती है।

विश्व मंच पर हिंदी

1. भारत को बेहतर ढंग से जानने के लिए दुनिया के करीब 115 शिक्षण संस्थानों में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन होता है।
2. अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है।
3. ब्रिटेन की लंदन यूनिवर्सिटी, कैंब्रिज और यार्क यूनिवर्सिटी में हिंदी पढ़ाई जाती है।
4. जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों में हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। कई संगठन हिंदी का प्रचार करते हैं।
5. चीन में 1942 में हिंदी अध्ययन शुरू। 1957 में हिंदी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरंभ हुआ।

महान आदर्श महान मस्तिष्क का निर्माण करते हैं।

अहसास अपनेपन का

के.सी.एस. नेगी*

सपाट चल रही जिन्दगी में यदि कोई धनात्मक हलचल हो जाती है तो जिन्दगी जीने का मजा अच्छा ही नहीं, बहुत अच्छा लगने लगता है. ऐसा ही एक दिन मेरे साथ हुआ – जब मेरे मोबाइल में उस पार से आवाज आयी– मैं चंदर सिंह पुंडीर बोल रहा हूँ, कैसे हैं आप लोग? पहले यकीन नहीं आया क्योंकि बोलने वाला मेरा 50 साल पहले का भाई था। कौतुहलवश कुशलक्षेम पूछने के बाद उन्होंने अपने भाई की लड़की के शादी में सपरिवार गाँव पुन्डोली (टिहरी गढ़वाल) में आने का न्योता दिया। मैं पहले ही अचंभित था और मैंने बगैर देर किए हामी भर दी।

दरअसल श्री चंदर सिंह पुंडीर जी मेरे पिता जी के साथ काम करते थे और मेरे बचपन के दिनों में हमारे गाँव कई सालों तक पिता जी के साथ आते रहते थे। समय की विडम्बना देखिये 50 साल बाद उनसे संपर्क हुआ वो भी एक इत्तिफाक से कि इनलैंड कंटेनर डिपो पटपड़गंज में मेरी तैनाती के दौरान बिपिन पुंडीर नाम के एक कंटेनर लाइन में काम करने वाले कर्मचारी से मेरी मुलाकात हुई। बातचीत से पता चला कि वह उसी गाँव का रहने वाला है जिस गाँव से चंदर सिंह पुंडीर जी रहने वाले थे। बस संचार क्रांति का फायदा ऐसा हुआ कि पहले सम्पर्क में भूली–बिसरी यादों का सिलसिला अनवरत चलने लगा। आश्चर्य की बात यह थी कि जितना कौतुहल हलचल मेरे अंदर पैदा हुआ उससे कई गुना ज्यादा चंदर सिंह जी महसूस कर रहे थे। गाँव के सभी बड़े बूढ़ों के कुशलक्षेम के साथ वे गाय, भैसों, बैलों, खेतों व पेड़ों के नाम लेकर उनकी भी कुशलता पूछते जा रहे थे।

आखिर अब वह वक्त भी आ गया जब मैं पहाड़ों की ऊँची–नीची घुमावदार डरावनी सड़कों से ऋषिकेश, चम्बा व टेहरी डैम से होकर भिलंगना नदी के किनारे–किनारे होते हुए उनके घर के पास पहुँच गया। वहां जाते क्या देखता हूँ कि पुंडीर जी अपने बच्चों के साथ मुझे रिसीव करने के लिये सड़क पर पहले से मौजूद हैं और गाड़ी से नीचे उतरते ही उन्होंने

मुझे अपनी बाँहों में भींच लिया। मेरा पूरा शरीर उनके इस अनुराग से पुलकित हो गया। ऐसा स्नेह, अनुराग मैंने अपने जिन्दगी में शायद पहली बार महसूस किया। अपने घर में सभी लोगों के साथ परिचय कराने व जलपान कराने के बाद वे मुझे अपने छोटे भाई के घर ले गए जहां शादी की तैयारियों में पूरा गाँव जुटा हुआ था। मेरे उनके घर जाते ही दमुआ व ढोल बजने लगा– यह किसी भी आगन्तुक मेहमान के आने के स्वागत में बजाया जाता है और गाँव वालों ने इस परम्परा को सजीव बनाए रखा है। दूसरे दिन दुल्हन को पूरे गाँव की महिलायें 'हल्दी रस्म' के तहत हल्दी लगा रही थी और बाद में 51/101 रुपये के नोटों की माला बारी–बारी से दुल्हन को मंत्रोचारण के साथ पहना रही थी। दूसरी तरफ गाँव के सारे पुरुषगण 'अर्श' (एक खास पकवान, जो शादी के दौरान चावल व गुड़ से बनाया जाता है) को बड़े–बड़े कढ़ाहो में तैयार करने में लगे हुए थे। दूसरे दिन भी गाँव की सारी महिलाएं बरातियों को मिलाकर 400 लोगों से अधिक लोगों के लिए रोटियाँ बनाने में पूरे जोश के साथ जुटी हुई थी व पुरुष वर्ग सब्जियाँ, हलुआ और अन्य व्यंजन बनाने में। गाँव में ऐसी एकजुटता व ऐसी स्वस्थ परम्परा आज के समय में एक बहुत बड़ी मिसाल है। ऐसे मौकों पर शहरों में जहां हर कार्य के लिए पैसा ही बोलता है– वहां गाँवों में आपसी सहयोग व आपसी भाईचारा बोल रहा था। वाकई में लग रहा था कि दुल्हन एक की बेटी

* पूर्व वरिष्ठ सहायक प्रबन्धक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

नहीं बल्कि पूरे गाँव की बेटी है। मैं भी गाँव का रहने वाला हूँ और गाँव के रीति–रिवाजों से पूरी तरह वाकिफ भी हूँ लेकिन जो सहयोग, आपसी प्रेम पुन्ड़ोली गाँव टेहरी जनपद गढ़वाल में देखने को मिला– बेमिसाल अनुभव था और सबसे बडी बात गाँव से पलायन नहीं के बराबर नजर आया व पूरे गाँव में किसी मकान में ताला लगा व खंडहर नहीं दिखाई दिया।

अब वक्त था विदाई का क्योंकि मैंने वापसी यात्रा का हरिद्वार से ट्रेन से आरक्षण करवा लिया था अतएव उनके और रुकने का बार–बार अनुरोध मुझे शालीनता के साथ अस्वीकार करना पड़ा और इसी बीच पुण्डीर जी की धर्मपत्नी तीन पोटलियों में अर्श (शादी में बना जो मेहमानों को भेंट स्वरूप दी जाती है), अपने घर की उपज – दाल, चावल व एक डिब्बा घर का बना घी ले आयी और कहने लगी ये आपके घर के लिये है। मैं उनके इस तरह के प्रेम को देखकर मना करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। मैंने फिर चलने के लिए विदा ली तो देखा उनका पूरा परिवार नम आखों से मुझे विदाई दे रहा है और पुण्डीर जी के आँखों में आँसू! मैंने सोचा कि इन लोगों के अंदर मेरे प्रति खासकर मेरे माता जी व पिता जी के प्रति जो श्री पुण्डीर जी के बातों से स्पष्ट झलक रहा था– अभी तक कितना प्रेम–भाव समाये हुए हैं। दूसरी तरफ मैं निर्मोही जो अपने कार्यकाल के दौरान इक्कीस मकान–मालिक बदलने व चौदह जगहों पर ट्रांसफर होने से निष्ठुर बन गया था। उन्हें फिर उनके यहाँ आने के वादे के साथ मैं टैक्सी में बैठ गया लेकिन जैसे टैक्सी चल पड़ी मेरे आँखों में भी आँसुओं की धारा अनायास बह निकली। मैं रास्ते भर यह सोचता जा रहा था कि अपनेपन का अहसास केवल अपनों से ही नहीं– किसी से भी हो सकता है और ऐसे अहसास में जिन्दगी जीने का आनन्द कुछ और ही है।

हिंदी संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी

1. संविधान के भाग–17 (अनुच्छेद 343–351) कुल–9 अनुच्छेदों में राजभाषा हिंदी का प्रावधान है।
2. भारत की संविधान सभा में हिंदी को राष्ट्रभाषा नियत करने का प्रस्ताव तमिल भाषी गोपाल स्वामी आयंगर ने रखा था जिसे समर्थन दिया था:–

मराठी भाषी	–	श्री शंकर देव ने
तेलुगु भाषी	–	सुश्री दुर्गा बाई ने
उर्दू भाषी	–	श्री मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद ने
गुजराती भाषी	–	श्री कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी ने
कन्नड़ भाषी	–	श्री कृष्ण मूर्ति ने

3. राजा राम मोहन राय ने अपने बंगाली समाचार पत्र ''बंगपत्र'' में एक पृष्ठ हिंदी के लिए नियत किया था।
4. तमिल के सुप्रसिद्ध कवि श्री सुब्रहमण्यम भारती ''इंडिया'' नामक अपनी पत्रिका में एक पृष्ठ का प्रकाशन हिंदी में नियमित रूप से करते थे।
5. गुजराती भाषी महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपना युग प्रवर्तक ग्रंथ ''सत्यार्थ प्रकाश'' हिंदी में लिखा।
6. सन् 1918 में गांधी जी वाइसराय से इसी शर्त पर मिलने के लिए राजी हुए थे कि वे उनसे बातचीत हिंदी में करेंगे।
7. अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी का कामकाज 1920 ई. से हिंदी में किया जाने लगा था।
8. पंडित मोती लाल नेहरू ने सन् 1928 में एक रिपोर्ट में सिफारिश की थी कि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी होनी चाहिए।
9. सन् 1928 ई. में कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में राष्ट्रभाषा सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष के रूप में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने वक्तव्य दिया था – 'यदि हम लोगों ने तन, मन, और धन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नहीं जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा हिंदी होगी ।
10. 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।
11. संविधान सभा ने दिनांक 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था।

जब होगी मन में निष्ठा, तब बढ़ेगी हिंदी की प्रतिष्ठा ।

जीवन का मक़सद

सागरिका दत्ता*

न जाने तुम क्या बन कर आए थे ज़िंदगी में मेरे
पर इतना जानती हूँ,
कुछ मक़सद होता हैं सभी हादसों के पीछे।।
मिलना–बिछड़ना, बिछड़कर मिलना,
यह तो वक्त का खेल है

जीवन मे घटी हर घटना की, एक कहानी जरूर होती है, उसको समझो तो सीख दे जाती है, न समझो तो गम के रंग में रंग जाती है।

मार्च का महीना था। करीब शाम के 6.00 बजे टेलीफ़ोन की घंटी बजी और आवाज़ सुन मैं स्तब्ध रह गई। मेरे हाथ–पैर कांपने लगे थे, क्या करूँ कुछ समझ नहीं आ रहा था। किसी तरह गाड़ी निकाली और तुम्हें फोन मिलाया, क्यूँकि शायद तुम्हारा घर उस रास्ते में ही पड़ता था। मेरे एक करीबी दोस्त की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। जब तक मैं पहुँची उसके शव को सरकारी अस्पताल ले गए थे।

हमारे मिलने का तरीका भी बड़ा अजीब था, एक हादसे ने मिलवाया और हमारी कहानी भी एक हादसा बनकर ही ख़त्म हो गई। हादसों को लोग अक्सर तब तक ही याद रखते है जब तक वो चर्चा में बनी रहती हैं। फिर चर्चा ख़त्म क्योंकि नित नई–नई घटना घटती रहती है। समय बीतता गया और हमारा रिश्ता भी मज़बूत होता गया। लोग किसी भी रिश्ते में ऐसा क्यूँ चाहते है कि, जिसे वे खुद से ज्यादा प्यार करते हैं, वह हमेशा सिर्फ उनके साथ ही रहे। पर जीवन में कई रिश्ते ऐसे होते है जिसे समानता से निभाने की जरूरत होती है। एक पति या बेटा सिर्फ अपनी पत्नी या माँ का नहीं होता, वो किसी का बेटा या पति भी होता है। पर शायद उनसे बहुत अधिक प्यार होने के कारण उनका किसी और काम में या किसी दूसरे रिश्ते में अधिक व्यस्त रहना दिल को खटकता है। अब दिल को कौन समझाए, कहते है न दिल तो बच्चा है जी .....अपनी जिद आसानी से नहीं छोड़ता।

मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था..... तुम्हारा किसी और के लिए अधिक लगाव होना – वो काम या कोई व्यक्ति ही क्यों न हो, कुछ चिढ़–सी मच जाती थी। उसे मोहब्बत कहें या ईर्ष्या मालूम नहीं। शायद मुझमें ही कहीं बदलाव आया था, मैं इस रिश्ते को कुछ ज्यादा ही अपना मान बैठी थी। हमारे बीच कई तकरार हुए, लड़ते–झगड़ते फिर खुद ही सब सुलझाते। पर आप किसी भी घाव पर कितना मरहम लगाएंगे, जब आपको ज्ञात है कि वो घाव जानलेवा है, कभी ठीक नहीं हो सकता। फिर भी आदमी तब तक कोशिश करता हैं,जब तक उसमें उससे लड़ने की ताकत व हौसला होता है। हमारा रिश्ता भी उस घाव की तरह ही बन गया था जो ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा था। एक समय ऐसा आया कि मेरा तुमसे कुछ भी सवाल करना या सलाह देना भी तुम्हें अखरने लगा था।

बदले में तुम मुझे जवाब देते– मुझसे मेरे घर वाले ही सवाल नहीं करते फिर तुम कौन होती हो। एक पल में ही तुमने मुझे पराया कर डाला। यह तो प्यार का हिस्सा नहीं हो सकता। यह सब सुनकर मैं खुद के लिए ही सवाल बन बैठी, मेरे शब्द मानो मुँह ने निगल लिए हों, होंठ मानो किसी ने सी दिये हो, और आँसू तो बिना बंद हुई बारिश की तरह बहने लगे.... ऐसा लग रहा था मानो मैं गूंगी हो गई हूँ। क्या रिश्तों में सवाल करना या सलाह देना किसी की आज़ादी छीन लेने के समान होता है। किसी को जानने या समझने में कभी–कभी

* हिन्दी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी।

जिसके पास उम्मीद है, उसके पास सब कुछ है।

पूरी उम्र निकल जाती हैं तो कभी एक दिन, एक हफ्ता या एक साल भी काफ़ी होता है कि आप जान जाते हो कि वो इंसान कैसा है। मेरा मानना है कि किसी भी रिश्ते को अगर आप दिल से इज्ज़त न दे तो वे चिरस्थायी नहीं रहते हैं।

मैंने तो सिर्फ कुछ पल मांगे थे, इतना चाहा था कि मेरे अकेलेपन को, सूनेपन को तुम अपने प्यार से भर दो। गलती इतनी सी थी कि तुम्हें अपना अस्तित्व माना, खुद से ज्यादा चाहा। भूल तो हो गई, अब सुधारने की जरूरत थी।

दिल पूछता है कि प्यार को तू गलती का नाम क्यूँ दे रही?
बोझ समझों तो घुटन होने लगती है,
शिद्दत से निभाओ तो जीने की वजह मिल जाती है।।

प्यार करने और निभाने में बहुत फर्क होता है। इस राह पर चलने से जितना सुकून मिलता है, उतने ही काँटे भी बिछे होते है, जिसे पार कर मंजिल तक पहुँच जाएं तो जीवन स्वर्ग बन जाता है। शायद हमारे प्यार का समय यही तक था। उस दिन मन में बस एक ही ख्याल आया कि जिंदगी में किसी का मिलना या बिछड़ना एक संजोग नहीं होता, उसमें कुछ न कुछ रहस्य अवश्य छिपा होता है। उस मकसद को यदि हम पहचान जाएं तो जीवन जीने में आसान हो जाता है। जीवन में घटी सभी घटनाओं की हर एक कड़ी तुम्हें कुछ न कुछ अवश्य सिखा जाती है। यह सीख जीवन में आए किसी भी कठिनाई या मुसीबत से लड़ने का हौसला पैदा कर देती है।

हमारी कहानी का अंत तो हो गया पर इस अंत के साथ–साथ मेरे अंदर एक ऐसी ऊर्जा का उद्‌भव हुआ जिससे मैं अपने शत्रुओं से, लोभ से, माया से, अहंकार से, ईर्ष्या से, हर एक बाधाओं से लड़ने के लिए सक्षम हो गई। अब मुझे किसी का डर नहीं – न मृत्यु का न ही किसी को खोने का। मैं यह नहीं सोचती कि लोग मेरे साथ कैसे पेश आते है, कैसा व्यवहार करते हैं; बस जब तक यह जीवन है सभी से अच्छे संबंध बनाती रहूँ क्यूंकि जीवन में मोह–माया, लोभ, ईर्ष्या, अहंकार सब मिथ्या है, सत्य तो केवल एक ईश्वर है, जिसे हम भिन्न–भिन्न रूप से पूजते हैं। अब मुझे ज्ञात हो गया कि मेरे जीवन का मकसद क्या है।

रचनाकार कृपया ध्यान दें

- कृपया पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख सीधे निगमित कार्यालय के राजभाषा अनुभाग के मेल : *rajbhasha.cwc@gmail.com* पर या डाक द्वारा भेजें।
- रचनाएं भेजते समय कृपया इस बात का ध्यान रखें कि वह स्तरीय हो तथा समाज, साहित्य एवं संस्कृति से जुड़ी हुई हो।
- भंडारण से संबंधित रचनाओं को प्रकाशन के लिए प्राथमिकता दी जाएगी तथा प्रकाशित रचनाओं पर पुरस्कार या मानदेय भी प्रदान किया जाता है।
- लेख के साथ इस आशय की घोषणा होनी चाहिए कि लेख या रचना लेखक की मौलिक रचना है।
- यदि किसी कारणवश लेख या रचना पत्रिका में प्रकाशित करनी संभव न हो तो उसे लौटाया नहीं जाएगा।
- निगम के सेवानिवृत अधिकारी एवं कर्मचारी भी अपनी रचनाएं प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं। यदि वे पत्रिका पढ़ने के इच्छुक हों तो अपना पता इस कार्यालय को भेज दें ताकि उन्हें पत्रिका भेजी जा सके।
- आप अपनी रचनाएं निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं:–

प्रबंधक (राजभाषा), केन्द्रीय भंडारण निगम,
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, अगस्त क्रान्ति मार्ग
हौज खास, नई दिल्ली–110016

धैर्य कड़वा है लेकिन इसका फल मीठा है।

भारतीय सेना को सलाम

रविशंकर रवि*

यही हैं भारत के सम्मान,
न भूलें हम इनका बलिदान,
तिरंगा है भारत की शान,
कितने घर उजड़े हैं, कितनों ने लहू बहाया,
सुहागिनों की माँग उजड़ी, कितनों ने लाल गवाँया,
तिरंगा है भारत की शान।

जंगे आजादी मे फिरंगी लाख गोलियां दागे,
गांधी, सुभाष, आजाद, भगत, बढ़ते जाते थे आगे,
हुआ फिरंगी सत्ता का चूर–चूर अभिमान,
यही है भारत के सम्मान।

पड़ी जरूरत देश को जब–जब सबने साथ दिया है,
देश के खातिर महिलाओं ने भी बलिदान दिया है,
न भूलें, रानी झांसी का बलिदान,
तिरंगा है भारत का सम्मान।

हुआ फिरंगी ढेर जंग में उसने मुंह की खाई,
पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालिस को, आजादी पाई,
तिरंगा भारत की पहचान,
तिरंगा है भारत की शान।

मीरा, कबीर, सूर, तुलसी ने धर्म का पाठ पढ़ाया,
स्वामी जी के उपदेशों ने भारत का मान बढ़ाया,
ये भी हैं भारत के सम्मान,
ये भी हैं भारत की शान।

यही देश है दुनिया का जिसकी है शान निराली,
मिल–जुल कर खुशियाँ बाँटे होली, ईद, दीवाली,
यहां है सब धर्मों का सम्मान,
इसलिए है, भारत देश महान।

---

* कनिष्ठ अधीक्षक, सैंट्रल वेअरहाउस, लखनऊ

'पेड़ लगाओ, जल बचाओ'

विनीत निगम*

पानी–पानी का शोर मचा है, पानी बचा ना बूँद।
अब तो होश में आओ लोगों, क्यों करते तुम भूल।।
चुल्लू भर भी नहीं बचा तो, कैसे जीयोगे दो जून।
आने वाली नस्लों को, क्या देकर जाओगे मरुभूमि?

क्यों कर रहे तुम, यूँ अपनी ही मनमानी।
इसकी कीमत, आने वाली नस्लों को पड़ेगी चुकानी।।
सोचो और विचार करो, कहीं बहुत देर न हो जाए।
जिसकी जितनी हैसियत, उतना तो काम कर जाए।।

कभी किसी की मनमानी, नहीं चली कुदरत से।
जब–जब अति करी जगत ने, बाद बहुत पछताया।।
कहीं अति वर्षा, तो कहीं सूखा खूब दिखाया।
कहीं डूब गयी सब फसलें, ऐसा खेल रचाया।।

ना बचा अन्न खाने को, ना पीने को पानी।
मरे मवेशी सारे, बंजर हो गयी धरती रानी।।
महामारी का तांडव, जिसने देखा पछताया।
समय–समय पर ऐसा रूप, सदियों से होता आया।।

बीमारी से पहले ज्यों, ज्वर आहट दे देता है।
उसी तरह आने वाले संकट की, सूचना प्रभु दे देता है।।
मान लिया तो जगत का, कल्याण–ही–कल्याण।
इसीलिए कहता हूँ– 'पेड़ लगाओ, जल बचाओ'
हरी–भरी श्यामला धरती, बच्चों को दे जाओ।

---

* पूर्व प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

हिंदी भाषा सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली महान भाषा है।

संस्मरण

जे.पी. बेंजवाल*

जीवन का सफर जीवित रहने तक अविरल है। परन्तु संस्मरण शब्द का उच्चारण करते ही यह अविरलता कुछ क्षणों के लिए ठीक उसी प्रकार ठहर जाती है जैसे कोई पथिक मार्ग में चलते चलते बैठता है, आराम पाकर फिर चले चलता है और पुनः जीवन का सफर अविरल बनाये रखता है।

यथा ही पथिकः कश्चितछाया भाश्रित्य तिष्ठतिः।
विश्रामश्च पुनर्गच्छेत दृदभत समागमः।।

दूसरे शब्दों में संस्मरण जीवन के कुछ सकारात्मक क्षणों का वह समूह है जिसमें मनुष्य के वो सभी वृतान्त निहित हैं, जब उसे कोई अपार प्रसन्नता हुई हो, जब वह किसी महापुरूष से मिला हो, जब उसे कोई मनचाही वस्तु प्राप्त हुई है, जब कोई सुखद अनुभूति हुई हो इत्यादि। इसी प्रकार अपने जीवन के एक वास्तविक संस्मरण, जब मुझे प्रकृति के गोद में एक सुखद अनुभूति हुई थी, के बारे में मेरी लेखनी अनायास ही इस तरह चली जा रही हैः–

ऊखीमठ की जेठ महीने की सुबह। नीले आकाश में उड़ रहे पंछी आजाद। भारत धर्मशाला से हम प्रातः 5 बजे ही चल पड़े। गन्तव्य स्थल पहुंचने में दो घण्टे का समय लगता था। एक घण्टा कार से, बाकी पैदल। सड़क मार्ग समाप्त होते ही मैंने कार खड़ी कर ली। पर्यटक स्थल वहां से तीन किमी. की दूरी पर था। सुबह के छः बज रहे थे, पर्यटकों की संख्या में कोई कमी नहीं थी। अधिकतर पश्चिम बंगाल से आये थे बच्चे, जवान, बूढ़े सभी। अपने साथ आये बच्चों व बुजुर्गों की सुरक्षा के लिए तत्पर बंगाली महिलायें चिल्लाती – कोई गिरे नहीं, कोई फिसले नहीं, नीचे की तरफ न जायें, सामने देख कर चलें। बच्चों को उनके पिताओं ने गोदी या कन्धों में बिठा लिया। बुजुर्गों का हाथ थामे जवान महिलायें व पुरूष थे। वातावरण में कौतूहल था। पत्नी ने आग्रह किया कि तनुज को गोदी में उठा लो या पीठ में बैठा लो। मैंने सोचा कि बेटे को स्वनिर्भर बनाना है। वह पूरे चार वर्ष का भी नहीं था। पत्नी अपनी भाषा छोड़ बेटे से दूसरी भाषा में बोली– ''बेटा प्लीज गो टू पापाज लैप'' पर मैं जो ठहरा, ठान ली कि बच्चे को स्वनिर्भर बनाना ही है। जैसा मैं स्वयं हूं। उसे पैरों पर खड़े होना है, उसने जीना है तो सीखना होगा, लड़ना होगा, इसी का नाम संघर्ष है। जीवन संघर्ष। हम तीनों चलते गये। ठंडी बयार के साथ जिन्दगी के कलैण्डर के पन्ने भी उड़ते जा रहे थे। साथ–साथ चल रही महिला पर्यटकों की सुन्दर रेशमी जुल्फें भी किन–किन थपेड़ों से संघर्ष करती दिख रही थीं। कुछ दूर चलने के बाद मुझे थकावट का अहसास होने लगा। मेरे भीतर का सुकोमल पिता जागृत हो उठा। पूछने लगा 'जब तुम ही थक गये हो तो चार वर्ष का बालक भला कैसे चल पाएगा'? मेरी भुजायें स्वतः ही उसे गोदी में उठाने के लिए बढ़ी। उसके मां के मुख पर अब संतुष्टि और प्रसन्नता का भाव स्पष्ट दिख रहा था। परन्तु यह क्या! बेटे ने गोदी में आने से साफ मना कर दिया। मां ने उसे रिमोट कार व अन्य कई प्रलोभन दिये, परन्तु नहीं। अब वह पैदल चलने में आनन्दित था। होता भी क्यों नहीं? मैं समझ गया था कि अब वह प्रकृति की गोद में था तो भला मेरी गोद में क्यों आता? मुझे छायावादी कवि चन्द्र कुंवर बर्त्वाल की कविता याद आ गई।

अब छाया में गुंजन होगा, वन में फूल खिलेंगे।
दिशा–दिशा अब सौरभ के धूमिल मेघ उठेंगे।
जीवित होंगे वन निद्रा से, निद्रित शैल जगेंगे।
अब तरूओं में मधु से भीगे, कोमल पंख उगेंगे।

कवि की उक्त कल्पना अब साकार हो चुकी थी और चार वर्ष का बालक प्रकृति की इसी सुन्दरता का आनन्द ले रहा था, मुझे अपने विद्यालय के दिनों का स्मरण आ रहा था जब हमारे हिन्दी के शिक्षक नरोत्तम दास की कविता ''कृष्ण सुदामा'' पढ़ा रहे थे और मुझे उनकी अभिव्यक्ति में चावल के स्वाद और खुशबू की

* भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली।

अनुभूति हुई थी। उस अनुभूति को सिर्फ महसूस किया जा सकता है, शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। मैं समझ गया था कि मेरा पुत्र उसी प्रकार से प्रकृति की सुन्दरता की अनुभूति महसूस कर रहा है। अब मुझे उसकी थकावट की परवाह न थी। मैं चाह रहा था कि हमारा सफर कुछ देर और चले परन्तु अब हमें अलग होना ही था क्योंकि हमारा गन्तव्य स्थान आ चुका था – उत्तराखण्ड स्थित वह झील जो 2438 मीटर की ऊंचाई पर प्राकृतिक रूप से बनी है जिसकी ऊंचाई और गहराई आज तक के विश्व के लिए रहस्य है और जिसका नाम है – देवरिया ताल। इस ताल की सुन्दरता देखते ही बनती है। परन्तु कुछ समय बाद हमें इस स्थान से पृथक होना था परन्तु यहां की सुन्दरता से अलग होने का मन नहीं था। मदाक्रान्ता छन्द की यह पंक्तियां उस क्षण के लिए सटीक थी –

प्राणा धारे परम सलिले प्रेम की मूर्ति राधे !
निर्माता ने पृथक हमको क्यों किया है अभी से !!

राजभाषा का समन्वय

सच्चिदानंद राय*

हिन्दी अब सबकी बन भाषा,
फैल रही बन जन की भाषा।
सभी राज्यों में फ़ैल रही है,
अपना वजूद यह तौल रही है।

हिन्दी राजभाषा के पद पर,
जिस दिन से आसीन हुई।
अँग्रेजी के एकछत्र प्रचलन में,
बेतहाशा ही कमी हुई।

यह एक शुभ संकेत है,
भाषा के विकास का।
धीरे–धीरे राजभाषा के,
कार्यालयीन प्रकाश का।

देश की आजादी से चलकर,
आज के इस दौर तक।
हर स्तर पर फलती–फूलती,
बनती सिरमौर तक।

राजभाषा के पद पर बैठी,
भाषा भाव सरल कर देती।
हिन्दी ही हिन्दी व्यापी हो,
पत्राचार सुगम कर देती।

एक देश की एक ही भाषा,
राज्यों की सीमा के पार।
आओ मिलकर कदम बढ़ाएँ,
सरल हो जाए पत्राचार।

देवनागरी लिपि है इसकी,
जन–जन की हुई प्यारी है।
यह आगे बढ़ जाएगी,
भारतीय भाषा हमारी है।

कार्यालयीन भाषा है यह,
देश के सरकारी कार्यालयों में।
कर भाषाओं को भाषांतरित,
सेवारत है देश के हित में।

बनकर उदार, कर समावेश,
कुछ प्रचलित शब्दों को।
भर उमंग मिलकर रहती संग,
ले अन्य भाषा के शब्दों को।

हिन्दी अब अपने सरल भाव में,
बहती जाती हर धूप–छांव में।
इतनी सरल, सुगम बन जाती,
हर भारतीय के मन को छू जाती।

समाचार पत्रों में छप कर,
जन–जन की चहेती बनकर।
आम आदमी की जुबान पर,
आ जाती है वाणी बन कर।

इस प्रकार विस्तारित हो कर,
पूरा देश प्रचारित हो कर।
गणमान्यों की चढ़ जुबान पर,
शोभित हुई अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर।

राजभाषा अब जन–जन की भाषा,
इससे है हर जन को आशा।
है यह राज्यों की कठिन साधना,
एकभाषा के सूत्र में बंधना।

सही भाव संचारित होता,
जन–जन जिससे वाकिफ होता।
देश का गौरव है राजभाषा,
यह जन के सम्मान की भाषा।

प्रत्येक सितम्बर माह में इसकी,
चहल–पहल बढ़ जाती है।
सरकारी से ले गैर–सरकारी,
महकमों में राजभाषा सज जाती है।

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

ज्ञान बोलता है, लेकिन बुद्धि सुनती है।

भंडारण भारती पत्रिका राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) से सम्मानित

निगम के लिए यह अत्यंत प्रसन्नता और गौरव की बात है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका भंडारण भारती को वर्ष 2017–18 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के अंतर्गत 'क' क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

निगम के प्रबंध निदेशक महोदय ने यह पुरस्कार दिनांक 14.09.2018 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित 'हिंदी दिवस समारोह' के अवसर पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडु जी के करकमलों से प्राप्त किया।

उल्लेखनीय है कि निगम को पत्रिका प्रकाशन के क्षेत्र में पहली बार यह सम्मान प्राप्त हुआ है। निगम इस त्रैमासिक पत्रिका के वर्ष में चार अंक प्रकाशित करता है जिसमें सामान्य अंक सहित दो विशेषांक प्रकाशित होते हैं जिसमें से एक ''भंडारण विशेषांक'' तथा दूसरा ''राजभाषा विशेषांक'' के रूप में प्रकाशित किया जाता है।

हिंदी एक सशक्त और सरल भाषा है।

निगमित कार्यालय में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह एवं त्रैमासिक पत्रिका भंडारण भारती का विमोचन

भारतीय सांस्कृतिक विरासत की आधारशिला है – हिंदी ।

केन्द्रीय भंडारण निगम को आईएसओ का मानक प्रमाणन

दिनांक 11.09.2018 को क्यूएमएस/ईएमएस के लिए आईएसओ प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए निगम के प्रबंध निदेशक। इस अवसर पर उपस्थित निदेशक (एमसीपी), निदेशक (वित्त) तथा निगम के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

निगम तथा एलपीएआई के बीच समझौता ज्ञापन

आईसीपी, अटारी, अमृतसर में कार्गो प्रचालन के प्रबंधन हेतु दिनांक 31.08.2018 को निगम तथा एलपीएआई के बीच समझौता ज्ञापन के अवसर पर उपस्थित निगम के प्रबंध निदेशक, निदेशक (वित्त) तथा एलपीएआई के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारी।

हिंदी एक सशक्त और सरल भाषा है।

निगम तथा मैसर्स एमएसटीसी लि. के बीच समझौता करार

दिनांक 10.09.2018 को निगम तथा मैसर्स एमएसटीसी लि. के बीच फारवर्ड ई–ऑक्शन सेवाएं प्राप्त करने हेतु समझौता करार के अवसर पर उपस्थित निगम के प्रबंध निदेशक, निदेशक (एमसीपी), निदेशक (वित्त) तथा निदेशक (वाणिज्यिक), एमएसटीसी तथा निगम एवं एमएसटीसी के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

निगम तथा राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान के बीच समझौता ज्ञापन

दिनांक 31.09.2018 को निगम तथा राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान के बीच समझौता ज्ञापन के अवसर पर उपस्थित निगम के समूह महाप्रबंधक (कार्मिक) क्षेत्रीय प्रबंधक, हैदराबाद एवं मैनेज के महानिदेशक एवं निदेशक तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

ज्ञान बोलता है, लेकिन बुद्धि सुनती है।

गत वर्ष आयोजित वार्षिक साधारण बैठक की झलकियाँ

जब होगी मन में निष्ठा, तब बढ़ेगी हिंदी की प्रतिष्ठा।

निगमित कार्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण

हिंदी राष्ट्रीय एकता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम (2018-19)

क्र. सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र		'ख' क्षेत्र		'ग' क्षेत्र	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100% 100% 65% 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90% 90% 55% 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55% 55% 55% 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%		100%		100%	
3.	हिंदी में टिप्पण	75%		50%		30%	
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%		60%		30%	
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपि की भर्ती	80%		70%		40%	
6.	हिंदी में डिक्टेशन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं अथवा सहायक द्वारा)	65%		55%		30%	
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%		100%		100%	
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%		100%		100%	
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिन्दी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%		50%		50%	
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%		100%		100%	
11.	वेबसाइट	100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)	
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)		100% (द्विभाषी)	
13.	i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./स.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का %)	25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)	
	ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)		25% (न्यूनतम)	
	iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण			वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण			
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें						
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 02 बैठकें					
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)					
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)					
15.	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%					

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110 016